0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

Ramola, Devanand

Stage रेडेशा

दुनिया

Duniya दुनिया

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

Gopendra Kumar

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हिन्दी गद्य-मंजरी

रामप्रसाद किचलू एम० ए०

Shri Haribamsha Prasad Upadhyay Baskota
Ishwari ... (Banke),
ईश्वरी निवास ...
P.O. RUPAIDIHA, Dist. Bahraich, (U. P.)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हिन्दी गद्य-मंजरी

अर्थात्

हिन्दी के गद्य-निबन्धों का संग्रह

(हाई-स्कूल-कक्षाओं के लिए)

संकलनकर्त्ता व सम्पादक

रामप्रसाद किचलू एम० ए०, एल० टी०; पी० ई० एस०

(भूतपूर्व प्रिंसिपल गवर्नमेन्ट-इन्टर कालिज, फैज़ाबाद)

रजिस्ट्रार डिपार्टमेंटल परीक्षाएँ, यू० पी०

—:※:—

प्रकाशक

रामनारायण लाल

प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता

प्रयाग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundir

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

भूमिका

शिक्षा-विभाग के दीर्घ काल में जिन कठिनाइयों को मैंने स्वयम् समझा है, उन्हें ध्यान में रखकर ही इस संकलन को प्रस्तुत करने की चेष्टा की है। पाठों का चुनाव करते समय यू० पी० इन्टर-मीडियट बोर्ड की पाठ्य सम्बंधी विज्ञप्ति का भी पूरा-पूरा ध्यान रक्खा गया है। इस छोटे से संग्रह के अंतर्गत विभिन्न शैलियों के प्रतिनिधित्व के साथ पाठ्य विषयों के नानात्व का सामंजस्य, नैतिकता, आशावादिता, चरित्र-संगठन आदि गुणों को ध्यान में रखते हुये सामान जुटाना सरल काम नहीं। फिर भी पाठ-चयन में सतर्कता और सावधानी से काम लिया है।

इस संकलन में जहाँ एक ओर शैलीकारों की दृष्टि से आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पं० पद्मसिंह शर्मा, श्री मिश्रबंधु, श्री गुलाबराय, डा० श्यामसुन्दर दास, श्रीमती महादेवी वर्मा, पं० हजारीप्रसाद द्विवेदी आदि विभिन्न शैलियों के प्रतिनिधि के रूप में आये हैं वहाँ दूसरी ओर माननीय सम्पूर्णानन्द और श्री काका कालेलकर अपनी ओजस्विनी शैली के साथ एक दूसरे ही वर्ग की झलक देते हैं। प्रारंभिक गद्य-लेखकों में हिन्दी-गद्य के ऐडिसन और स्टिल—पं० प्रतापनारायण मिश्र और पं० बालकृष्ण भट्ट—को भी संकलन में यथास्थान दिया गया है। गद्य-गीत-काव्य के दो प्रमुख लेखक—श्री राय कृष्णदास

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

प्रकाशक
रामनारायण लाल
प्रयाग

१५ म ३४९

तृतीय संस्करण
मूल्य १।।)

मुद्रक
नेशनल प्रेस
प्रयाग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

विद्यार्थियों की जीवन-ज्योति जगाने में इसका ठीक ढंग से सदुपयोग न किया। ऐसी पढ़ाई से लाभ ही क्या जिससे वयस्क बालकों के मानसिक और अन्तर-जगत में मातृ-भाषा, राष्ट्र, जाति और चरित्र-निर्माण का पूरा पूरा महत्व अंकित न हो सके। निश्चय ही अध्यापक इस पुनीत अनुष्ठान के पुरोहित हैं। उनके इस यज्ञ में यह संग्रह कहाँ तक सहायक होगा, नहीं कहा जा सकता।

संग्रह में मेरा अपना कुछ नहीं। अनेक कलाकारों की अनमोल कृतियों को सजा भर दिया है। मंजरी के अंतर्गत जो कृतियां सौरभ बिखेर रही हैं इसके लिये इन पंक्तियों का लेखक हृदय से कृतज्ञ है और आशान्वित है कि विद्यार्थी-गण सौरभ से विना प्रभावित हुये न रह सकेंगे।

Taigor Town.

टैगोर टाउन,
प्रयाग।

विनीत,
रामप्रसाद किचलू।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

और श्री वियोगी हरि—अपने पृथक् रूप में अपनाये गये हैं। इसी प्रकार कहानी साहित्य के विभिन्न वर्गों का प्रतिनिधित्व करने के लिये प्रेमचंद, प्रसाद और सुदर्शन जैसे उच्चकोटि के कलाकारों को ही स्थान दिया गया है।

विभिन्न शैलियों का ध्यान रखते हुये विषयों के अनेक रूपता को भी निभाया गया है। पाठ्य विषयों में साधारण नीति और सदाचार से सम्बन्ध रखने वाले, मनोरंजन के साथ शिक्षा देने वाले, साम्प्रदायिकता के भेदभाव को दूर करने वाले तथा वैज्ञानिक निबंध रक्खे गये हैं। प्रारम्भ का "वन्देमातरम्" भ्रातृत्व का सन्देश देने वाला है और "शिक्षा" आदर्श नागरिक का साँचा प्रस्तुत करता है। "अँगूठी" जैसा छोटा विषय बड़ी रोचकता के साथ साहित्यिक रूप में है। इसी प्रकार कहानियाँ केवल कहानियों के उद्देश्य से नहीं हैं। प्रेमचन्द की "क्षमा" साम्प्रदायिकता के विष को दूर करने वाली है। "सच्ची शान्ति" कर्तव्यनिष्ठा का पाठ पढ़ाती है और "मधूलिका" राष्ट्रीयता का प्रतीक है। "पेनिसिलिन" जैसा आधुनिकतम आविष्कार अपना अलग ही आकर्षण रखता है। श्रीमती महादेवी वर्म्मा का "बदरीनाथ" का रेखा-चित्र भी अनुपम है।

इतना होते हुये भी यह कहना कठिन है कि विद्यार्थी इसे अपने जीवन के साथ कितना घुला-मिला सकेंगे, क्योंकि यह काम शिक्षार्थी नहीं वरन् आदर्श शिक्षक का है। पाठ-रीति झाँझ की झंकार है यदि शिक्षक ने अपनी योग्यता और तत्परता से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0 In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

विद्यार्थियों की जीवन-ज्योति जगाने में इसका ठीक ढंग से सदुपयोग न किया। ऐसी पढ़ाई से लाभ ही क्या जिससे वयस्क बालकों के मानसिक और अन्तर-जगत में मातृ-भाषा, राष्ट्र, जाति और चरित्र-निर्माण का पूरा पूरा महत्व अंकित न हो सके। निश्चय ही अध्यापक इस पुनीत अनुष्ठान के पुरोहित हैं। उनके इस यज्ञ में यह संग्रह कहाँ तक सहायक होगा, नहीं कहा जा सकता।

संग्रह में मेरा अपना कुछ नहीं। अनेक कलाकारों की अनमोल कृतियों को सजा भर दिया है। मंजरी के अंतर्गत जो कृतियां सौरभ बिखेर रही हैं इसके लिये इन पंक्तियों का लेखक हृदय से कृतज्ञ है और आशान्वित है कि विद्यार्थी-गण सौरभ से विना प्रभावित हुये न रह सकेंगे।

टैगोर टाउन, Taigor Town,   विनीत,

प्रयाग।   रामप्रसाद किचलू।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

और श्री वियोगी हरि—अपने पृथक् रूप में अपनाये गये हैं। इसी प्रकार कहानी साहित्य के विभिन्न वर्गों का प्रतिनिधित्व करने के लिये प्रेमचंद, प्रसाद और सुदर्शन जैसे उच्चकोटि के कलाकारों को ही स्थान दिया गया है।

विभिन्न शैलियों का ध्यान रखते हुये विषयों के अनेक रूपता को भी निभाया गया है। पाठ्य विषयों में साधारण नीति और सदाचार से सम्बन्ध रखने वाले, मनोरंजन के साथ शिक्षा देने वाले, साम्प्रदायिकता के भेदभाव को दूर करने वाले तथा वैज्ञानिक निबंध रक्खे गये हैं। प्रारम्भ का "वन्देमातरम्" भ्रातृत्व का सन्देश देने वाला है और "शिक्षा" आदर्श नागरिक का साँचा प्रस्तुत करता है। "अँगूठी" जैसा छोटा विषय बड़ी रोचकता के साथ साहित्यिक रूप में है। इसी प्रकार कहानियाँ केवल कहानियों के उद्देश्य से नहीं हैं। प्रेमचन्द की "क्षमा" साम्प्रदायिकता के विष को दूर करने वाली है। "सच्ची शान्ति" कर्तव्यनिष्ठा का पाठ पढ़ाती है और "मधूलिका" राष्ट्रीयता का प्रतीक है। "पेनिसिलिन" जैसा आधुनिकतम आविष्कार अपना अलग ही आकर्षण रखता है। श्रीमती महादेवी वर्म्मा का "बदरीनाथ" का रेखा-चित्र भी अनुपम है।

इतना होते हुये भी यह कहना कठिन है कि विद्यार्थी इसे अपने जीवन के साथ कितना घुला-मिला सकेंगे, क्योंकि यह काम शिक्षार्थी नहीं वरन् आदर्श शिक्षक का है। पाठ-रीति झाँझ की झंकार है यदि शिक्षक ने अपनी योग्यता और तत्परता से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

विषय-सूची

विषय	लेखक	पृष्ठ
१—वन्देमातरम्	[श्री काका कालेलकर]	१
२—शिक्षा	[माननीय श्री सम्पूर्णानन्द]	६
३—परीक्षा	[पं० प्रताप नारायण मिश्र]	१२
४—चारु-चरित्र	[पं० बालकृष्ण भट्ट]	१७
५—क्षमा	[श्री प्रेमचन्द]	२४
६—वीरत्व	[श्री मिश्रबन्धु]	३९
७—अंगूठी	[श्रीमती चन्द्रावती त्रिपाठी]	४९
८—बीज की बात	[श्री राय कृष्णदास]	५८
९—भगवान् श्रीकृष्ण	[पं० पद्मसिंह शर्मा]	६६
१० —आत्मसंस्कार और संगति	[आचार्य पं० रामचन्द्र शुक्ल]	७५
११—सच्ची शांति	[श्री सुदर्शन]	८८
१२—हंस का नीर-क्षीर विवेक	[आचार्य पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी]	१०७
१३—पेनिसिलिन	[श्री भगवती प्रसाद श्रीवास्तव]	११७
१४—प्रताप-प्रतिज्ञा	[श्री जगन्नाथ प्रसाद 'मिलिन्द']	१२४
१५—साहित्य और सामाजिक स्थिति	[डा० श्यामसुन्दर दास]	१३१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

गद्य मंजरी

१--वन्देमातरम्

[लेखक—काका कालेलकर]

काका कालेलकर एक महाराष्ट्रीय सज्जन हैं। आपका पूरा नाम दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर है, परन्तु आप काका कालेलकर नाम से ही प्रसिद्ध हैं। आपने पूना के फ़र्ग्युसन कालेज में शिक्षा प्राप्त की है। अध्ययन समाप्त करने के पश्चात् आप गुजरात चले गए और वहीं बस गए। आप अब पूर्ण गुजराती हैं और गुजराती में ही लेख इत्यादि लिखते हैं। आपके निबंध विचार की दृष्टि से अत्यन्त उच्च कोटि के एवं मौलिक होते हैं। उनमें मानव-जीवन को ऊँचा उठाने की पर्याप्त सामग्री रहती है। गुजरात में आपकी गणना प्रथम श्रेणी के विचारकों में की जाती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

विषय	लेखक	पृष्ठ
२६—विश्व-कवि रवीन्द्र	[श्री गुलाबराय]	१३८
२७—मधूलिका	[श्री जयशंकर प्रसाद]	१४९
२८—बदरीनाथ की यात्रा	[श्रीमती महादेव वर्मा]	१७०
२९—लोकनायक तुलसीदास	[पं० हजारी प्रसाद द्विवेदी]	१७७
३०—परिश्रान्त पथिक	[श्री वियोगी हरि]	१८७
परिशिष्ट—टिप्पणी		१—१४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

सप्तकोटि-कण्ठ कल-कल निनाद-कराले,
बहुबल धारिणीम्, रिपुदल वारिणीम् ॥

'नमो देव्यै' वाली अष्ट भुजा 'महिषासुर मर्दिनी' के समान ही यह चित्र था। केवल महिषासुर के बदले हमारे समान दीखने वाला मनुष्य-रिपु-दल का संहार करने वाली वह माता थी।

पश्चात्य देशाभिमान की कल्पनाएं ज्यों-ज्यों मन में बैठती गईं, त्यों-त्यों माता की मूर्ति अधिकाधिक उग्र होने लगी। माता के शरीर पर के आभूषण कम होने लगे। माता का वस्त्र लगभग फटा हुआ दीखने लगा। माता मेरा रक्षण करने वाली है, बचपन का यह भाव उड़ गया, और मुझे माता का रक्षण करना चाहिये, इस तरह का प्रौढ़ किन्तु अभिमानी भाव चित्त में आने लगा; और माता की करुणा-दृष्टि से शत्रु से बदला लेने की प्रेरणा मिलने लगी।

आज वह मूर्ति कहाँ गई? वह अष्टभुजा महिषासुर मर्दिनी भी ध्यान में नहीं आती, और न वह रिपु-दल वारिणी दशप्रहरण धारिणी माता ही रही। आज तो 'आसेतु हिमाचल' बिछी हुई सुजला, सुफला और मलयज शीतला माता का मान चित्र दृष्टि के सम्मुख खड़ा होता है। यह माता सुजला है, परन्तु बालकों को उस जल के लिए कर देना पड़ता है, सुफला है, किन्तु वे फल माता के बालकों को नहीं मिलते; और उस 'शीतल मलयज' में प्लेग, इन्फुल्युएंजा के असंख्य जन्तु क्षुधातुर होकर इधर-उधर दौड़ते और वृद्धि पाते दिखाई देते हैं। आँसुओं के जल से इन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

हिन्दी में आपके कुछ लेखकों के अनुवाद श्री निवासाचार्य द्विवेदी जी ने किया है, जो 'सस्ता साहित्य मण्डल' द्वारा प्रकाशित 'जीवन-साहित्य' नामक पुस्तक में संगृहीत है। प्रस्तुत 'वन्देमातरम्' लेख उसी 'जीवन-साहित्य' पुस्तक के द्वितीय भाग से यहाँ उद्धृत किया है।

हमने छोटेपन में पञ्चायतन के स्तोत्र सीखे थे। उनमें माता जी के स्तोत्रारंभ में जब प्रथम मन्त्र नमो देव्यै वाले श्लोक आते थे, तब हमारे मन में आदर और भय उत्पन्न होता था।

स्वदेशी की हलचल चली और नया मन्त्र आकर कान में टकराया 'वन्दे मातरम्।' दोनों का भाव तो एक ही है, किन्तु चित्त में मूर्ति न्यारी ही खड़ी हुई। वन्दे मातरम् के साथ की माता के उपकार-संबंधिनी बचपन में पढ़ी हुई कविता स्मरण आने लगी। माँ खाने की चीजें पास में लेकर बैठी है, एक बालक आता है, दूसरा पीछे की ओर से आकर गले में लिपटता है, तीसरा साड़ी का आँचल पकड़ कर खींचता है, एक बालिका माता के लंबे किए हुए पैर पर आसन जमा कर बैठी है, और दो-चार बच्चे माँ के मना करने पर भी उसकी परवा न करके माता से दूर भागते हैं, और एक दूसरे के साथ लड़ते हैं; इसके तरह का चित्र चित्त में खड़ा रहता था।

इतने में बंगाल से राष्ट्र गीत आया—

सुजलाम्, सुफलाम्, मलयज-शीतलाम्

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

हाँ, पर वह चित्र आदर्श तभी होगा जब सभी बालक माता को पहचानेंगे और सहोदर धर्म का पालन करेंगे।

अभ्यास के लिये

१—'वन्देमातरम्' के पूरे गीत को पढ़िये और उसके अर्थ समझिए।

२—'वन्देमातरम्-गीत' की महत्ता बतलाइए।

३—काका कालेलकर के सामने पहले माता की कौन-सी मूर्ति थी?

४—'वन्देमातरम्-मन्त्र' ने इस मूर्ति में क्या परिवर्तन कर दिया?

५—इस पाठ से आपको कौन-सी शिक्षा मिलती है?

६—इस पाठ के लेखक का एक संक्षिप्त परिचय लिखिए

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

माता के चरण धोने को जी चाहता है। शरीर अर्पण करके इस माता की सेवा करने की आज प्रेरणा होती है। सम्पूर्ण देह का आज धूप बना कर सर्वत्र शीतल मलयज फैलाने को चित्त चाहता है। 'जाह्नवी यमुना विगलित-करुणा-पुण्य पीयूष' से माता नया ही ख्याल देती है। माता कहती है, तुम मुझे अनेक नामों से सम्बोधित करते हो, पर मुझे तो 'माता' नाम ही प्रिय है। क्योंकि माता शब्द में मेरे बालकों का समावेश होता है। देवी कह कर तुम मेरे प्रकाश और प्रताप का स्मरण करते हो, बहुबल धारिणी कह कर तुम मेरा अभिमान धारण करते हो, परन्तु माता कहकर तुम मेरे सभी बच्चों का प्रेम प्राप्त करते हो। 'वन्दे मातरम्' इस वचन में जितनी मातृ-भक्ति है उतना ही मातृ-प्रेम है, भगिनी-प्रेम है। तुम मेरी क्या सेवा कर सकते हो? भाई-भाई सुख से रहो, एक-दूसरे की सहायता करो, एक दूसरे के सुख-दुःख से सुखी और दुखी होओ। बस, इतने ही में मुझे सब-कुछ मिल गया। यही मेरी श्रेष्ठ पूजा है। वन्दे मातरम् का अर्थ है 'सेवे भ्रातरम्।' तुम इतना समझ जाओगे तो मेरा वरद हस्त तुम्हें सभी ज्ञान देगा। तुम देख सकोगे और जान जाओगे कि मैं अकेली ही माता हूँ। मेरा स्वरूप गूढ़ और विशाल है। तुम जितने बालक दिखलाई पड़ रहे हो सब मेरी ही संताने हो; तुम सभी सहोदर हो।

अन्त में वन्दे मातरम् मन्त्र को प्रथम बार सुन कर जिस मूर्ति का दर्शन हुआ था, वही सच्चा है और माता को प्रिय है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

थे। सन् १६३८ में जब कांग्रेस मन्त्रि-मण्डल बना तो आपको शिक्षा-मन्त्री का गौरव-पूर्ण पद दिया गया। जिसे आपने बड़ी योग्यता से निभाया। इधर पुनः कांग्रेस के मन्त्रि-मण्डल बनने पर आप फिर शिक्षा सचिव बनाये गये; कुछ दिन आपने अर्थ-मन्त्री के पद को भी सँभाला, और अब ६ सितम्बर १६४७ से आप शिक्षा, मज़दूर, धार्मिक ट्रस्ट आदि विभागों के मंत्री हैं।

आपका राजनीतिक और साहित्यिक जीवन घुला मिला है। राजनीति दर्शन और शिक्षा सम्बन्धी आप कई सुन्दर ग्रंथ लिख चुके हैं। सन् १६४० ई० में अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य-सम्मेलन के २६ वें अधिवेशन में आप सभापति का आसन भी ग्रहण कर चुके हैं। 'समाजवाद' 'अन्तर्राष्ट्रीय-विधान' 'ब्राह्मण सावधान' 'गणेश चिद्विलास' और 'भाषा की शक्ति' आदि आपकी प्रमुख पुस्तकें हैं। प्रस्तुत 'शिक्षा' पाठ 'चिद्विलास' से उद्धृत किया गया है।

समाज का सम्यक् संचालन तभी हो सकता है जब प्रत्येक नागरिक पर इसका दायित्व हो। जो समाज अपना भार थोड़े से व्यक्तियों के कन्धे पर डाल देता है उसको इस बात के लिये तैयार रहना चाहिये कि एक दिन उसके सारे अधिकार इन थोड़े से व्यक्तियों के हाथों में चले जायँगे। फिर उसको अपनी खोयी सम्पत्ति को वापस लेने के लिए विकट लड़ाई करनी होगी। परन्तु नागरिक समाज का काम तभी सँभाल सकता है, जब उसमें उसकी योग्यता हो और वह सामाजिक जीवन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

२--शिक्षा

[लेखक—माननीय श्री सम्पूर्णानन्द]

हिन्दीप्रेमी कांग्रेस-कार्य-कर्त्ताओं में माननीय श्री सम्पूर्णानन्द जी का स्थान अत्यन्त गौरव-पूर्ण है। आपने बनारस 'क्वींस कालेज' से बी० एस-सी पास कर, 'प्रयाग-ट्रेनिंग-कालेज' से एल० टी० परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात्-अध्यापक के रूप में आपने अपना जीवन प्रारम्भ किया, और 'प्रेम-महा-विद्यालय, वृन्दावन'; 'हरिश्चन्द्र हाई स्कूल बनारस'; 'डूंगर कालेज, बीकानेर'; और 'राजकुमार-कालेज, इन्दौर', प्रभृति संस्थाओं में अध्यापन कार्य किया। काशी विद्यापीठ में भी आप कई वर्ष तक शिक्षक का कार्य करते रहे हैं।

आप कांग्रेस के एक प्रसिद्ध समाजवादी नेता हैं, और राष्ट्रीय-आन्दोलनों में कई बार जेल भी जा चुके हैं। अखिल-भारतीय कांग्रेस कार्यकारिणी के आप क्रियाशील सदस्य रह चुके हैं, और प्रान्तीय कांग्रेस-कमेटी के कई बार आप मन्त्री भी रह चुके हैं। समाजवाद के सिद्धान्तों के आप पूर्ण पण्डित हैं। 'समाजवाद' नामक पुस्तक पर आपको १२००) का 'मंगला प्रसाद पारितोषिक' भी प्राप्त हो चुका है। बम्बई अधिवेशन के अखिल भारतीय समाजवादी सम्मेलन के आप सभापति भी चुने गये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

टकराते हैं। एक दूसरे से लड़ने में शक्ति का अपव्यय होता है। वही मनुष्य यदि यह समझ ले कि सबका एक ही उद्देश्य है, तो उनकी सम्मिलित शक्ति का उपयोग हो सके। ऐसी दशा में यदि छुटकारे का द्वार न मिला तब भी लड़कर एक दूसरे की विपत्ति बढ़ायी तो न जायगी। ठीक यही बात समाज में है। सबकी यही दशा है। यदि यह बात समझ में आजाय कि सब का हित एक ही है और वह सहयोग से प्राप्त हो सकता है तो आपस का द्वन्द्व बन्द हो जाय। सबको सुख-समृद्धि प्राप्त हो; कम से कम हम एक दूसरे के दुःख को बढ़ाने के साधन न बनें।

छात्रों की कोमल बुद्धि में यह बात आरंभ से ही बैठानी चाहिए। चारों ओर सौन्दर्यमय वातावरण में प्रकृति-छटा और कलापूर्ण कृतियों के बीच में छात्र को जीवन बिताना चाहिए। बचपन से ही तप और त्याग का अभ्यास न पड़ा तो आगे चल कर कठिनाई होगी।

मनुष्य शरीर यों ही खो देने की वस्तु नहीं है। अपनी वासनाओं की तृप्ति तो पशु भी कर लेते हैं, परन्तु मनुष्य को अपने बहुज्ञ होने का गर्व है। उसको इस गर्व के अनुरूप अपना जीवन भी बनाना चाहिए। वासना का दमन मनुष्य की शोभा है; अपने को यथाशक्य दूसरों की सेवा में लगाना उसका आदर्श है, आत्मसाक्षात्कार उसके जीवन का प्रधान लक्ष्य है। शारीरिक बल या विद्या सांसिद्धिक बातें हैं, परन्तु इनकी प्राप्ति की कुछ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

के लक्ष्य को समझता हो। यह बात शिक्षा पर निर्भर करती है।

शिक्षा का अर्थ व्यापक है। साधारणतः उसको बौद्धिक व्यायाम का समानार्थक मान लिया जाता है। छात्र को साहित्य, विज्ञान, इतिहास, राज-शास्त्र, अर्थ-शास्त्र, जितने भी पाठ्य विषय हैं, पढ़ा दिये जायँ और वह कुशल चिकित्सक या अध्यापक या इञ्जीनियर जैसा कुछ बना दिया जाय। समाज को ऐसे लोगों की बराबर आवश्यकता रहती है। यदि हर मनुष्य को उसकी योग्यता के अनुसार काम और हर काम के लिए कुशल मनुष्य मिल जाय तो सभी सुखी और सम्पन्न रहें।

यह मत निराधार नहीं है। समाज को ऐसे लोगों की सदा आवश्यकता रहती है जो उसके अर्थ और काम का सम्पादन कर सके। परन्तु यदि अर्थ और काम पर ही ध्यान दिया गया तो स्पर्धा ही उन्नति का साधन बन जायगी। सबकी दृष्टि अपने ऊपर केन्द्रीभूत होगी, हितों का संघर्ष जारी रहेगा और समाज शान्ति के लिए तरसता रह जायगा।

हित-संघर्ष का कारण यही है कि सब अपने स्वार्थ, अपने अर्थ और काम को ढूँढ़ते हैं। किसी को किसी से द्वेष नहीं है, सबको अपने से राग है। एक अँधेरे कमरे में यदि दस मनुष्य बन्द कर दिये जायँ और सब बाहर निकलने का मार्ग ढूँढ़ रहे हों तो कई बार आपस में टकरा जायँगे। किसी को किसी से बैर नहीं है पर सब केवल अपने लिए द्वार ढूँढ़ रहे हैं, इसी से

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

धर्म की शिक्षा देकर दूसरा जन्म देने की योग्यता रखने वाले आचार्य कम ही होते हैं। यह काम ब्रह्मबन्धु का नहीं ब्राह्मण का है। आचार्य छात्र के लिए तो पूज्य है ही, समाज का कर्त्तव्य है कि ऐसे व्यक्तियों का समादर करे और उनको निष्कण्टक काम करने का अवसर दे।

अभ्यास के लिये

१—शिक्षा का वास्तविक अर्थ क्या है? अच्छे नागरिक बनाने के लिये किस प्रकार की शिक्षा अपेक्षित है?

२—अर्थ और काम को धर्म से श्रेष्ठ मानना मनुष्य के लिये लांछन क्यों है?

३—ब्रह्मबन्धु और ब्राह्मण में लेखक के विचार से जो अन्तर है उसे स्पष्ट कीजिए।

४—इस पाठ के लेखक के विषय में आप जो कुछ जानते हों—संक्षेप में लिखिए।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

सहज सीमाएँ भी हैं। दूसरे से विद्या या बल या वैभव में कम होना दुःख की बात हो, परन्तु लज्जा की बात नहीं है। अपने धर्म के पालन का प्रयत्न न करना, अर्थ और काम को धर्म से श्रेष्ठ मानना, मनुष्य के लिए लाञ्छन है। यह भाव शिक्षा के द्वारा दृढ़ किया जाना चाहिये।

ऐसा शिक्षा पाया हुआ मनुष्य समाज का योग्य नागरिक होगा। सब धर्म साक्षात्कर्ता नहीं हो सकते परन्तु धर्म-मार्ग पर चलने की प्रवृत्ति सबकी होनी चाहिए। कोई विरला हो ब्रह्मवेत्ता होगा, थोड़े ही योगाभ्यासी होंगे, थोड़े ही पूर्णतया निष्काम, पूर्णतया यज्ञभाव से लोकसंग्रह-रत हो सकेंगे, परन्तु प्रायः सब परार्थ को स्वार्थ से ऊँचा स्थान देंगे, प्रायः सब राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहार में सहयोग और सद्भाव के समर्थक होंगे।

ऐसी शिक्षा देना कठिन नहीं है। अभेद, एकता, जीव का स्वरूप है। अविद्या के कारण उसको नानात्व की, पार्थक्य की, प्रतीति है परन्तु जब कभी थोड़ी देर के लिए भी वह पार्थक्य को भुला पाता है, एकत्व की झलक पा लेता है, तो उत्फुल्ल हो उठता है। नानात्व के बीच में भी वह अपने को ढूँढ़ता रहता है। इसलिये जो शिक्षा उसको एकत्व की ओर ले जायगी वह उसको ग्राह्य होगी।

ऐसी शिक्षा देना सब का काम नहीं है। साधारण पाठ्य विषयों के अध्यापक तो बहुत मिल सकते हैं, परन्तु विद्यार्थी को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

अंतर है। मिश्र जी की भाषा का रूप अपेक्षाकृत अशुद्ध, अस्थिर, ग्रामीण एवं व्याकरण की त्रुटियों से ओतप्रोत है। उसमें विराम चिन्हों का बहुत ही कम प्रयोग किया गया है। आपने गद्य-पद्य एवं नाटकों की अनेक पुस्तकें बनाई हैं जिनमें हठी हमीर, आल्हा, भारत-दुर्दशा, मन की बहार, तृप्यंताम्, राजसिंह और युगलांगुलीय अधिक प्रसिद्ध हैं। 'निबन्ध-नवनीत' आपके लेखों का एक सुन्दर संग्रह है। प्रस्तुत पाठ इसी पुस्तक से उद्धृत किया जा रहा है।

———

यह तीन अक्षर का शब्द ऐसा भयानक है कि त्रैलोक्य की बुरी बला इसी में भरी है। परमेश्वर न करे कि इसका सामना किसी को पड़े! महात्मा मसीह ने अपने निज शिष्यों को एक प्रार्थना सिखाई थी, जिसको आज भी सब क्रिस्तान पढ़ते हैं, उसमें एक यह भी भाव है कि "हमें परीक्षा में मत डाल, वरंच बुराई से बचा"। परमेश्वर करे सबकी मुंदी भलमन्सी चली जाय, नहीं तो उत्तम से उत्तम सोना भी जब परीक्षार्थ अग्नि पर रक्खा जाता है तो पहले काँप उठता है, फिर उसके यावत परमाणु सब तितर-बितर हो जाते हैं। यदि कहीं कुछ खोट हुई तो जल ही जाता है, घट जाता है। जब जड़ पदार्थों की यह दशा है तब चैतन्यों का क्या कहना! हमारे पाठकों में कदाचित् ऐसा कोई न होगा जिसने बाल्यावस्था में कहीं पढ़ा न हो महाशय उन दिनों का स्मरण कीजिए, जब इम्तहान के थोड़े

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

३--परीक्षा

[लेखक—पं० प्रताप नारायण मिश्र]

पं० प्रताप नारायण मिश्र का जन्म संवत् १९१३ में उन्नाव के समीप बैजे ग्राम में हुआ था। आप भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के समसामयिक थे। आपको अंगरेजी, उर्दू, फारसी और संस्कृत का अच्छा ज्ञान था। आप कुशाग्र बुद्धि हँसमुख, एवं मनमौजी व्यक्ति थे। आपका लावनी बाजों से भी सत्संग था और उनके प्रभाव से ही हिन्दी में कविता करने लगे थे। १० वर्ष तक घाटा उठाकर आप आठ आना वार्षिक मूल्य पर ब्राह्मण' नामक पत्र का सम्पादन करते रहे। 'हिन्दोस्तान' नामक पत्र का भी आपने कुछ काल तक सम्पादन किया। आपकी मृत्यु ३८ वर्ष की अल्पायु में संवत् १९५१ वि० में हुई थी।

मिश्र जी हिन्दी हिन्दू हिन्दुस्तान के अनन्य भक्त थे। गद्य-पद्य दोनों के लेखक थे। आपने साधारण से भी साधारण विषयों पर बड़े ही रोचक निबन्ध लिखे हैं। आपके लेखों में चुटीला हास्य एवं व्यंग्य होता है और इसीलिए आप विदग्ध-साहित्य के निर्माता कहे जाते हैं। आपकी भाषा साधारण बोलचाल की है—जिसमें ग्रामीण शब्दों, मुहाविरों का बाहुल्य रहता है। आपकी भाषा और भट्ट जी की भाषा में बहुत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

सम्भव नहीं । न्याय यदि कोई वस्तु है, और यह बात यदि निस्सन्देह सत्य है कि निर्दोष अकेला ईश्वर है, तो हम यह भी कह सकते हैं कि जिसकी परीक्षा १०० बार कर लीजिए उसकी ओर से भी निस्सन्देह बना रहना कुछ आश्चर्य नहीं है! फिर इस बात को कौन कहेगा कि परीक्षा उलझन का विषय नही है। कपटी ही लोग बहुधा मिष्ट भाषी और शिष्टाचारी होते हैं, थोड़े ही मूल्य की धातु में अधिक ठनठनाहट होती है, थोड़ी ही योग्यता में अधिक आडम्बर होता है, फिर यदि परीक्षक धोखा खा जाय तो क्या अचम्भा है। सब गुणों में पूरा अकेला परमात्मा है, अतः ठीक परीक्षा पर जिसकी कलई न खुल जाय उसी के धन्य भाग्य ! हमने भी स्वयं अनुभव किया है कि बरसों जिनके साथ बदनाम रहे, बीसियों हानियाँ सहीं, कई बार अपना सिर फुड़वाने को और प्राण देने या कारागार जाने को उद्यत हो गये, उनके दोष अपने ऊपर ले लिए, और वे भी सदा हमारी बात पर अपना चुल्लू भर लोहू सुखाते रहे, जहाँ तेरा पसीना गिरेगा वहाँ हमारा मृत शरीर पहले गिर लेगा, पर जब समय आया, कि ग़ैरों के सामने हमारी इज्जत न रहे, तो उन्हीं महाशयों ने आँख टेढ़ी करली।

× × ×

कहां तक कहें परीक्षा सब को खलती है! क्या ही अच्छा होता जो सब-के-सब सब बातों में सच्चे होते और जगत में परीक्षा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

दिन रह जाते थे। क्या सोते, जागते, उठते, बैठते हर घड़ी एक चिंता चित्त पर चढ़ी न रहती थी। पहिले से अधिक परिश्रम करते थे तो भी दिन-रात देवी-देवता मनाते बीतता था। देखिए, क्या हो, परमेश्वर कुशल करे। सच है, यह अवसर ही ऐसे हैं। परीक्षा में ठीक उतरना हर किसी के भाग्य में नहीं है!

जिन्हें हम आज बड़ा पंडित, धनी, बड़ा बली, महा देश-हितैषी, महासत्यसंध, महानिष्कपट मित्र समझे बैठे हैं, यदि उनकी ठीक ठीक परीक्षा करने लगें तो कदाचित् फी सैकड़ा दो ही चार ऐसे निकलें जो सचमुच जैसे बनते हैं वैसे ही बने रहें? यदि महाजनों से कभी काम पड़ा हो तो आपको निश्चय होगा कि प्रकट में जो धर्म, जो ईमानदारी, जो भलमन्सी दीख पड़ती है वह गुप्त रूपेण कै जनों में कहाँ तक है। जिन्हें यह विश्वास हो कि ईश्वर हमारे कामों की परीक्षा करता है, अथवा संसार में हमें परीक्षार्थ भेजा है उनके अन्तःकरण की गति पर हमें दया आती है। हमने तो निश्चय कर लिया है कि परीक्षा वरीक्षा का क्या काम है, हम जो कुछ हैं उसे सर्वज्ञ सर्वान्तरयामी से छिपा नहीं है। हम पापात्मा, पाप सम्भव भला उसके आगे परीक्षा में कै पल ठहरेंगे?

संसार में संसारी जीव निस्सन्देह एक दूसरे की परीक्षा न करें तो काम न चले, पर उस काम के चलने में कठिनाई यह है कि मनुष्य की बुद्धि अल्प है, अतः प्रत्येक विषय का पूर्ण निश्चय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

४--चारु-चरित्र

[लेखक—पं० बालकृष्ण भट्ट]

हिन्दी गद्य-निर्माताओं में पं० बालकृष्ण भट्ट का स्थान विशेष महत्त्व का है। प्रयाग में सं० १९०१ वि० में आपका जन्म हुआ और जीवन भर हिन्दी की सेवा कर सं० १९७१ वि० में आप परलोक सिधारे। आपको हिन्दी, उर्दू, संस्कृत, फारसी और अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान था।

प्रारंभ में आप जमुना-मिशन-स्कूल और कायस्थ पाठशाला में शिक्षक का कार्य करते रहे। बाद में आपका मुख्य व्यवसाय हिन्दी-सेवा और साहित्य-निर्माण ही हो गया। प्रयाग से प्रकाशित होने वाले "हिन्दी-प्रदीप" का सुसम्पादन आपने कई वर्षों तक अनेक आर्थिक-संकट झेल कर भी किया और इस पत्र द्वारा आपने हिन्दी की प्रशंसनीय सेवा की।

भट्ट जी ने साधारण एवं मननशील दोनों प्रकार के विषयों पर लेख लिखे हैं। साधारण विषयों (जैसे आँख, कान, नाक, बात-चीत आदि) पर भी आपके लिखे हुए निबन्ध अत्यन्त विचारपूर्ण, रोचक एवं सप्राण हैं। गाम्भीर्य एवं हास्य का उनमें अच्छा सम्मिश्रण रहता है। भट्ट जी के विचार भाषा के सम्बन्ध में बड़े उदार थे। भाषा को व्यापक बनाने के लिए आपने हिन्दी के बोल-चाल के शब्दों के अतिरिक्त उर्दू या अंग्रेज़ी के व्यावहारिक शब्दों का भी निःसंकोच प्रयोग किया है। आपकी शैली में व्यक्तित्व की छाप है। समसामयिक पं० प्रताप नारायण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

का काम न पड़ा करता ! वह बड़भागी धन्य है जो अपनी जीवन-यात्रा को यों ही समाप्त करदे !

अभ्यास के लिये

१—परीक्षा शब्द क्यों भयानक है ? परीक्षा से लोग क्यों डरते हैं ?

२—कपटी लोग बहुधा मिष्ट भाषी और शिष्टाचारी होते हैं—आप मिश्र जी के इस विचार से कहाँ तक सहमत हैं ?

३—पं० प्रताप नारायण मिश्र का साहित्यिक परिचय दीजिए और उनकी गद्य-शैली पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

———

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

कार्य-कारण का बड़ा घनिष्ठ संबंध है। इस सूत्र के अनुसार देश या जाति का एक एक व्यक्ति सम्पूर्ण देश या जाति की सभ्यता-रूप कार्य का कारण है; अर्थात् जिस देश या जाति में एक-एक मनुष्य अलग-अलग अपने चरित्र के सुधार में लगे रहते हैं, वह समग्र देश का देश उन्नति की अन्तिम सीमा तक पहुँच, सभ्यता का एक बहुत अच्छा नमूना बन जाता है। नीचे से नीचे कुल में पैदा हुआ हो, बहुत पढ़ा-लिखा भी न हो, बड़ा सुभीते वाला भी न हो, न किसी तरह की कोई असाधारण बात उसमें हो; किन्तु चरित्र की कसौटी में यदि वह अच्छी तरह कस लिया गया है, तो उस आदरणीय मनुष्य का संभ्रम और आदर समाज में कौन ऐसा कम्बख्त होगा, जो न करेगा; और ईर्ष्यावश उसके महत्त्व को मुक्तकण्ठ हो स्वीकार न करेगा? नीचे दरजे से ऊँचे को पहुँचने के लिये चरित्र की कसौटी से बढ़ कर और कोई दूसरा ज़रिया नहीं है। चरित्रवान् यद्यपि धीरे-धीरे बहुत देर में ऊपर को उठता है, पर यह निश्चित है कि चरित्र-पालन में जो सावधान है, वह एक-न-एक दिन अवश्य समाज का अगुवा मान लिया जायगा। हमारे यहाँ के गोत्र-प्रवर्त्तक ऋषि, भिन्न-भिन्न मत या सम्प्रदायों के चलाने वाले आचार्य, नबी, अम्बिया, औलिया आदि सब इसी क्रम पर आरूढ़ रह, लाखों करोड़ों मनुष्यों के 'गुरोर्गुरुः' देववत् माननीय-पूजनीय हुए, और कितने ही उनमें से ईश्वर के अंश और अवतार माने गए। ✓

यों तो दियानतदारी, सत्य पर अटल विश्वास, शान्ति, कपट

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

मिश्र की अपेक्षा। आपकी भाषा अधिक शिष्ट, नागरिक, परिष्कृत और सजीव है । उसमें ग्रामीणता का दोष नहीं है । मुहावरों का भी सुन्दर प्रयोग है । आपने कुछ भावात्मक निबन्ध भी लिखे हैं । हिन्दी में गद्य-काव्य के जन्मदाता भी आप ही हैं । निबन्धों के अतिरिक्त आपने कहानियाँ (सौ अजान एक सुजान, नूतन ब्रह्मचारि) नाटक, प्रहसन और उपन्यास भी लिखे हैं । आपके लेख-संग्रह 'साहित्य सुमन' और 'भट्ट-निबन्धावली' के नाम से प्रकाशित हुए हैं । यह लेख आपकी 'साहित्य सुमन' पुस्तक से उद्धृत किया गया है ।

———

मनुष्य के जीवन का महत्त्व जैसा चारु-चरित्र से सम्पादित होता है वैसा धन, ऊँचे पद, ऊँचे दरजे की तालीम इत्यादि के द्वारा नहीं हो सकता । समाज में जैसा गौरव, जैसी प्रतिष्ठा या इज्जत, जैसा ज़ोर लोगों के बीच में शुद्ध चरित्रवाले का होता है, वैसा बड़े से बड़े धनी और ऊँचे से ऊँचे ओहदे वाले का कहाँ ? धनवान या विद्वान् को जो प्रतिष्ठा दी जाती है या सर्व साधारण में जो यश या नामवरी उसकी होती है, उसकी स्पर्धा सबको होती है । कौन ऐसा होगा, जो अपने वैभव, अपनी विद्या या योग्यता से औरों को अपने नीचे रखने की इच्छा न करता हो ? शान्ति के एक मात्र आधार चारु-चरित्र वाले में यह अलबत्ता नहीं देखा जाता । वह यह कभी नहीं चाहता कि चरित्र के पैमाने में, अर्थात् चरित्र क्या है, इसकी नाप-जोख में दूसरा हमारे आगे न बढ़ने पावे ।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

उसी के लिए उससे 'नहीं' कहलाना मनुष्य-मात्र की शक्ति के बाहर है। उत्कोच या किसी तरह लालच दिखलाकर उसके उसूल को बदलवा देना या दृढ़ सिद्धान्तों से उसको अलग करना वैसा ही है, जैसा प्रकृति के नियमों का बदल देना। यह कुछ अत्यन्त आवश्यक नहीं है कि जो बड़े धनी हैं या किसी बड़े ऊँचे ओहदे पर हैं, वे ही सच्ची शराफ़त या चोखी से चोखी सज्जनता अथवा नेकचलनी के सूत्र (Standard) हों अपिच गरीब तथा छोटा आदमी भी सज्जनता की कसौटी में अधिकतर चोखा और खरा निकल सकता है। किसी ने अच्छा कहा—

"अक्षीणो वित्ततः क्षीणः वृत्ततस्तु हतो हतः।"

अर्थात्—धन पास न होने से गरीब गरीब नहीं है, वरन् जो सद्वृत्त नेकचलनी से रहित है, वही गरीब है। धनी सब कुछ अपने पास रख कर भी सब भाँति हीन है; पर निर्धनी पास कुछ न रख कर भी यदि सद्वृत्त है, तो सब भांति भरा-पूरा है। उसे भय और नैराश्य कहीं से नहीं है। वही सद्वृत्त-विहीन वित्तवान को पग-पग में भय है। उसका भविष्य इतना धुँधला है कि जिसका धुँधलापन दूर करने के लिए कहीं आशा की चमक का नाम नहीं है। दैववश जिसका सब कुछ नष्ट हो गया, पर धैर्य, चित्त की प्रसन्नता, आशा, धर्म पर दृढ़ता, आत्मगौरव और सत्य पर अटल विश्वास बना है, उसका मानो सब बना है। कहीं पर किसी अंश में वह दरिद्र नहीं कहा जा सकता।

एक बुद्धिमान ने इन बातों को पवित्र चरित्र का मुख्य अंग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

और कुटिलाई का अभाव आदि चरित्र-पालन के अनेक अंग हैं, किन्तु बुनियाद इन सब उत्तम गुणों की, जिस पर मनुष्य में चारु-चरित्र का पवित्र विशाल मन्दिर खड़ा हो सकता है, अपने सिद्धान्तों का दृढ़ और पक्का होना है। जो जितना ही अपने सिद्धान्तों का दृढ़ और पक्का है, वह उतना ही चरित्र की पवित्रता में श्रेष्ठ होगा। चरित्र की सम्पत्ति के लिये सिधाई तथा चित्त का अकुटिल भाव भी एक ऐसा बड़ा स्रोत है, जहाँ से विश्वास, अनुराग, दया, मृदुता, सहानुभूति के सरस प्रवाह की अनेक धाराएँ बहती हैं। इनमें से किसी एक धारा में नियम-पूर्वक स्नान करने वाला मनुष्य भलमनसाहत, सभ्यता, आभिजात्य या कुलीनता तथा शिष्टता का नमूना बन जाता है। क्योंकि चतुराई बिना चित्त की सिधाई के, ज्ञान या विद्या बिना विवेक या अनुष्ठान के, मनुष्य में एक प्रकार की शक्ति अथवा योग्यता अवश्य है, पर यह योग्यता उसकी वैसे ही है जैसे गिरह काटने वालों में जेब या गांठ काट, रुपये निकाल लेने की योग्यता या चालाकी रहती है।

आत्मगौरव भी चरित्र का प्रधान अंग है। सुचरित्र-सम्पन्न नीचा काम करने में सदा संकुचित रहता है। प्रतिक्षण उसे इसके लिए बड़ी चौकसी रखनी पड़ती है कि कहीं ऐसा काम न बन पड़े कि प्रतिष्ठा में हानि हो। उसका एक-एक काम और एक-एक शब्द सभ्य-समाज में नेकचलनी के सूत्र के समान प्रमाण में लिया जाता है। जिसके लिए उसने 'हाँ' कहा, फिर

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

४—'चरित्र-संपन्न साधारण शिक्षा रखकर जितना उपकार देश या जाति का कर सकता है उतना सुशिक्षित, पर चरित्र का छूछा नहीं कर सकता।' इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं ?

५—पं० बाल कृष्ण भट्ट की गद्य शैली पर अपने विचार प्रकट कीजिए और प्रताप नारायण मिश्र की शैली से उसकी तुलना कीजिए।

६—निम्नांकित शब्दों और मुहाविरों के अर्थ लिखिये और उन्हें वाक्यों में संयुक्त कीजिए—

सम्भ्रम। उत्कोच। जीवन्मुक्त। प्रवणचित्त। अविकत्थन। अगुआ मान लेना। मुक्त कण्ठ से स्वीकार करना। नमूना बन जाना।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

निश्चय किया है—लम्पटता अर्थात् छल-कपट का न होना, रुपये-पैसे के लेन-देन में सफ़ाई, बात का धनी और अपने वादे का सच्चा होना, आश्रितों पर दया, मेहनत से न हटना, अपने निज पौरुष और परिश्रम पर भरोसा रखना, अविकत्थन अर्थात अपने को बढ़ा कर न कहना—इनमें से एक-एक गुण ऐसे हैं, जिन पर किताब पर किताबें लिखी जा सकती हैं। चारु-चरित्र का एक संक्षेप विवरण हमने कह सुनाया। जिस भाग्यवान में चरित्र के पूर्ण अंग हैं, उसका क्या कहना! वह तो मनुष्य के तन में साक्षात् देवता या जीवन्मुक्त कोई योगी है। जिन बातों से हमारे में चरित्र आता है, उसकी दो एक बात भी जिसमें है, वह धन्य और प्रशंसा के योग्य है। हमारे नवयुवकों को चरित्र-पालन में विशेष प्रवणचित्त होना चाहिए। ऊँचे दरजे की शिक्षा बिना चरित्र के सर्वथा निरर्थक है। चरित्र सम्पन्न साधारण शिक्षा रख कर जितना उपकार देश या जाति का कर सकता है उतना सुशिक्षित, पर चरित्र का छूछा नहीं कर सकता।

अभ्यास के लिये

१—चारु-चरित्र का क्या अर्थ है और उसका मनुष्य जीवन में क्या महत्व है?

२—चरित्र-पालन के कौन-कौन प्रधान अंग हैं?

३—'धनी सब कुछ अपने पास रखकर भी सब भाँति हीन है, पर निर्धनी पास कुछ न रखकर भी यदि सद्वृत्त है, तो सब भाँति भरा पूरा है।' कैसे?

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

है। आपकी कहानियां और उपन्यासों का बहुत बड़ा प्रचार हुआ है तथा दूसरी भाषाओं में भी इनके अनुवाद हो रहे हैं। आपने 'कर्बला' नाम का एक नाटक भी लिखा है, परन्तु नाटककार के रूप में आप उतने सफल नहीं हुए। प्रेमद्वादशी, सप्तसुमन, सप्तसरोज, प्रेमपूर्णिमा, नवनिधि, प्रेम-पचीसी आदि आपके प्रसिद्ध कहानी संग्रह हैं। उपन्यासों में सेवा-सदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, काया-कल्प, निर्मला, कर्मभूमि, ग़बन, गोदान आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।

प्रेमचन्द्र जी ने बोल-चाल की भाषा में लिखा है। मुहावरों के प्रयोग ने आपकी भाषा को बड़ा ही रोचक तथा प्रभावशाली बना दिया है। आपकी भाषा में सभी भाषाओं के प्रचलित शब्दों का मेल है। आपकी शैली पर उर्दू का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है।

मुसलमानों को स्पेन देश में राज्य करते कई शताब्दियाँ बीत चुकी थीं। कलीसाओं की जगह मसजिदें बनती जाती थीं, घंटों की जगह अजान की आवाजें सुनाई देती थीं। गरनाता और अलहमरा में समय की नश्वरगति पर हंसने वाले वे प्रासाद बन चुके थे, जिनके खंडहर अब तक देखने वालों को अपने पूर्व ऐश्वर्य की झलक दिखाते हैं। ईसाइयों के गण्यमान्य स्त्री और पुरुष मसीह की शरण छोड़ कर इस्लामी भ्रातृत्व में सम्मिलित होते जाते थे, और आज तक इतिहासकारों को यह आश्चर्य है कि ईसाइयों का मिशन वहाँ क्योंकर बाकी रहा। जो ईसाई नेता अब तक मुसलमानों के सामने सिर न झुकाते और अपने देश में

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

५--क्षमा

[लेखक—श्री प्रेमचन्द]

उपन्यास-सम्राट् श्री प्रेमचन्द्र का जन्म बनारस प्रान्त के पांडेपुर नामक ग्राम में सं० १९३७ में हुआ था। बी० ए० परीक्षा उत्तीर्ण होने के उपरान्त आप सब-डिप्टी-इंस्पेक्टर तथा नार्मल स्कूल में अध्यापक का कार्य करते रहे। कुछ समय के उपरान्त आप साहित्य-सेवा ही में लग गए। उदारता के कारण आपको सदैव आर्थिक संकट रहा। जीवन के अंतिम दिनों में आपने व्यवसायी फिल्म कम्पनियों में कहानी-लेखक का काम किया, परन्तु इससे आपको संतोष न हुआ। आप इस काम को छोड़ कर काशी में 'हंस' नामक एक मासिक पत्र निकालने लगे और अपना प्रकाशन कार्यालय भी आपने खोल लिया।

प्रेमचन्द्र जी ने हिन्दी में मौलिक उपन्यास तथा कहानियाँ लिखकर हिन्दी के मस्तक को उच्च तथा उज्ज्वल किया है। आप ही ने हिन्दी कथा-साहित्य में मनोवैज्ञानिक ढंग से चरित्र-चित्रण प्रारंभ किया। आप की कहानी तथा उपन्यासों के सभी अवयव प्रौढ़ तथा सुसंगठित होते हैं। आप अंतः प्रकृति के विश्लेषण करने में बड़े ही पटु हैं। आपकी कला यथार्थवाद को लेकर चली है और इसमें कल्पना तथा चमत्कार का अंश बहुत कम रहता है। दीन, दलित तथा निर्धन आपकी दया के पात्र हैं और इनका वर्णन करते समय आपकी लेखनी में बड़ी शक्ति आजाती

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

आवाए पहने, बड़े-बड़े आमामें सिर पर बाँधे कमर से तलवार लटकाये, रविशों में टहल रहे थे। स्त्रियाँ सफेद बुर्के ओढ़े, ज़री की जूतियाँ पहने बेंचों और कुर्सियों पर बैठी हुई थीं। दाऊद सबसे अलग हरी-हरी घास पर लेटा हुआ सोच रहा था कि वह दिन कब आयेगा, जब हमारी जन्म भूमि इन अत्याचारियों के पंजे से छूटेगी! वह अतीत काल की कल्पना कर रहा था, जब ईसाई स्त्री-पुरुष इन रविशों पर टहलते होंगे जब यह स्थान ईसाइयों के परस्पर वार्तालाप से गुलज़ार होगा।

सहसा एक मुसलमान युवक आकर दाऊद के पास बैठ गया। वह इसे सिर से पाँव तक अपमान सूचक दृष्टि से देख कर बोला। क्या अभी तक तुम्हारा दिल इस्लाम की ज्योति से प्रकाशित नहीं हुआ।

दाऊद ने गम्भीर भाव से कहा—इस्लाम की ज्योति पर्वत शृंगों को प्रकाशित कर सकती है। अँधेरी घाटियों में उसका प्रवेश नहीं हो सकता।

उस मुसलमान अरबी का नाम जमाल था। यह आक्षेप सुन कर वह तीखे स्वर में बोला—इससे तुम्हारा क्या मतलब है?

दाऊद—इससे मेरा मतलब यही है कि ईसाइयों में जो उच्च श्रेणी के हैं, वे जागीरों और राज्याधिकारों के लोभ तथा राज-दण्ड के भय से इस्लाम की शरण में आ सकते हैं; पर दुर्बल और दीन ईसाइयों के लिये इस्लाम में वह आसमान

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

स्वराज्य स्थापित करने का स्वप्न देख रहे थे, उनमें एक सौदागर दाऊद भी था। दाऊद विद्वान् और साहसी भी था वह अपने इलाके में कदम न जमने देता था। दीन और निर्धन ईसाई विद्रोही देश के अन्य प्रान्तों से आकर उसके शरणागत होते थे, वह बड़ी उदारता से उनका पालन-पोषण करता था। मुसलमान उससे सशंक रहते थे। वे धर्म-बल से उस पर विजय न पाकर उसे शस्त्र-बल से परास्त करना चाहते थे। पर दाऊद उनका सामना न करता था। हाँ! जहाँ कहीं ईसाइयों के मुसलमान होने की ख़बर पाता, वहाँ हवा की तरह पहुँच जाता और तर्क या विनय से उन्हें अपने धर्म पर अटल रहने की प्रेरणा करता था। अन्त में मुसलमानों ने चारों तरफ़ से घेर कर उसे गिरफ़तार करने की तैयारी की। सेनाओं ने उसके इलाके को घेर लिया। दाऊद को प्राण-रक्षा के लिये अपने सम्बन्धियों के साथ भागना पड़ा। वह घर से भाग कर गरनाता में आया जहाँ उन दिनों इस्लामी राजधानी थी। वहाँ सब से अलग रहकर वह अच्छे दिनों की प्रतीक्षा में जीवन व्यतीत करने लगा। मुसलमानों में गुप्तचर उसका पता लगाने के लिये बहुत सिर मारते थे, उसे पकड़ लाने के लिये बड़े-बड़े इनामों की विज्ञप्ति निकाली जाती थी, पर दाऊद की टोह न लगती थी।

[२]

एक दिन एकान्त वास से उकता कर दाऊद गरनाता के एक बाग़ में सैर करने चला गया। सन्ध्या हो गई थी, मुसलमान नीचे

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

की भारी तलवार ईसाई की हलकी कटार के सामने शिथिल हो गई। एक सर्प की भाँति फन से चोट करती थी, दूसरी नागिन की भाँति उड़ती थी। एक लहरों की भाँति लपकती थी, दूसरी जल की मछलियों की भाँति चमकती थी। दोनों योद्धाओं में कुछ देर तक चोटें होती रहीं। सहसा एक बार नागिन उछल कर अरब के अंतस्तल में जा पहुँची। वह भूमि पर गिर पड़ा।

[३]

जमाल के गिरते ही चारों तरफ से लोग दौड़ पड़े। वे दाऊद को घेरने की चेष्टा करने लगे। दाऊद ने देखा लोग तलवारें लिये दौड़े चले आ रहे हैं। प्राण लेकर भागा। पर जिधर जाता था, सामने बाग़ की दीवार रास्ता रोक लेती थी। दीवार ऊँची थी, उसे फाँदना मुश्किल था। वह जीवन और मृत्यु का संग्राम था कहीं शरण की आशा नहीं, कहीं छिपने का स्थान नहीं। उधर अरबों की रक्त पिपासा प्रतिक्षण तीव्र होती जाती थी। यह केवल एक अपराधी को दण्ड देने की चेष्टा न थी, जातीय अपमान का बदला था। एक विजित ईसाई की यह हिम्मत कि अरब पर हाथ उठाये! ऐसा अनर्थ!

जिस तरह पीछा करने वाले कुत्तों के सामने गिलहरी इधर उधर दौड़ती है, किसी वृक्ष पर चढ़ने की बार-बार चेष्टा करती है; पर हाथ-पाँव फूल जाने के कारण बार-बार गिर पड़ती है, वही दशा दाऊद की थी।

दौड़ते-दौड़ते उसका दम फूल गया, पैर मन-मन भर के हो

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

की बादशाहत कहाँ है, जो हजरत मसीह के दाम में उन्हें नसीब होगी। इस्लाम का प्रचार तलवार के बल से हुआ है, सेवा के बल से नहीं।

जमाल अपने धर्म का अपमान सुनकर तिलमिला उठा। गरम होकर बोला—यह सर्वथा मिथ्या है। इस्लाम की शक्ति उसका आन्तरिक भ्रातृत्व और साम्य है, तलवार नहीं।

दाऊद—इस्लाम ने धर्म के नाम पर जितना रक्त बहाया है, उसमें उसकी सारी शक्ति डूब जायगी।

जमाल—तलवार ने सदा सत्य की रक्षा की है।

दाऊद ने अविचलित भाव से कहा—जिसको तलवार का आश्रय लेना पड़े, वह सत्य ही नहीं है।

जमाल जातीय गर्व से उन्मत्त होकर बोला—जब तक मिथ्या के भक्त रहेंगे तब तक तलवार की जरूरत भी रहेगी।

दाऊद—तलयार का मुँह ताकने वाला सत्य ही मिथ्या है।

अरब ने तलवार के कब्जे में हाथ रख कर कहा—खुदा की कसम अगर तुम निहत्थे न होते, तो तुम्हें इस्लाम की तौहीन करने का मजा चखा देता।

दाऊद ने अपनी छाती में छिपाई कटार निकालकर कहा—नहीं मैं निहत्था नहीं हूँ मुसलमानों पर जिस दिन इतना विश्वास करूँगा, उस दिन ईसाई न रहूँगा, तुम अपने दिल के अरमान निकाल लो।

दोनों ने तलवारें खींच ली। एक दूसरे पर टूट पड़ा। अरब

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

कहीं ऊँची, कहीं नीची। जगह-जगह पत्थर की शिलायें पड़ी हुई थीं। दाऊद एक शिला के नीचे छिप कर बैठ गया।

दम भर में पीछा करने वाले भी वहाँ आ पहुँचे और इधर उधर झाड़ियों में, वृक्षों पर, गड्ढों में, शिलाओं के नीचे तलाश करने लगे। एक अरब उस चट्टान पर आकर खड़ा हो गया, जिसके नीचे दाऊद छिपा हुआ था। दाऊद का कलेजा धक धक कर रहा था। अब जान गई, अरब ने जरा नीचे को झाँका, और प्राणों का अन्त हुआ। संयोग—केवल संयोग पर अब दाऊद का जीवन निर्भर था। दाऊद ने साँस रोक ली, सन्नाटा खींच लिया। एक निगाह पर उसकी जिन्दगी का फैसला था। जिन्दगी और मौत में कितना सामीप्य है।

मगर अरबों को इतना अवकाश कहाँ था कि वे सावधान होकर शिला के नीचे देखते। वहाँ तो हत्यारे को पकड़ने की जल्दी थी। दाऊद के सिर से बला टल गई। वे इधर-उधर ताक झाँक कर आगे बढ़ गये।

[४]

अँधेरा हो गया। आकाश में तारागण निकल आए और तारों के साथ दाऊद भी शिला के नीचे से निकला। देखा तो उस समय भी चारों तरफ़ हलचल मची हुई है, शत्रुओं का दल मशालें लिये झाड़ियों में घूम रहा है, नाकों पर भी पहरा है। कहीं निकल भागने का रास्ता नहीं है। दाऊद एक वृक्ष के नीचे खड़ा होकर सोचने लगा कि अब क्योंकर जान बचे। उसे अपनी

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

गये। कई बार जी में आया; इन सब पर टूट पड़ें और जितने महँगे प्राण बिक सकें उतने महंगे बेंचें। पर शत्रुओं की संख्या देखकर हतोत्साह हो जाता था।

लेना, दौड़ना, पकड़ना का शोर मचा हुआ था। कभी-कभी पीछा करने वाले इतने निकट आ जाते थे कि मालूम होता था, अब संग्राम का अन्त हुआ, वह तलवार पड़ी। पर पैरों की एक ही गति थी। एक कावा एक कन्नी उसे खून की प्यासी तलवारों से बाल-बाल बचा लेती थी।

दाऊद को अब इस संग्राम में खिलाड़ियों का सा आनन्द आने लगा। यह निश्चय था कि उसके प्राण नहीं बच सकते, मुसलमान दया करना नहीं जानते इसलिये उसे अपने दाँव-पेंच में मज़ा आ रहा था। किसी वार से बचकर उसे अब इसकी खुशी न होती थी कि उसके प्राण बच गए, बल्कि इसका आनन्द होता था कि क़ातिल को कैसा ज़िच किया।

सहसा उसे अपनी दाहिनी ओर बाग़ की दीवार कुछ नीची नज़र आई। आह! यह देखते ही उसके पैरों में एक नई शक्ति का संचार हो गया, धमनियों में नया रक्त दौड़ने लगा। वह हिरन की तरह उस तरफ दौड़ा और एक छलाँग म बाग़ के उस पार पहुँच गया। जिंदगी और मौत में सिर्फ एक क़दम का फासला था पीछे मृत्यु थी और आगे जीवन का विस्तृत क्षेत्र। जहाँ तक दृष्टि जाती थी, झाड़ियाँ ही नज़र आती थीं, जमीन पथरीली थी

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

तारागण उसके साथ दौड़े जाते थे। अंत को वह आशामय दीपक सामने आ पहुँचा। एक छोटा सा फूस का मकान था एक बूढ़ा अरब जमीन पर बैठा हुआ रेहल पर क़ुरान रक्खे उसी दीपक के मंद प्रकाश में पढ़ रहा था। दाऊद आगे न जा सका उसकी हिम्मत ने जवाब दे दिया वह वहीं शिथिल होकर गिर पड़ा। रास्ते की थकान घर पहुँचने पर मालूम होती है।

अरब ने उठकर पूँछा—तू कौन है।

दाऊद—एक गरीब ईसाई। मुसीबत में फँस गया हूँ, अब आप ही शरण दें, तो मेरे प्राण बच सकते है।

अरब—खुदा पाक तेरी मदद करेगा। तुझ पर क्या मुसीबत पड़ी हुई है?

दाऊद—डरता हूँ, कहीं कह दूँ तो आप भी मेरे खून के प्यासे न हो जावें।

अरब—जब तू मेरी शरण में आ गया तो तुझे मुझ में कोई शंका न होनी चाहिए। हम मुसलमान हैं। जिसे एक बार अपनी शरण में ले लेते हैं। उसकी ज़िन्दगी भर रक्षा करते हैं।

दाऊद—मैंने एक मुसलमान की हत्या कर डाली है।

वृद्ध अरब का मुख क्रोध से लाल हो गया। बोला—उसका नाम?

दाऊद—उसका नाम जमाल था।

अरब सिर पकड़ कर वहीं बैठ गया, उसकी आँखें सुर्ख हो

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

जान की वैसी परवाह न थी। वह जीवन के सुख-दुःख सब भोग चुका था अगर उसे जीवन की लालसा थी, तो केवल यही देखने के लिए कि इस संग्राम का अन्त क्या होगा। मेरे देशवासी हतोत्साह हो जायँगे या अदम्य धैर्य के साथ संग्राम क्षेत्र में अटल रहेंगे।

जब रात अधिक बीत गई, और शत्रुओं की घातक चेष्टा कुछ कम न होती देख पड़ी तो दाऊद खुदा का नाम लेकर झाड़ियों से निकला और दबे पाँव वृक्षों की आड़ में, आदमियों की नज़रें बचाता हुआ एक तरफ को चला। वह इन झाड़ियों से निकल कर बस्ती में पहुँच जाना चाहता था। निर्जनता किसी की आड़ नहीं कर सकती। बस्ती का जन-बाहुल्य स्वयं आड़ है।

कुछ दूर तक तो दाऊद के मार्ग में कोई बाधा न उपस्थित हुई, वन के वृक्षों ने उसकी रक्षा की किन्तु जब वह असम तल भूमि में आया तो एक अरब की निगाह उस पर पड़ गई। उसने ललकारा। दाऊद भागा। क़ातिल भागा जाता है, यह आवाज़ हवा में एक ही बार गूँजी, और क्षण भर में चारों तरफ से अरबों ने उसका पीछा किया। सामने बहुत दूर तक आबादी का नामो-निशान न था। बहुत दूर पर एक धुंधला सा दीपक टिमटिमा रहा था। किसी तरह वहाँ तक पहुँच जाऊँ वह उस दीपक की ओर इतनी तेजी से दौड़ रहा था मानो वहाँ पहुँचते ही वह अभय पा जायगा। आशा उसे उड़ाये लिये जाती थी। अरबों का समूह पीछे छूट गया, मशालों की ज्योति निष्प्रभ हो गई। केवल

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

पड़ें। पर नहीं, तूने मेरी शरण ली है, कर्तव्य मेरे हाथों को बाँधे हुये है क्योंकि हमारे रसूल पाक ने हिदायत की है कि जो अपनी पनाह में आवे, उस पर हाथ न उठाओ। मैं नहीं चाहता कि नबी के हुक्म को तोड़कर दुनिया के साथ अपनी आकबत भी बिगाड़ लूँ। दुनिया तूने बिगाड़ी, दीन मैं अपने हाथों बिगाड़ूं? नहीं। सब्र करना मुश्किल है, पर सब्र करूँगा, ताकि नबी के सामने आँखें नीची न करनी पड़ें। आ, घर में आ। आ, तेरा पीछा करने वाले वह दौड़े आ रहे हैं तुझे देख लेंगे तो फिर मेरी सारी मिन्नत-समाजत तेरी जान न बचा सकेगी। तू नहीं जानता कि अरब लोग ख़ूनी को कभी माफ़ नहीं करते।

यह कह कर अरब ने दाऊद का हाथ पकड़ लिया और उसे घर में ले जाकर एक कोठरी में छिपा दिया। वह घर के बाहर निकला ही था कि अरबों का एक दल उसके द्वार पर आ पहुँचा।

एक आदमी ने पूछा—क्यों शेख़ हसन तुमने इधर से किसी को भागते देखा?

'हाँ! देखा है।'

'उसे पकड़ क्यों न लिया? वही तो जमाल का कातिल था।'

'यह जान कर भी मैंने उसे छोड़ दिया।'

'ऐ! ग़ज़ब खुदा का यह तुमने क्या किया? जमाल हिसाब के दिन हमारा दामन पकड़ेगा, तो हम क्या जवाब देंगे?

'तुम कह देना कि तेरे बाप ने तेरे क़ातिल को माफ़ कर दिया।'

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

गईं, गरदन की नसें तन गईं, मुख पर अलौकिक तेजस्विता की आभा दिखाई दी। नथने फड़कने लगे। ऐसा मालूम होता था कि उसके मन में भीषण द्वंद्व हो रहा है और वह समस्त विचार शक्ति से अब अपने मनोभावों को दबा रहा है। दो-तीन मिनट तक वह इसी उग्र अवस्था में बैठा धरती की ओर ताकता रहा। अन्त को अवरुद्ध कंठ से बोला—नहीं, नहीं, शरणागत की रक्षा करनी ही चाहिये। आह! ज़ालिम! तू जानता है मैं कौन हूँ, मैं उसी युवक का अभागा पिता हूँ जिसकी आज तूने इतनी निर्दयता से हत्या की है। तू जानता है तूने मुझ पर कितना बड़ा अत्याचार किया है। तूने मेरे ख़ानदान का निशान मिटा दिया है, मेरा चिराग़ गुल कर दिया!

आह! जमाल मेरा इकलौता बेटा था, मेरी सारी अभिलाषायें उसी पर निर्भर थीं। वही मेरी आँखों का उजाला, मुझ अन्धे का सहारा, मेरे जीवन का आधार, मेरे जर्जर शरीर का प्राण था। अभी-अभी उसे कब्र की गोद में लिटाकर आया हूँ। आह मेरा शेर आज खाक के नीचे सो रहा है। ऐसा दिलैर, ऐसा दीनदार, ऐसा सजोला जवान मेरी कौम में दूसरा न था। जालिम तुझे उस पर तलवार चलाते ज़रा भी दया न आई। तेरा पत्थर का कलेजा ज़रा भी न पसीजा, तू जानता है मुझे इस वक्त तुझ पर कितना गुस्सा आ रहा है। मेरा जी चाहता है कि अपने दोनों हाथों से तेरी गरदन पकड़ कर इस तरह दबाऊँ कि तेरी जबान बाहर निकल आवे। तेरी आँखें कौड़ियों की तरह बाहर निकल

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

दाऊद उसके मनोवेग को ताड़ गया। उसे बूढ़े से सहानुभूति हो गई, उसने सोचा यह धर्म का दोष नहीं, जाति का दोष है मेरे पुत्र की किसी ने हत्या की होती, तो कदाचित् मैं भी उसके खून का प्यासा हो जाता। यही मानव प्रकृति है।

अरब ने कहा—दाऊद तुम्हें मालूम है, बेटे की मौत का कितना ग़म होता है।

दाऊद—इसका अनुभव तो नहीं है, पर अनुमान कर सकता हूँ। अगर मेरी जान से आपके उस ग़म का एक हिस्सा भी मिट सके तो लीजिए यह सिर हाज़िर है। मैं इसे शौक से आपकी नज़र करता हूँ। आपने दाऊद का नाम सुना होगा।

अरब—क्या पीटर का बेटा ?

दाऊद—जी हाँ! मैं वही बद-नसीब दाऊद हूँ। मैं केवल आपके बेटे का ही घातक नहीं, इस्लाम का दुश्मन हूँ। मेरी जान लेकर आप जमाल का ही बदला न लेंगे किन्तु अपनी जाति और धर्म की सच्ची सेवा भी करेंगे।

शेख़ हसन ने गंभीर भाव से कहा—दाऊद मैंने तुझे माफ़ किया। मैं जानता हूँ मुसलमानों के हाथों, ईसाइयों को बहुत तकलीफें पहुँची हैं, मुसलमानों ने उन पर बड़े-बड़े अत्याचार किये हैं, उनकी स्वाधीनता हर ली है। लेकिन यह इस्लाम का नहीं मुसलमानों का कसूर है। विजय-गर्व ने मुसलमानों की मति हर ली है। हमारे पाक नबी ने यह शिक्षा नहीं दी थी, जिस पर हम चल रहे हैं। वह स्वयं क्षमा और दया का

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

'अरब ने कभी कातिल का खून नहीं माफ़ किया।'

'यह तुम्हारी ज़िम्मेदारी है मैं उसे अपने सिर क्यों लूँ।'

अरबों ने शेख़ हसन से ज्यादा हुज्जत न की, कातिल की तलाश में दौड़े। शेख़ हसन फिर चटाई पर बैठकर कुरान पढ़ने लगा। लेकिन उसका मन पढ़ने में न लगता था। शत्रु से बदला लेने की प्रवृत्ति अरबों की प्रकृति में बद्ध मूल हो गई थी। खून का बदला खून था। इसके लिये खून की नदियाँ बह जाती थीं, कबीले के कबीले मर मिटते थे, शहर के शहर वीरान हो जाते थे। उस प्रवृत्ति पर विजय पाना शेख़ हसन को असाध्य-सा प्रतीत हो रहा था। बार-बार प्यारे पुत्र की सूरत उसकी आँखों के आगे फिरने लगती थी। बार बार उसके मन में प्रबल उत्तेजना होती थी कि चलकर दाऊद के खून से अपने क्रोध की आग बुझाऊँ। अरब बीर होते थे। कटना-मरना उनके लिये कोई असाधारण बात न थी। मरने वालों के लिये वे आँसुओं की कुछ बूंदें बहाकर फिर अपने काम में प्रवृत्त हो जाते थे। वे मृत व्यक्ति की स्मृति को केवल उसी दशा में जीवित रखते थे, जब उसके खून का बदला लेना होता था। अन्त को शेख़ हसन अधीर हो उठा। उसको भय हुआ कि अब अपने ऊपर काबू नहीं रख सकता। उसने तलवार म्यान से निकाल ली और वह दबे-पाँव उस कोठरी के द्वार पर आकर खड़ा हो गया, जिसमें दाऊद छिपा हुआ था। तलवार को दामन में छिपाकर धीरे से द्वार खोला। दाऊद टहल रहा था। बूढ़े अरब का रौद्र रूप देखकर

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

६--वीरत्व

[लेखक—श्री मिश्रबन्धु]

पं० गणेश बिहारी मिश्र, राव राजा डाक्टर श्याम बिहारी मिश्र और रायबहादुर पं० शुकदेव बिहारी मिश्र—हिन्दी साहित्य में 'मिश्रबन्धु' के नाम से प्रसिद्ध हैं। ये कुलीन कान्यकुब्ज ब्राह्मण हैं। इनका जन्म इटौंजा (जि० लखनऊ) में क्रमशः सन् १८६५, १८७३ तथा १८७८ में हुआ। ये तीनों भाई मिलकर हिन्दी साहित्य की सेवा बड़ी लगन से करते रहे हैं। इस त्रयी में पं० गणेश बिहारी मिश्र—व पं० श्याम बिहारी मिश्र दिवंगत हो चुके हैं। बड़े भाई पं० गणेश बिहारी अधिकतर गृहस्थी का काम-काज करते थे। मँझले भाई—राव राजा डाक्टर श्याम बिहारी मिश्र एम० ए०, अपने जीवन काल में पुलिस सुपरिंटेंडेन्ट, कोआपरेटिव-सोसाइटीज़ के डिप्टी-रजिस्ट्रार, तथा छत्रपुर-राजा के दीवान आदि उच्च पदों पर काम करते रहे और अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति का आसन भी सुशोभित कर चुके हैं। छोटे भाई रायबहादुर पं० शुकदेव बिहारी मिश्र वकालत करने के बाद मुन्सिफ और फिर छत्रपुर के दीवान रह चुके हैं। इस प्रकार मिश्रबन्धु लक्ष्मी और सरस्वती दोनों के ही कृपा पात्र हैं।

हिन्दी-साहित्य-सेवियों में इस बन्धुत्रय का स्थान बहुत ऊँचा है।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

सर्वोच्च आदर्श है। मैं इस्लाम के नाम को वट्टा न लगाऊँगा। मेरी ऊंटनी ले लो और रातों रात जहाँ तक भागा जाय, भागो। कहीं एक क्षण के लिये भी न ठहरना। अरबों को तुम्हारी बू भी मिल गई, तो तुम्हारी जान की खैरियत नहीं है। जाओ तुम्हें खुदाए पाक घर पहुँचाये। बूढ़े शेख हसन और उसके बेटे जमाल के लिए खुदा से दुआ किया करना।

दाऊद खैरियत से घर पहुँच गया किन्तु अब वह दाऊद न था।

जो इस्लाम को जड़ से खोद कर फेंक देना चाहता था, उसके विचारों में गहरा परिवर्तन हो गया था। अब वह मुसलमानों का आदर करता और इस्लाम का नाम इज्जत से लेता था।

अभ्यास के लिये

१—इस कहानी से क्या शिक्षा मिलती है ?

२—दाऊद और शेख हसन (जमाल के बाप) के चरित्रों की तुलना कीजिए। इन दोनों में आप किसे अच्छा समझते हैं ?

३—इस कहानी का सारांश संक्षेप में लिखिए।

४—प्रेमचन्द जी की लेखन शैली पर एक छोटा सा निबंध लिखिए और उनकी कहानियों की विशेषता का उल्लेख कीजिए।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

नहीं करेगा और भय में कोई भी ऐसा अंश नहीं है जो किसी का प्रीतिभाजन हो सके।

वीरत्व को वहुत लोगों ने सामर्थ्य में मिला रक्खा है, किन्तु इन दोनों में कोई मुख्य संबंध नहीं है। सामर्थ्य केवल इतना करता है कि वीरत्व की महिमा बढ़ा देता है। यदि वीर पुरुष वलहीन हुआ तो उसकी वीरता वैसी नहीं जगमगाती जैसी कि वलवान वीर की। यदि हनुमानजी समुद्र न फलाँग गये होते तो भी उतने ही वड़े वीर होते जैसे कि अब माने जाते हैं, किन्तु उनके महावीरत्व के चमकानेवाले उदधि-उल्लङ्घन और द्रोणाचल-आनयन के ही कार्य्य हुए। वीरत्व और पराक्रम में इतना ही भेद है।

वास्तविक वीरत्व का मुख्य आधार शारीरिक वल न होकर मानसिक बल है जिसे इच्छाशक्ति कहते हैं। इस शक्ति का वेग कोई भी नहीं रोक सकता। एक पुरुष की उद्दाम इच्छाशक्ति से पूरी सेना में पुरुषत्व आ सकता है और एक कादर कभी-कभी पूरे दल की कादरता का कारण हो जाता है।

शरीर का वास्तविक राजा मन ही है। इसी की आज्ञा से शरीर तिल-तिल कट जाने से मुँह नहीं मोड़ता और इसी की आज्ञा से एक पत्ते के खड़कने से भी भाग खड़ा होता है। बुद्धि, अनुभव आदि इसके शिक्षक हैं। यही सब मिलकर इसे जैसा वनाते हैं वैसा ही यह वनता है। इच्छा इसी शिक्षित अथवा अशिक्षित मन की आज्ञा है। मन जितना ही दृढ़ अथवा डावाँडोल

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

इन्होंने लगभग २७ पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें 'मिश्रबन्धु-विनोद' तथा 'हिन्दी नव-रत्न' अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ हैं। इनके साहित्यिक निबन्धों के संग्रह 'पुष्पांजलि' और 'सुमनांजलि' के नाम से प्रकाशित हुए हैं। इनकी शैली सरल तथा सुबोध है; भाषा शुद्ध हिन्दी होते हुए भी चलताऊ है। प्रस्तुत पाठ इन्हीं का लिखा हुआ एक सुन्दर निबन्ध है।

वीरत्व संसार में एक अमूल्य रत्न है। इसका आविर्भाव उत्साह से होता है। साहित्य-शास्त्र में उत्साह ही इसका स्थायी भाव माना गया है, अर्थात् बिना उत्साह के यह कभी स्थिर नहीं हो सकता। जिस पुरुष में किसी प्रकार का उत्साह नहीं है वह किसी भी बात में कभी वीरता नहीं दिखला सकता। यह एक ऐसा गुण है कि जिसे न केवल वीर वरन् कादर भी सम्मान की दृष्टि से देखता है। वीर से बढ़कर सर्वप्रिय कोई भी नहीं होता और संसार पर वीरता का जितना प्रभाव पड़ता है उतना प्रायः और किसी गुण का नहीं पड़ता। सत्य आदि भी बड़े अनमोल गुण हैं, किन्तु जितना आकस्मिक और रोमाञ्चकारी प्रभाव वीरत्व का पड़ेगा उतना सत्य अदि का कभी नहीं पड़ेगा। इसीलिये वीरत्व में जगन्मोहिनी शक्ति सभी अन्य गुणों से श्रेष्ठतर है और यह कीर्ति का सबसे बड़ा वर्धक है। कादरता में तिल-मात्र आकर्षण-शक्ति तथा भय में कुछ भी प्रीति योग्य नहीं है, कादरता का कोई भी अंश किसी का चित्त अपनी ओर आकृष्ट

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

होने से फिर दब नहीं सकती थी। इच्छा और कर्म में कारण-कार्य्य का सम्बन्ध है, सो कारण शिथिण होने से कार्य का होना कठिन होता है। कहते ही हैं कि बिना दृढ़ेच्छा के सदसद्विवेकिनी बुद्धि की आज्ञा अरण्य-रोदन हो जाती है। शुभ कार्य्यारम्भ के विषय में कहा है कि विघ्न-भय से अधम पुरुष किसी शुभ कार्य्य का प्रारम्भ नहीं करते और मध्यम श्रेणी के लोग प्रारम्भ करके भी विघ्न पड़ने पर उसे छोड़ वैठते हैं' किन्तु उत्तम प्रकृतिवाले हज़ार विघ्नों को दबाकर एक बार का प्रारंभ किया हुआ शुभ कार्य पूरा करके ही छोड़ते हैं।

सत्यनिष्ठा भी शौर्य्य के लिए एक आवश्यक गुण है। वीर पुरुष लोभ को सदैव रोकेगा, ईमानदारी का आदर करेगा, असत्य-भाषण से बचेगा और अपना वास्तविक रूप छोड़कर कोई भी कल्पित भाव अथवा गुण प्रकट करने की स्वप्न में भी चेष्टा न करेगा। संसार में साधारण पुरुष लोकमान्यता के लालच में सिद्धान्तों को भंग करते हुए बहुधा देखे गये हैं। सिद्धान्त-प्रिय पुरुष माने जाने की इच्छा लोगों की ऐसी वलवती देखी गई है कि लोगों-द्वारा सिद्धान्ती माने जाने ही के लिए वे सबसे बड़े सिद्धान्तों को हँसते हुए चकनाचूर कर देंगे। जो लोकमान्यता के भय से सिद्धान्तों को भंग करने को तैयार नहीं है वह पुरुष सच्चा वीर कहलाने के योग्य है।

वीरत्व का सर्वश्रेष्ठ समय वाल-वय है। जितना उत्साह मनुष्य में इस काल में होता है उतना और किसी समय नहीं

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

होगा उसकी आज्ञा, इच्छा, वैसी ही पुष्ट अथवा शिथिल होगी। जिसका मन पूर्णतया शिक्षित और स्ववश है उसीकी इच्छा में वज्रवत् दृढ़ता होगी। बिना ऐसी इच्छाशक्ति के कोई पुरुष पूरा वीर नहीं हो सकता। इसलिए दृढ़ता वीरत्व की सबसे बड़ी पोषिका है। जिसका मन उचित काम करने से तिलमात्र चलायमान होता ही नहीं और जो अनुचित कार्य्य देखकर बिना उसे शुद्ध किये नहीं रह सकता, वह सच्चा वीर कहलाता है।

वीरत्व का द्वितीय पोषक न्याय है। बिना इसके वीरत्व शुद्ध एवं प्रशंसास्पद नहीं होता। न्याय से सच्चा होने को बुद्धि की आवश्यकता है और साधारण न्याय को उदारता से अच्छी कान्ति प्राप्त होती है। अतः वीरता के लिए न्याय-शीलता, उदारता और बुद्धि की सदैव आवश्यकता रहती है। सच्चे वीर को अन्याय कभी सह्य नहीं होगा। हमारे यहाँ वीरता का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण भगवान् रामचन्द्र जी का है। इन्हीं को महाकवि भवभूति ने महावीर की उपाधि से भूषित करके महावीर-चरित्र के नाम से इनकी जीवनी एक नाटक में लिखी है। दण्डकारण्य में जिस काल आपने निशिचरों द्वारा भक्षित ब्राह्मणों की अस्थियों का समूह देखा तो तुरन्त 'निशिचरहीन करों महि, भुज उठाय पन कीन्ह'। यही उत्साह का परमोज्ज्वल उदाहरण था जो आपने निशाचरों से बिना कोई बैर हुए भी दिखलाया। समय आने पर आपने यह उद्दण्ड प्रण सत्य करके दिखला दिया।

इनकी इच्छा लोहे के समान पुष्ट थी जो एक बार जाग्रत

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

कल्पना मात्र होती है। हम स्वयं असभ्यता कर बैठते हैं और जब उसके प्रतिफल में हमारे साथ कोई असभ्यता करता है तब हम आत्म-प्रेम में अन्ध होकर समझ बैठते हैं कि वह अकारण हमारे साथ खोटाई करता है। इसलिए सम्भावित पुरुष को बुराई से सदैव बचना ही उचित है और क्षमा से अवश्य काम लेना चाहिए; क्योंकि बे-जाने हुए भी हमारे द्वारा क्षमापात्र का अपकार हो जाना सम्भव है। खोटाई और निष्फलता का पहले ही से भय कभी न करना चाहिए; क्योंकि ऐसा करने से कोई इनको जीत नहीं सकता। इनको जीतने का सबसे सुगम उपाय आशा ही है। इसीलिए कहा गया है कि आशा न छोड़नेवाला स्वभाव भी बहुत ही मूल्यवान है।

स्वार्थत्याग वीरता का सबसे बड़ा भूषण है। दास-भाव ग्रहण करके यदि कोई विवाह-बन्धन में पड़े तो उसके इस कर्त्तव्य में कुछ न कुछ क्षति अवश्य पहुँचेगी। वीरवर हनुमान ने जब भगवान का दासत्व ग्रहण किया तब आत्मत्याग का ऐसा अटल उदाहरण दिखलाया कि जीवन-पर्य्यन्त कभी विवाह ही नहीं किया। इधर भगवान ने जिस काल यह देखा कि इनकी प्रजा इनके द्वारा सीता-ग्रहण के कारण इन्हें उच्चातिउच्च आदर्श से गिरा समझती है तब इन्होंने प्राणोपम अर्द्धाङ्गिनी सती सीता तक का त्याग करके अपने प्रजारञ्जनवाले ऊँचे कर्त्तव्य को हाथ से नहीं जाने दिया। बाल-वय में भी अपने पिता की बेमन की आज्ञा मानने तक से इन्होंने तिलमात्र संकोच नहीं किया। आपने

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

होता। श्लाघ्य चरित्रवान मनुष्य को एक बालक जितना बड़ा मान सकता है उतना कोई दूसरा कभी न मानेगा। बाल-वय में मन सफ़ेद कागज़ की भाँति होता है। इस पर सुगमता-पूर्वक चाहे जो लिख सकते हैं। उदार चरित्रवालों में वीर-पूजन की मात्रा अधिकता से होती है और ऐसा प्रति पुरुष किसी न किसी को श्लाघ्य एवं महावीर अवश्य मानता है। केवल महानीचों को ही संसार में कोई भी श्लाघ्य नहीं समझ पड़ता। जिसमें श्लाघ्य चरित्र-पूजन की कामना बलवती होती है उसमें वीरता कम से कम बीज-रूप से तो रहती ही है। स्यात् इन्हीं विचारों से हमारे यहाँ वीर-पूजन की रीति चलाई गई हो। बिना दूसरों के गुण ग्रहण किए हुए लोग प्रायः उदारचेता नहीं होते। इसी लिए वीरों में कोमलता और उदारता प्रायः साथ ही साथ पाई जाती है। प्रसन्न-चित्तता भी इन्हीं बातों का एक अंग है। कहा गया है कि बुराई रोकने का पहला उपाय मानसिक प्रसन्नता है, दूसरा उपाय भी मानसिक प्रसन्नता है और तीसरा उपाय भी मानसिक प्रसन्नता ही है। बिना इसके बुराई रुक ही नहीं सकती। मानसिक प्रसन्नता का प्रादुर्भाव प्रेम-भाव से होता है। जिस व्यक्ति से हम प्रेम करेंगे वह लौटकर हमसे भी प्रेम करेगा। इसलिए जो संसार-प्रेमी होता है उससे सारा संसार प्रेम करता है जिससे वह सदैव प्रसन्न रहता है। ऐसी दशा में वह बुराई किसके साथ करेगा।

प्रायः देखा गया है कि अपने साथ किसी की खोटाई का मूल

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

भय को देख ही न सके। बालक, स्त्री, दीन, दुखिया आदि के उद्धार में वीर पुरुष अपना जीवन तृण के समान दे देगा। सच्चा वीर निर्बल, भीत, कायर और स्त्री पर कभी किसी प्रकार का अत्याचार न करेगा। संसार में जिसकी पदवी जितनी ही ऊँची है उसे उतनी ही अधिक वीरता दिखलानी चाहिए, क्योंकि उसकी वीरता से संसार का बहुत अधिक लाभ हो सकता है। इन्हीं कारणों से राजा को सब से अधिक वीर होना चाहिए। कहा ही है, 'वीर भोग्या वसुन्धरा'। फिर भी छोटे-छोटे पुरुष को भी उच्च सिद्धान्तों से तिलमात्र नहीं हटना चाहिए; क्योंकि थोड़ी सी बुराई भी संसार में अपना फल दिखलाए बिना नहीं रहती। इसी से कहा गया है कि अनुभवी पुरुष को थोड़े से अवगुण की भी उपेक्षा न करनी चाहिए, नहीं तो थोड़ा सा अवगुण उसमें अवश्य आ जायगा।

अभ्यास के लिए

१—वीरत्व क्या है? इसके महत्व के विषय में आप क्या जानते हैं?

२—वीरत्व और सामर्थ्य में क्या भेद है? उदाहरण देकर समझाइये।

३—वीर बनने के लिए किन-किन गुणों का होना आवश्यक है, और क्यों?

४—'मानसिक बल' और 'स्वार्थत्याग' वीरत्व से किस प्रकार सम्बन्धित हैं?

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

यावज्जीवन स्वार्थत्याग और कर्त्तव्य-पालन का ऊँचा आदर्श दिखलाया, मानों ये सदेह कर्त्तव्य होकर पृथ्वी पर अवतीर्ण हुए थे।

सफलता
कार्य-साफल्य साधारण दृष्टि से तो वीरता का पोषक है, किन्तु दार्शनिक दृष्टि से इसका शौर्य से कोई भी संबंध नहीं है। दार्शनिक शुद्धता प्रति वास्तविक वीर-कर्म में आ जाती है, चाहे वह तिलमात्र भी सफल न हुआ हो और साधारण से साधारण पुरुष-द्वारा सम्पादित हुआ हो। एक साधारण सैनिक जो अपने सेनापति की आज्ञा से मोर्चे पर शरीर त्याग देता है, दार्शनिक दृष्टि से, वड़े से बड़े विजयी के बराबर है। वीरता के मूल सूत्र कर्त्तव्य-पालन और स्वार्थ-त्याग हैं। विना इनके कोई मनुष्य वास्तविक वीर नहीं हो सकता।

एक बार दो रेलों के लड़ जाने से एक एंजिन हाँकनेवाला अपने एंजिन में दवकर वायलर में चिपक रहा। वह मृतप्राय था किन्तु उसके होश-हवास नहीं गये थे। इसलिए वह जानता था कि वायलर जल्द फटकर उड़ेगा; जब और लोग उसे छुड़ाने के लिए प्रयत्न करने लगे तो उसने उन सबको वहाँ से यह कहकर खदेड़ दिया कि मैं तो मरा ही हूँ, तुम सब यहाँ प्राण देने क्यों आये हो, क्योंकि भाप के बल से अभी वायलर फटना चाहता है जिससे सबके प्राण चले जायँगे। मरणावस्था में भी दूसरों के लिए इतना ध्यान रखना वीरता का बड़ा लक्षण है।

हमारे यहाँ वीर को शूर कहते हैं कि अन्धे की भाँति वह

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

७--अँगूठी मुद्रिका

[लेखिका—श्रीमती चन्द्रावती त्रिपाठी एम० ए०]
माननीय

आपका जन्म मुरादाबाद के एक प्रतिष्ठित एवं सुशिक्षित घराने में हुआ है । आपने प्रयाग क्रास्थवेट कालेज, तथा प्रयाग-विश्व-विद्यालय में शिक्षा प्राप्त की है । आप कान्यकुब्ज जाति की प्रथम लेडी ग्रेजुयेट और हिन्दी विषय लेकर एम० ए० उत्तीर्ण होने वाली सर्व प्रथम महिला हैं । आजकल आप प्रयाग विश्वविद्यालय के अन्तर्गत वीमेन्स कालेज में प्रोफेसर हैं ।

श्रीमती चन्द्रावती जी का पालन-पोषण हिन्दी के वायुमंडल ही में हुआ है, अतः हिन्दी के प्रति आपका विशेष अनुराग होना स्वाभाविक ही है । आपके निबंध सरस्वती में प्रकाशित होते हैं । 'नन्ददास की रास पंचाध्यायी,' 'तुलसीदास के राजनीतिक विचार' और 'मातृ भाषा की महत्ता' शीर्षक आपके सुन्दर लेख हैं । आपने अपने निबंधों में बड़ी ही सुबोध एवं सरल भाषा का प्रयोग किया है । प्रस्तुत पाठ आपके लेखों में एक अत्यन्त ही रोचक लेख है । उपस्थित

अँगूठी की गणना जेवरों में होती है । अन्य गहनों की अपेक्षा यह बहुत साधारण और छोटा ज़ेवर माना जाता है । आकार में छोटी होने के कारण वड़े जेवरों के साथ इसका

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

५—निम्नांकित के अर्थ लिखिए और उन्हें वाक्यों में प्रयुक्त कीजिए:—

श्लाघ्य; रोमांचकारी; मुँह मोड़ना; डावाँडोल; अरण्य-रोदन; चकनाचूर और अवाक् रहना।

६—मिश्र बन्धुओं की साहित्य-सेवा का उल्लेख कीजिए।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

अपना अस्तित्व सदा के लिए खो चुके हैं। कितनों का विकृत रूप हो गया, कितनों का केवल नाम-मात्र अवशेष है और कितनों का नाम-निशान भी मिट गया है। सारांश यह कि फ़ैशन सैकड़ों ज़ेवरों की जीवन-लीला क्षण भर में समाप्त कर देता है। किसी एक काल के लोक-प्रिय ज़ेवर दूसरे काल में पुराने कहला कर फ़ैशन के शिकार बन जाते हैं पर शाबाश है अँगूठी को जो फ़ैशन के निष्ठुर हाथों से आज तक बची हुई है। न उसका पहनावा बन्द हुआ, न उसका कोई स्थानापन्न ही मिला। प्राचीन काल से लेकर आज तक अँगूठी अँगूठी ही है। प्राचीन होने पर भी वह नवीन है, सबसे अधिक प्रचलित होने पर भी सर्वप्रिय है। इसीलिए ग़रीब से लेकर राजा तक, बालक से लेकर वृद्ध तक, ग्रामीण अशिक्षित से लेकर आधुनिक शिक्षा और सभ्यता से युक्त विद्वान् तक इसके अनन्य प्रेमी बने हुए हैं। गहनों के घोर विरोधी अति आधुनिक और नवीनता के प्रेमी भी इसके सच्चे भक्त हैं। सचमुच, इसके समान सम्मान और प्रेम पाने वाला ज़ेवर कदाचित् ही कोई दूसरा निकले।

इन गुणों के सिवा इसका एक सर्वश्रेष्ठ गुण और है। वह है इसका अद्भुत आकर्षण और मनोभावनाओं को व्यंजित करने की अनुपम शक्ति। मनोविज्ञान की यह पूर्ण ज्ञाता है। कठोर धातु के निर्मित अपने निर्जीव शरीर में, अपनी छोटी-सी परिधि के भीतर ही मानव हृदय की गूढ़ से गूढ़ और गहरी से गहरी सुकुमार भावनाओं को केन्द्रीभूत करने की इसमें अपार

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

व्यक्तित्व छिपा रहता है। उनके सामने तो इसके वास्तविक महत्त्व का ज्ञान, इसके अलौकिक गुणों की परख, बहुत कम लोगों को होती है। पर इस छोटे से आकार वाले ज़ेवर ने अपने जीवन इतिहास से यह सिद्ध कर दिखाया है कि छोटी वस्तुएँ भी अपने असाधारण गुणों के कारण अमरत्व की अधिकारिणी हो जाती हैं।

अँगूठी में सबसे विचित्र गुण यह है कि वह एक ऐसा ज़ेवर है जो प्रत्येक देश, प्रत्येक जाति और प्रत्येक समाज को अपने प्रेम पाश में बाँधे हुए है। सारा संसार इस पर मुग्ध है। क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, क्या ईसाई, सभी इसके चिर प्रेमी बने हुए हैं। सभी ने अपने समाज में इसे उच्च स्थान और आदर दे रक्खा है। अन्य ज़ेवरों के समान इस पर केवल स्त्रियों की ही छाप नहीं है। स्त्री और पुरुष दोनों का ही इस पर समान अधिकार है, समान प्रेम है। दोनों की ही यह परम प्रेयसी बनी हुई है।

इतना लघु आकार और इतना दुर्बल शरीर पाने पर भी इसका व्यक्तित्व असाधारण है, इसकी शक्ति अनुपम है, इसकी आत्मा बड़ी बलवती है। इस कारण ज़ेवर के प्रधान शत्रु फ़ैशन का सामना एक मात्र अँगूठी ही दृढ़ता के साथ कर सकी है। इसने अपने प्रबल शत्रु को सफलता के साथ परास्त किया है। गहनों के इतिहास को देखने से पता चलता है कि फ़ैशन के चंगुल में फँसकर अब तक सैकड़ों ज़ेवर अपना स्वरूप,

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

विशेषता यह है कि प्रत्येक अवसर पर प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह बहुत अनुकूल और उपयुक्त उपहार हो सकती है। इस कारण इसका प्रचार व्यापक है। यह दो बिछुड़ते हुए प्रेमियों के लिए सर्वोत्तम 'स्मृति-चिह्न' है, विरही जनों को शान्ति पाने का सुखद अवलंब है, प्रेमिका पर प्रेम का प्रथम परिचय देने के लिये प्रेमी का सुन्दर 'प्रेमोपहार' है, ग़रीबों की ज़ेवर की चिरसाध की पूर्ति का एक मात्र साधन है, अमीरों का ऐश्वर्य और वैभव-प्रदर्शन करने का बहुत छोटा सा भाव-पूर्ण संकेत है

इसके गुणों और मोहिनी शक्ति पर मुग्ध होकर ही भावनाओं के सच्चे पारखी कवियों ने भी एक-मात्र इसी ज़ेवर को काव्यों में महत्त्व-पूर्ण स्थान दिया है। प्राच्य और पाश्चात्य दोनों ही देशों के साहित्य में हम इसके उदाहरण पाते हैं। संस्कृत के महाकवि कालिदास के विश्व-विख्यात 'अभिज्ञान शकुन्तला' नाटक में अँगूठी का जो महत्त्व-पूर्ण स्थान है वह किसी से छिपा नहीं है। नाटक की घटनाओं को तीव्रतम स्थिति पर पहुँचानेवाली, भावनाओं का अंतर्द्वन्द्व दिखलानेवाली, संयोग दशा उपस्थित होने पर भी वियोग कराने वाली और अंत में दुखान्त होने वाले नाटक को सुखान्त बना देनेवाली एक-मात्र यह अँगूठी ही है। अँगूठी की कल्पनिक कथा को निकाल देने से उस नाटक में कुछ भी नहीं रह जाता। वास्तव में नाटक की ख्याति का मुख्य कारण, कवि की प्रतिभा का विकास कराने का मूल आधार अँगूठी ही है। संस्कृत के विशाखदत्त-कृत

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

कुशलता है। शायद इसी गुण के कारण विवाह ऐसे पवित्र अवसरों पर भी इसका समुचित समादर है। ईसाइयों के यहाँ तो सगाई और विवाह के अवसरों पर इसका अत्यधिक महत्त्व है। उनके यहाँ यह विवाह का शुभ चिह्न मानी जाती है। इसके आदान-प्रदान से ही दो-प्राणी पति-पत्नि के रूप में आजीवन के लिये बँध जाते हैं। विभिन्न हृदयों के एकीकरण का और आत्मसमर्पण का कैसा सुन्दर 'प्रणय-चिह्न' है! हिन्दुओं के यहाँ भी विवाह के चौथे दिन 'चतुर्थी' नामक रस्म में अँगूठी का विशेष महत्त्व है। उस दिन बर-वधू एक दूसरे के हाथ का कंगन खोलते हैं और कुछ अन्य कृत्यों के बाद वर अपनी अँगूठी वधू को पहना देता है। इसका अभिप्राय भी यही होता है कि वर इस 'प्रणय चिह्न' को देकर वधू पर प्रकट कर देता है कि उसके हृदय और प्रेम की एक-मात्र अधिकारिणी अब से वही हुई। प्रेम-प्रदर्शन का कैसा अनूठा ढँग है! दो अपरिचित हृदयों का कितना सुन्दर प्रेमालाप है, भाव-प्रकाशन की कितनी अर्थ-पूर्ण संकेतमयी भाषा। ✓

वैवाहिक महत्त्व के सिवा अन्य अवसरों पर भी अँगूठी का महत्त्व कुछ कम नहीं है। परोपकार और मान-रक्षा तो इसके प्रधान कर्त्तव्य हैं। ऐसा कोई नहीं जिसको समय पड़ने पर यह सहायता न देती हो। इसी कारण यह सबको प्यारी है। कम से कम और अधिक से अधिक मूल्यवती होने के कारण इसकी लोक-प्रियता अधिक बढ़ी हुई है। इसकी एक मुख्य

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

जाती हैं। वे जड़ 'मुंदरी' से कितने भाव-पूर्ण शब्दों में प्रश्न कर बैठती हैं—

"श्रीपुर में, बन मध्य हौं, तू मृग करी अनीति।
कहि मुँदरी अब तियन की, को करिहै परतीति॥
कहि कुशल मुद्रिके राम गात।
शुभ लक्ष्मण-सहित समान तात॥"

पर जब मुंदरी से कोई उत्तर नहीं पातीं तब किस भोलेपन से हनूमान से उसकी मौनता का कारण पूछती हैं—

"यह उतरु देति नहिं बुद्धिमंत। केहि कारण धौं हनुमंत संत।"

सीता की इस मानसिक अव्यवस्था को देखकर हनूमान भी कितनी चतुराई से उत्तर देते हैं—

"तुम पूछत कहि मुद्रिके, मौन होत यहि नाम।
कंकन की पदवी दई, तुम बिन या कहँ राम॥"

कितनी खूबी से हनूमान सीता को उसकी स्थिति का ज्ञान कराकर श्रीराम की विरहावस्था का भी परिचय देते हैं।

इसी प्रकार अंग्रेज़ी के महाकवि शेक्सपियर ने भी अपने 'मर्चेन्ट आफ वेनिस' नामक नाटक में अदालत की कार्रवाई के बाद अँगूठी की अन्तःकथा की ही कल्पना कर दुःखान्त होने वाले नाटक का अन्त सुखमय बना दिया है। अदालत के दृश्य में शायलॉक द्वारा एन्टोनियो के हृदय का एक पौंड मांस लेने के हठ से जनता स्तंभित हो जाती है। समस्त घटनाओं तथा दृश्यों का वातावरण पाठकों की भावनाओं को उद्दीप्त कर अशान्त

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

'मुद्रा राक्षस' नाटक में भी अँगूठी ही एक प्रकार से समस्त घटनाओं का सूत्रधार बनी हुई है। राक्षस की नामांकित अँगूठी पा जाने पर ही चाणक्य जाली पत्र तैयार करता है और उस पर अँगूठी से मुहर छापकर शत्रु में भेद का बीज बो देने में सफल होता है। इसी के सहारे सारी घटनाएँ राक्षस के विपक्ष में और चाणक्य के पक्ष में हो जाती हैं। राक्षस पकड़ा जाता है॥ चाणक्य और राक्षस का सफलता और विफलता का खेल अँगूठी ही खेलाती है।

आदि कवि वाल्मीकि और हिन्दी-कवि तुलसीदास के श्री रामचन्द्र भी बन जाते समय समस्त ऐश्वर्य निस्पृह-भाव से परित्याग कर देते हैं, पर अँगूठी का मोह त्यागना वनवासी राम के लिए भी कठिन हो जाता है। उसे वे चुपचाप अपने साथ वन को ले ही जाते हैं। उनके इस प्रेम को देखकर वह नाच उठती है। अवसर पड़ने पर वह भी श्रीराम के हाथ के कोमल और सुखद स्पर्श के सुख को त्याग कर हनुमान-द्वारा लंकापुरी में पहुँच कर सीता की शान्ति का साधन बन जाती है। कविवर केशवदास की 'रामचन्द्रिका' में तो श्रीराम की अँगूठी न मालूम कितनी अनूठी भावनायें सीता के हृदय में जाग्रत करा देती है। इतना ही नहीं, इसके क्षणिक स्पर्श से केशव की कला भी चमक उठती है।

सीता का भावावेश इतना अधिक तीव्र हो जाता है कि वे क्षण भर के लिए विवेक शून्य हो जड़-चेतन का भेद भूल

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

हाथ है । प्राचीन काल में राजाओं की सत्ता की निर्देशिका यही रहती थी, राज्य-कार्यों में इसी का हाथ अधिक रहता था। भारत के इतिहास में भी अनेक कथाओं में इसका मुख्य भाग है। अधिकतर राजा-रानियाँ और राजकुमारियाँ शत्रु के अपमान से बचने के निमित्त इसी के नग की ओट में विष छिपाये रखतीं थी, और समय पड़ने पर उसको खाकर अपने धर्म और गौरव की रक्षा करती थीं।

अतः अंगूठी के जीवन-इतिहास के पृष्ठों को देख कर यही कहा जा सकता है कि इसका यौवन अनन्त है, सौभाग्य अखंड है, जीवन अमर है और यश विश्व-व्यापी है।

अभ्यास के लिये

१—आभूषणों में अँगूठी को इतना अधिक महत्व क्यों दिया जाता है ?

२—फैशन के निष्ठुर हाथों से केवल अँगूठी ही बची हुई है—यह कहाँ तक सत्य है ?

३—अँगूठी ने किस प्रकार कालिदास के दुःखान्त होने वाले नाटक को सुखान्त कर दिया ?

४—किन-किन साहित्यकारों ने अँगूठी के सहारे अपने ग्रंथों का निर्माण किया है, और वे अपनी रचनाओं में कहाँ तक सफल हुए हैं।

५—अँगूठी के गुण-दोषों पर प्रकाश डालते हुए उसकी लोक-प्रियता पर एक छोटा सा लेख लिखिए ।

---

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

रचना देता है। पर अँगूठी की कल्पना से कवि क्षण भर में ही सारा वातावरण बदल देता है। बैरिस्टर के वेश में पोर्शिया आकर अपने अकाट्य तर्कों के बल से एन्टोनियो के प्राण बचा लेती है। उस समय वह और उसके क्लर्क के वेश में नेरिसा, बसेनियो और ग्रैशियानो से कृतज्ञता के चिह्न-रूप में अँगूठी ही लेते हैं। नाटक के अन्त में जब सब पात्र एक जगह मिलते हैं तब अपनी प्रकृति के अनुसार अँगूठी पोर्शिया और बसेनियो में और नेरिसा और ग्रैशिआनो में क्षणिक 'प्रणय-कलह' करा कर अद्भुत आनन्द लूटती है। पोर्शिया बसेनियो पर दोषारोपण करती है।

बात अधिक बढ़ती देखकर अँगूठी को बसेनियो पर दया आ जाती है और वह तत्काल सामने आ कर सारा रहस्य खोल देती सारे पात्र प्रसन्न हो जाते हैं।

इसी प्रकार आधुनिक साहित्य में भी इसके अच्छे उदाहरण मिलते हैं। विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने अपनी 'शेषेर कविता' नामक रचना में अँगूठी की अंतःकथा की सृष्टि करके एक लक्ष्य की ओर बढ़ती हुई घटनाओं की धारा का प्रवाह एक-दम बदल दिया है।

बाबू बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय लिखित 'युगलांगुलीय' में तो अँगूठी का एक जोड़ा ही सारे कथानक में प्रधान बना रहता है।

इसके अतिरिक्त राजनैतिक ऐसे नीरस जीवन में भी अँगूठी का अपूर्व प्रेम है। राजनीति की कुटिल चालों में भी इसकी

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

को इतनी क्षमता प्रदर्शित करना आप ही का काम है! तत्सम शब्दों के साथ-साथ नित्य की बोलचाल के तद्भव तथा यत्र-तत्र उर्दू और देशज शब्दों का उपयुक्त प्रयोग भी आपने किया है। भावावेश के चमत्कारों का आपकी शैली में उतना ही परिपुष्ट रूप मिलता है, जितना प्रसाद जी की शैली में। शब्दों का चमत्कार और पदों के लालित्य के साथ-साथ अलंकृत भाषा का प्रयोग भी आपने बड़ी कुशलता से किया है। आपकी उत्कृष्ट और प्रौढ़ शैली में आपके व्यक्तित्व की गहरी छाप है। जैसे सुन्दर आप कलाविद हैं वैसी ही कला-परिपुष्ट आपकी गद्य-शैली है।

राय कृष्णदास ने कविता, गद्य गीत, कहानियाँ एवं संलाप आदि की रचना की है। आपके साधना, छायापथ, प्रवाल, अनाख्या और सुधांशु सुप्रसिद्ध ग्रन्थ हैं। वीज की बात—'सुधांशु' में से ही उद्धृत किया गया है।

"जब किसान अपने खेत का झाड़-झंखाड़ बटोरकर खाद के गढ़े में फेंकने लगा, तो मैं भी उन्हीं में की एक पतली-सी टहनी से चिपटकर उसी गढ़े में जा पड़ा और अवसर की प्रतीक्षा करने लगा।

"कृषक दिन-भर का परिश्रम करके आनन्द से गाता हुआ घर लौटा। उसे केवल परिश्रम का ही आनन्द न था, उसने आज ढेर-की-ढेर खाद का सामान भी जुटा लिया था। निःसन्देह अगले साल फसल दूनी होगी। यही नहीं, उसने अपनी खेती के शत्रु—

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

८--बीज की बात

[लेखक—श्री राय कृष्णदास]

श्री राय कृष्णदास जी भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के कुटुम्बी हैं। आपका जन्म काशी में सं० १६४६ वि० को हुआ था। नौ वर्ष की अवस्था से ही आप कविता करने लगे थे। बारह वर्ष की अल्प आयु में आपके पिता का स्वर्गवास हो गया। 'दुलारे रामचन्द्र' नाम से १६ वें वर्ष में आपने एक उपन्यास लिखना प्रारम्भ किया जो अधूरा ही रह गया। कविता में आपके मार्ग दर्शक बाबू मैथिलीशरण गुप्त हैं। ये बंगला साहित्य से भी प्रभावित हुए हैं। आपकी 'साधना' रवीन्द्र नाथ की 'गीतांजलि' के ढङ्ग पर रची गई है। आपकी कहानियों पर भी रवीन्द्र और प्रभात का प्रभाव पड़ा है। आप कला-कोविद भी हैं। आपकी सब से बड़ी कीर्ति आपका किया हुआ कला-कृतियों का संग्रह है जो आज कल नागरी प्रचारिणी सभा, काशी का एक अंग है। आपने हिन्दी-साहित्य की महत्वपूर्ण सेवायें की हैं। आपकी गद्य-रचनाओं में मानव हृदय की अनुभूतियों की बड़ी मर्मस्पर्शी अभिव्यंजना हुई है। भावात्मक शैली के निर्वाह में आपने काव्य-कल्पना का विशेष आश्रय लिया है। आपकी अधिकांश गद्य रचनाएँ दार्शनिक भावों से परिपुष्ट और सुन्दर हैं। भावनाओं की गम्भीरता के साथ-साथ आपकी भाषा बड़ी ही परिमार्जित एवं प्रौढ़ है। नित्य की व्यावहारिक और चलती हुई भाषा में भाव-व्यंजना

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

को इतनी क्षमता प्रदर्शित करना आप ही का काम है! तत्सम शब्दों के साथ-साथ नित्य की बोलचाल के तद्भव तथा यत्र-तत्र उर्दू और देशज शब्दों का उपयुक्त प्रयोग भी आपने किया है। भावावेश के चमत्कारों का आपकी शैली में उतना ही परिपुष्ट रूप मिलता है, जितना प्रसाद जी की शैली में। शब्दों का चमत्कार और पदों के लालित्य के साथ-साथ अलंकृत भाषा का प्रयोग भी आपने बड़ी कुशलता से किया है। आपकी उत्कृष्ट और प्रौढ़ शैली में आपके व्यक्तित्व की गहरी छाप है। जैसे सुन्दर आप कलाविद हैं वैसी ही कला-परिपुष्ट आपकी गद्य-शैली है।

राय कृष्णदास ने कविता, गद्य गीत, कहानियाँ एवं संलाप आदि की रचना की है। आपके साधना, छायापथ, प्रवाल, अनाख्या और सुधांशु सुप्रसिद्ध ग्रन्थ हैं। बीज की बात—'सुधांशु' में से ही उद्धृत किया गया है।

"जब किसान अपने खेत का झाड़-झंखाड़ बटोरकर खाद के गढ़े में फेंकने लगा, तो मैं भी उन्हीं में की एक पतली-सी टहनी से चिपटकर उसी गढ़े में जा पड़ा और अवसर की प्रतीक्षा करने लगा।

"कृषक दिन-भर का परिश्रम करके आनन्द से गाता हुआ घर लौटा। उसे केवल परिश्रम का ही आनन्द न था, उसने आज ढेर-की-ढेर खाद का सामान भी जुटा लिया था। निःसन्देह अगले साल फसल दूनी होगी। यही नहीं, उसने अपनी खेती के शत्रु—

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

८--बीज की बात

[लेखक—श्री राय कृष्णदास]

श्री राय कृष्णदास जी भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के कुटुम्बी हैं। आपका जन्म काशी में सं० १९४९ वि० को हुआ था। नौ वर्ष की अवस्था से ही आप कविता करने लगे थे। बारह वर्ष की अल्प आयु में आपके पिता का स्वर्गवास हो गया। 'दुलारे रामचन्द्र' नाम से १६ वें वर्ष में आपने एक उपन्यास लिखना प्रारम्भ किया जो अधूरा ही रह गया। कविता में आपके मार्ग दर्शक बाबू मैथिलीशरण गुप्त हैं। ये बंगला साहित्य से भी प्रभावित हुए हैं। आपकी 'साधना' रवीन्द्र नाथ की 'गीतांजलि' के ढङ्ग पर रची गई है। आपकी कहानियों पर भी रवीन्द्र और प्रभात का प्रभाव पड़ा है। आप कला-कोविद भी हैं। आपकी सब से बड़ी कीर्ति आपका किया हुआ कला-कृतियों का संग्रह है जो आज कल नागरी प्रचारिणी सभा, काशी का एक अंग है। आपने हिन्दी-साहित्य की महत्वपूर्ण सेवायें की हैं। आपकी गद्य-रचनाओं में मानव हृदय की अनुभूतियों की बड़ी मर्मस्पर्शी अभिव्यंजना हुई है। भावात्मक शैली के निर्वाह में आपने काव्य-कल्पना का विशेष आश्रय लिया है। आपकी अधिकांश गद्य रचनाएँ दार्शनिक भावों से परिपुष्ट और सुन्दर हैं। भावनाओं की गम्भीरता के साथ-साथ आपकी भाषा बड़ी ही परिमार्जित एवं प्रौढ़ है। नित्य की व्यावहारिक और चलती हुई भाषा में भाव-व्यंजना

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

"हवा पर सवार, अपनी धुन में मस्त, प्रतिहिंसा का बीज-मन्त्र मैं, आतिशबाजी के बान की तरह सपाटे से चला जा रहा था कि मुझे एक ठिकाना दिखाई दिया और मैंने एक कलामंडी ली तथा उसमें पहुँच कर छिप बैठा।

"दो खेतों के बीच एक ऊँची सी मेड़ थी। बात यह थी कि दोनों खेतवालों में आपस में मेल न था। इसीलिए उन्होंने, अपनी खुशी से नहीं, अपनी इच्छाओं को एक तीसरे के पास बन्धक रखकर यह मेड़ बनवा दी। उसी विरोध के देहरे में मैं उनके सर्वनाश के देवता की तरह, एक छोटे से छिद्र में, स्थापित हो गया और अवसर की प्रतीक्षा करने लगा। क्योंकि उनकी जड़ उखाड़ने के लिए मुझे अपनी जड़ जमानी थी, लू के झटके ने अपने गर्म ओठों से मुझे चूमा और न जाने कहाँ चला गया। उसकी गर्मी मेरी नस-नस में दौड़ गई। प्रतिहिंसा के लिए मेरा खून उबलने लगा।

"एक दिन आकाश में घटा घिर आई। बूँदें पड़ने लगीं। पृथ्वी ने एक सोंधी उसास ली और प्रकृति-बाजीगरनी के भानु-मती के पिटारे, हम बीज, अपना इन्द्र जाल पसारने लगे। दो ही चार दिन में अंकुरित होकर खल्वाट पृथ्वी को हमने गहरी हरी कुन्तल-राशि से आच्छादित करना शुरू किया।

"मैं भी पनपने लगा। मेरी दृढ़ता देखकर अन्तरिक्ष मुझे पयोदान करने लगा। मनुष्य की जलती हुई आँखें ठंडी हुईं। किन्तु किसानों को वह हरियाली अंगारे की तरह मालूम होने

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

हमारे स्वयंरुह वनस्पति-वंश—का भी समूल नाश कर डाला था परन्तु उसे मेरे अस्तित्व का पता न था।

"खलिहान समाप्त हुआ। गरमी आई। ऋण, व्याज और देन-पोत के भार से लदे हुए कृषक अपने पेट काटकर बनियों के हाथ अनाज बेचने लगे और उसके मूल्य में से वे अपने रक्त चूसनेवाले भू-स्वामि पितरों का तर्पण करें कि लग्न के दिन आ पहुँचे और उस धन का बहुत बड़ा अंश वैवाहिक अग्नि में हवन हो गया। खेतिहर अपने आमोद में मग्न थे—'चरै हरित तृन बलि-पसु जैसे।'

"भूमिपाल का जो वज्र अभी उनपर घहराने वाला था, जम की जकात जो खूब जोरों से वसूल की जा रही थी। उसकी ओर उनका ध्यान भी न था। और कहाँ तक! जब यह नित्य का भाग्य ठहरा तो कब तक कोई हाय-हाय करे। अच्छा है जो बेचारे इतनी हँसी-खुशी तो मना लेते हैं।

"हाँ तो, खेतिहर अपने आमोद में उलझे हुए थे और उन पर दैवी एवं मानुषी आपत्तियों के मेघ मँडरा रहे थे। मैं उसी गढ़े में से उझक-उझक यह लीला देखकर इस प्रतिहिंसा वृत्ति से प्रसन्न हो रहा था कि तुम हमारे कृतान्त हो, तो तुम्हारे वे हैं।

"धीरे-धीरे लू के सर्राटे बढ़ने लगे और सारा संसार एक जलता हुआ आवाँ हो उठा। ऐसे ही समय में मैं, एक जीरे से भी नन्हा और दुबला पतला सीकिया-जवान, जलती हुई हवा की बड़वा पर सवार होकर अपना कर्मक्षेत्र खोजने निकल पड़ा।

पाईस-घोड़ी

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

एक ने मुझ पर मुँह भी चलाया ; किन्तु हमारी आत्म-रक्षा की कामना ने लाखों ही बरस पहले से इसका प्रतिकार कर रक्खा था। हमने अपनी नसों में एक ऐसा उग्र गन्ध पैदा कर लिया था कि कोई पशु हमें मुँह में ले ही न सकता था। हमारी यह परम्परागत प्रतिक्रिया उस क्षण मेरे काम आई और उस बैल ने अपने नथने फुफकारते हुए मेरी ओर से मुँह फेर लिया।

"परन्तु इसी प्रसंग में, जाने क्रुद्ध होकर या अकस्मात्, उसने मुझे कुचल दिया और मेरा कोमल हरा शिशु-शरीर छिन्न-भिन्न हो उठा। उस समय मुझे जो पीड़ा हुई, उसका अनुभव शायद दलित मानवता को हो तो हो। जो हो, उससे मेरा एक लाभ हुआ, मेरी बहिर्मुख शक्ति अन्तर्मुख हो उठी और मेरी सारी पनपने और बढ़ने की शक्ति मेरी जड़ों में समाकर उन्हें पुष्ट और गहरी बनाने लगी। इस प्रकार जब कुछ दिनों में उस शक्ति ने मेरी नींव बिलकुल अचल कर ली, तो उसका ध्यान मेरी ऊपरी बाढ़ की ओर गया और हेमन्त के धुंधले प्रभात में मैं गहगहाकर पनप उठा।

"किसान अपने काम में लगे थे। उनकी फसल उनकी सेवा से बाढ़ ले रही थी और मैं 'राम भरोसे जो रहैं, जंगल में हरियायँ' के अनुसार अपने सुयोग के लिए सन्नद्ध हो रहा था।

"धीरे-धीरे शिशिर ने अपना राज्य फैलाया और वह अत्याचार किया कि किसानों के सारे किये-कराये पर तुषारपात हो गया, किन्तु मैं अपनी मौज में कलिया रहा था।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

लगी, जिसे वे अपने उपयोग में ला सकते हों वे धीरे-धीरे हमारी सफाई करने लगे।

"परन्तु मेरा भाग्य मेरे भाई बन्दों से भिन्न था। मैं ऐसी जगह जमा था जहाँ की परवाह मेरे दोनों ओर के ही कृषकों को न थी। वह मेड़ थी—उन लोगों के परतन्त्र अधिकारों की बेड़ी। उसकी ओर हाथ बढ़ाने की उनकी मजाल न थी। जहाँ मनुष्य की शक्ति काम नहीं करती, वहाँ वह उदासीनता के बल पर विजय पाने की आशा करता है। किन्तु उदासीनता से ही दूसरों का काम बनता है।

"इस भाँति पूर्ण स्वतन्त्रता से मैं अपने उत्साह की तरह बढ़ने लगा। पूरवी हवा के झकोरों पर पेंगे मारने लगा; आनन्द-गान गाने लगा और उस दिन की प्रतिक्षा करने लगा, जब मैं एक से अनेक होकर मनुष्य की संहारैषणा पर पानी फेर दूँ।

"किन्तु मनुष्य के भूमि-अधिकारों के आगे पशुओं ने सिर नहीं झुकाया है। मनुष्य की राजनीति, राष्ट्र-विभाजन, भूमिक्षेत्रण पशुओं के लिए मान्य नहीं। चाहे मनुष्य दिन-रात उन्हें जोतता रहे, पर वे पृथ्वी पर अपने स्वाभाविक जन्मसिद्ध अधिकारों से वंचित होने के लिए प्रस्तुत नहीं। राजप्रासादों के प्रचंड प्रहरी कीट-पतंगों के आक्रमण और अधिकार से उसकी रखवाली नहीं कर सकते।

"सो, उन किसानों के बैलों ने मुझे कवलित कर जाना चाहा।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

कहाँ हो जाओगे और यह तैयार सेना कम से कम एक साल के लिए तितर-बितर हो जायगी। अतएव इसी क्षण तुम सब यहाँ फैल जाओ और इस कृषि-समृद्धि के तहस-नहस के लिए अभी से मोर्चाबन्दी कर लो।

"ठीक इसी समय पवन के एक झोंके ने आकर उन्हें बखेर ही नहीं दिया, प्रत्युत उन्हीं-उन्हीं स्थानों पर ले जाकर स्थापित भी कर दिया, जहाँ से उनमें का एक भी नष्ट न हो सके।

"सच है—

"उद्यमः साहसं धैर्यं बुद्धिः शक्तिः पराक्रमः।
षडेते यत्र वर्त्तन्ते तत्र देवस्सहायकृत् ॥"

अभ्यास के लिये

१—बीज की बात का सारांश अपनी भाषा में लिखिए।

२—बीज अपनी प्रतिहिंसा की भावना में किस प्रकार सफल हुआ ?

३—प्रस्तुत पाठ से आप कौन सी शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं ?

४—राय कृष्णदास का एक संक्षिप्त परिचय लिखिए और उनकी शैली संबंधी प्रधान विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

५—निम्नांकित अवतरणों की व्याख्या कीजिए :—

(अ) प्रकृति बाजीगरनी....................पसारने लगी।

(ब) मेरी बहिर्मुख.........................हो उठी।

(स) मैंने भी कहा ठीक है.........तितर-बितर हो जायगी।

———

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

"जब वसन्त आया, तो मैंने उसे अपने छोटे-छोटे कासनी फूलों की भेंट दी। और उसने मेरी भीनी-भीनी महक को अपने पवन द्वारा इधर-उधर वितरित करा दिया। अपनी इस कीर्ति से मुझे उतनी प्रसन्नता न हुई, जितनी उस वसन्त के संगीत से, जिसके प्रत्येक स्वर में मुझे अपनी तपश्चर्या की सिद्धि की मन्द ध्वनि सुनाई पड़ रही थी।

"कृषक वेचारे दुखी थे। उनकी फसल मारी गई थी। योंही दाने-दाने को मुहताज हो रहे थे; अब तो दाने भी नहीं, वक्कल से भी मुहताज होने की वारी आ गई। यद्यपि मुझे उससे कोई सहानुभूति न थी, पर मैं उनके दुःख से दुखी ज़रूर था। और यदि वे मेरी भाषा समझ सकते तो मैं उन्हें अवश्य अपने हृदय की वेदना कह सुनाता।

"अन्य पार्थिवों के साथ पारस्परिक व्यवहार पर मैं उन्हें एक उपदेश भी दिया चाहता था। पर दुर्भाग्य, कि हमारी भाषाएँ भिन्न थीं। जो हो; मैं इन विचारों में मग्न ही था कि वसन्त बीत चला और ग्रीष्म के आगमन के साथ मेरे फूलों की पँखड़ियां भी बीजों में परिणत हो उठीं।

"चैती बयार वह रही थी और मारे प्रसन्नता के मेरी छाती फूली जा रही थी। मेरे असंख्य बीज अपने मुरझाते हुए पुष्प-कोष में रहने के लिये तैयार न थे। मैंने भी कहा—'ठीक है, एकोऽहं बहु स्याम्' की सिद्धि हो ही चुकी, अब तुम देर न करो नहीं तो कहीं फिर खाद के गढ़े में पहुँच गए तो न जाने कहाँ के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

थे। इनकी आलोचनाएँ आकर्षक और चुभते हुये व्यंग से ओत-प्रोत हैं। इनकी गद्य रचना सजीव, व्यक्तित्व की छाप वाली एवं उर्दू, फ़ारसी, संस्कृत मिश्रित होती है। 'पद्मपराग' और 'प्रबन्ध-मंजरी' इनके सुन्दर लेख संग्रह हैं। प्रस्तुत लेख शर्मा जी के 'पद्मपराग' के प्रथम भाग से उद्धृत किया गया है।

भगवान् श्रीकृष्ण इस धराधाम पर पाँच हज़ार वर्ष पूर्व अवतीर्ण हुए थे। जन्माष्टमी का शुभ पर्व प्रतिवर्ष हमें इस चिरस्मरणीय घटना की याद दिलाता है। आर्य-जाति बड़ी श्रद्धा-भक्ति से इस परम पावन पर्व को मनाती है। विश्व की इस अलौकिक विभूति के गुण-कीर्तन से करोड़ों आर्यजन अपने हृदयों को पवित्र बनाते हैं। अपनी वर्तमान अधोगति में, निराशा के इस भयानक अंधकार में उस दिव्य ज्योति को ध्यान की दृष्टि से देखकर सन्तोष लाभ करते हैं। आज दुःख-दावानल से दग्ध भारतभूमि घनश्याम की अमृत-वर्षा की बाट जोहती है। दुःशासन-निपीड़ित प्रजा-द्रौपदी रक्षा के लिए कातर स्वर में पुकारती है। धर्म अपनी दुर्गति पर सिर धुनता हुआ 'यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति' की याद दिलाकर प्रतिज्ञा-भंग की ओर संकेत कर रहा है। जाति-जननी अत्याचार-कंस के कष्ट-कारागार में पड़ी दिन काट रही है, गौएँ अपने 'गोपाल' की याद में प्राण दे रही हैं, जान गँवा रही हैं। इस प्रकार भगवान् के जन्म-दिन का शुभ अवसर भी हमें अपनी मौत का मर्सिया ही सुनाने को विवश कर रहा है। आनन्द-बधाई के दिन भी हम

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

६--भगवान् श्रीकृष्ण

[लेखक—पंडित पद्मसिंह शर्मा]

स्वर्गीय पं० पद्मसिंह शर्मा का जन्म संवत् १९३३ में नायक-नगला ग्राम, ज़िला बिजनौर में हुआ। ये हिन्दी, उर्दू, संस्कृत, फ़ारसी के धुरन्धर विद्वान् थे। प्रारम्भ में इन्होंने 'सत्यवादी' 'परोपकारी' तथा 'अनाथरक्षक' पत्रों का संपादन किया। फिर ज्वालापुर महाविद्यालय में वे 'भारतोदय-पत्र' का संपादन एवं अध्यापन दोनों ही कार्य सुचारु ढङ्ग से करते रहे। इन्हें हिन्दी, उर्दू, संस्कृत कवियों की सहस्रों सूक्तियाँ कंठस्थ थीं। संवत् १९८० में जब इन्होंने पं० ज्वालाप्रसाद मिश्र-कृत 'बिहारी-सतसई' की टीका पर 'सतसईसंहार' नामक आलोचना निकाली तो हिन्दी-संसार में तहलका मच गया और इनकी धाक सदा के लिये जम गई। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ने इन्हें इस कृति पर १२००) का 'मंगलाप्रसाद पुरस्कार' प्रदान किया। तदनन्तर, पाँच वर्ष बाद ये मुजफ्फरपुर में होने वाले साहित्य सम्मेलन के १८ वें अधिवेशन के सभापति बनाये गए। ये हिन्दुस्तानी एकेडेमी प्रयाग में भी व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किए गए थे। आजीवन साहित्य-सेवा कर ये संवत् १९८३ को स्वर्गवासी हुए।

शर्मा जी की हिन्दी के लब्ध-प्रतिष्ठ विद्वान्, अच्छे निबन्ध-लेखक और 'सतसई-संहार' द्वारा तुलनात्मक समालोचना के सूत्रपात-कर्त्ता

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

हम कर्मयोगी भगवान् कृष्ण के आदर्श का अनुकरण करते तो आज हम इस दयनीय दशा में न होते। महाभारत के श्रीकृष्ण को भूलकर 'गीत-गोविंद' के कृष्ण का काल्पनिक चित्र निर्माण करके उस आदर्श महापुरुष को 'चोरजारशिखामणिः' की उपाधि दे डाली है। पतन की पराकाष्ठा है! कृष्णचरित्र के सर्वश्रेष्ठ लेखक श्री बंकिमचन्द्र ने एक जगह खिन्न होकर लिखा है—

"जब से हम हिन्दू अपने आदर्श को भूल गये और हमने कृष्ण-चरित्र को अवनत कर लिया तब से हमारी सामाजिक अवनति होने लगी। जयदेव (गीतगोविन्द-निर्माता) के कृष्ण की नक़ल करने में सब लग गये, पर 'महाभारत के कृष्ण' की कोई याद भी नहीं करता।"

श्रीकृष्ण को हिन्दू-जाति क्या समझ बैठी है, इसका उल्लेख वर्णन श्री बंकिमचन्द्र ने इस प्रकार किया है—

"पर अब प्रश्न यह है कि भगवान् को हम लोग क्या समझते हैं। यही कि बचपन में वे चोर थे, दूध, दही, मक्खन चुराकर खाया करते थे। युवावस्था में वे दुराचारी थे, और प्रौढ़ावस्था में वंचक ठग और शठ थे। उन्होंने धोखा देकर कर्ण द्रोणादि के प्राण लिये। क्या इसी का नाम मानव-चरित्र है? जो केवल शुद्ध सत्व है, जिससे सब प्रकार की शुद्धियाँ होती हैं और पाप दूर होते हैं, उसका मनुष्य-देह धारण-कर समस्त पापाचरण करना क्या भगवच्चरित्र है?

"सनातन-धर्म द्वेषी कहा करते हैं कि भगवच्चरित्र की ऐसी

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अपना दुखड़ा रो रहे हैं, विधि की विडम्बना से 'प्रभाती' के समय 'विहाग' अलापना पड़ रहा है। संसार की अनेक जातियाँ क्षुद्र और बहुधा कल्पित आदर्शों के सहारे उन्नति के शिखर पर आरूढ़ हो गई हैं और हो रही हैं। उत्तम आदर्श उन्नति का प्रधान अवलम्ब है। अवनति के गर्त में पतित जाति के लिए तो आदर्श ही उद्धार-रज्जु है। आर्य-जाति के लिए आदर्शों का अभाव नहीं है। सब प्रकार के एक से एक बढ़कर आदर्श सामने हैं। संसार की अन्य किसी जाति ने इतने आदर्श नहीं पाये; फिर भी—इतने महत्व-शाली आदर्श पाकर भी—आर्य-जाति क्यों नहीं उठती! यही नहीं, कभी कभी तो 'आदर्शवाद' ही दुर्दशा का कारण बन जाता है।

भगवान् श्रीकृष्ण संसार भर के आदर्शों में सर्वाङ्गपूर्ण आदर्श हैं। इसी कारण हिन्दू उन्हें सोलह-कला सम्पूर्ण अवतार, 'कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्' मानते हैं। अवतार न माननेवाले भी उन्हें आदर्श योगिराज, कर्मयोगी, सर्वश्रेष्ठ महापुरुष कहते हैं। मनुष्य-जीवन को सार्थक बनाने के लिए जो आदर्श अपेक्षित हैं वे सब स्पष्ट रूप में प्रचुर परिमाण में श्रीकृष्णचरित्र में विद्यमान हैं। ध्यानी, ज्ञानी, योगी, कर्मयोगी, नीति-धुरंधर नेता और महारथी योद्धा, जिस दृष्टि से देखिए, जिस कसौटी पर कसिए श्रीकृष्ण अद्वितीय ही प्रतीत होंगे। संस्कृत-भाषा का साहित्य कृष्णचरित्र की महिमा से भरा पड़ा है। दुर्भाग्य से हम उसके तत्व को हृदयंगम नहीं करते। हम 'आदर्श' का अनुकरण करना नहीं चाहते, उलटा उसे अपने पीछे घसीटना चाहते हैं और यही हमारी अधोगति का कारण है। यदि

अवनति

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

लीडरों की धूम है, और फ़ालोअर कोई नहीं।
सब तो जनरल हैं यहाँ, आखिर सिपाही कौन है?

पर उनमें कितने हैं, जिन्होंने आदर्श नेता श्रीकृष्ण के चरित्र से शिक्षा ग्रहण की है? नेता नितान्त निर्भय, परम निष्पक्ष और विचारों का शुद्ध होना चाहिए, ऐसा कि संसार की कोई विपत्ति या प्रलोभन उसे किसी दशा में भी अपने व्रत से विचलित न कर सके।

महाभारत के युद्ध की तैयारियाँ हो चुकी हैं, सन्धि के सारे प्रयत्न निष्फल हो चुके हैं, धर्मराज युधिष्ठिर का कोमल हृदय युद्ध के अवश्यम्भावी दुष्परिणाम को सोचकर विचलित हो रहा है—इस दशा में भी वे सन्धि के लिए व्याकुल हैं। बड़ी ही कठिन समस्या उपस्थित है। श्रीकृष्ण स्वयं सन्धि के पक्ष में थे। सन्धि के प्रस्ताव को लेकर उन्होंने स्वयं ही दूत बनकर जाना उचित समझा। दुर्योधन जैसे 'स्वार्थान्ध, कपट-कुशल और जीते जुआरी' के दरबार में ऐसे अवसर पर दूत बनकर जाना जान से हाथ धोना, दहकती हुई आग में कूदना था। श्रीकृष्ण के दूत बनकर जाने के प्रस्ताव पर सहसा कोई सहमत न हुआ। दुर्योधन की कुटिलता और क्रूरता के विचार से श्रीकृष्ण का वहाँ जाना किसी ने उचित न समझा इसपर वाद-विवाद हुआ। उद्योग-पर्व का वह प्रकरण 'भगवद्यानपर्व' बड़ा अद्भुत और हृदयहारी है, जिसमें भगवान् श्रीकृष्ण के सन्धि-प्रस्ताव को लेकर जाने का वर्णन है। श्रीकृष्ण जानते थे कि सन्धि-प्रस्ताव में सफलता न होगी, दुर्योधन

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कल्पना करने के कारण ही भारतवर्ष में पाप का स्रोत बढ़ गया है। इसका प्रतिवाद कर किसी को भी जय प्राप्त करते नहीं देखा है। मैं श्रीकृष्ण को स्वयं भगवान् मानता हूँ और उनपर विश्वास करता हूँ।। अँगरेज़ी शिक्षा से मेरा यह विश्वास और भी दृढ़ हो गया है। और इतिहास में भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र के चरित्र का वास्तव में कैसा वर्णन है यह जानने के लिए मैंने जहाँ तक बना इतिहास और पुराणों का मन्थन किया। इसका फल यह हुआ कि श्रीकृष्ण-चन्द्र के विषय में जो पाप-कथायें प्रचलित हैं वे अमूलक जान पड़ी। उपन्यासकारों ने श्रीकृष्ण के विषय में जो मनगढ़न्त बातें लिखी हैं उन्हें निकाल देने पर जो कुछ बचता है वह अति विशुद्ध, परम पवित्र, अतिशय महान् मालूम हुआ है। मुझे यह भी मालूम हो गया है कि ऐसा सर्वगुण-सम्पन्न और सर्वपापरहित आदर्श चरित्र और कहीं नहीं है—न किसी देश के इतिहास में, और न किसी काव्य में।"

श्रीकृष्ण चरित्र का मनन करने वालों को श्री बंकिमचन्द्र की उक्त सम्मतियों पर गम्भीरता से विचार करना चाहिए। भगवान् श्रीकृष्ण के चरित्र के रहस्य को अच्छी तरह समझकर उसके आधार पर यदि हम अपने जाति-जीवन का निर्माण करें तो सारे संकट दूर हो जायँ। उदाहरण के तौर पर नेताओं को लीजिए। आजकल हमारे देश में नेताओं की बाढ़ आई हुई है, जिसे देखिए वही 'सार्वभौम नेता' नहीं तो 'अखिल भारतीय नेता' है। इस बाढ़ को देखकर चिन्ता के स्वर में कहना पडता है—

सौर संसार

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

निर्भयतापूर्वक सन्धि का औचित्य समझाया। पाण्डवों की निर्दोषता और दुर्योधन का अन्याय प्रमाणित किया, पर दुर्योधन किसी तरह न माना। श्रीकृष्ण उसे फटकारकर चलने लगे, दुर्योधन ने भोजन के लिए आग्रह किया, इस पर जो उचित उत्तर भगवान् ने दिया वह उन्हीं के योग्य था। कहा कि—

"सम्प्रीतिभोज्यान्यन्नानि ह्यापद्भोज्यानि वा पुनः।
न च सम्प्रीयसे राजन्, न चैवापद्गता वयम्॥'

अर्थात् या तो प्रीति के कारण किसी के यहाँ भोजन किया जाता है, या फिर विपत्ति में—दुर्भिक्षादि संकट में। तुम हमसे प्रेम नहीं करते और हम पर कोई ऐसी आपत्ति नहीं आई है, ऐसी दशा में तुम्हारा भोजन कैसे स्वीकार करें?

इस प्रत्याख्यान से क्रुद्ध होकर दुर्योधन ने उन्हें घेरकर पकड़ना चाहा, पर भगवान् श्रीकृष्ण के अलौकिक तेज और दिव्य पराक्रम ने उसे परास्त कर दिया, वह अपनी धृष्टता पर लज्जित होकर रह गया। हमारे नेता लोग भगवान् के इस आचरण से शिक्षा ग्रहण करें तो उनका और लोक का कल्याण हो।

पाण्डव और कौरव दोनों ही श्रीकृष्ण के सम्बन्धी थे, दोनों ही उन्हें अपने पक्ष में लाने के लिए समान रूप से प्रयत्नशील थे। 'लोक-संग्रह' के तथ्य से भी भगवान् अनभिज्ञ न थे, पर उन्होंने सर्व-प्रियता के मोह में पड़कर न्याय को अन्याय और धर्म को अधर्म नहीं बताया। निरपराध को अपराधी बताकर अपनी 'समदर्शिता' या उदारता का परिचय नहीं दिया। श्रीकृष्ण अपने

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

किसी की माननेवाला जीव नहीं है, यात्रा आपद-जनक है, प्राण-संकट की सम्भावना है, परन्तु कर्त्तव्यानुरोध से जान पर खेलकर भी उन्होंने वहाँ जाना ही उचित समझा।

दुर्योधन को जब मालूम हुआ कि श्रीकृष्ण आ रहे हैं, तो उसने श्रीकृष्ण को साम, दाम, दण्ड, भेद-द्वारा जाल में फँसाने का कोई उपाय उठा न रक्खा। मार्ग में जगह-जगह उनके स्वागत का धूम-धाम से प्रबन्ध किया गया। रास्ते की सड़कें खूब सजाई गईं। दुर्योधन जानता था कि सब कुछ श्रीकृष्ण के हाथ में है, जो वे चाहेंगे वही होगा, उनकी आज्ञा से पाण्डव अपना सर्वस्व त्याग कर सकते हैं, श्रीकृष्ण को क़ाबू में कर लिया जाय तो बिना युद्ध के ही विजय हो सकती है, श्रीकृष्ण के बल-बूते पर ही पाण्डव युद्ध के लिए सन्नद्ध हो रहे हैं। निदान दुर्योधन ने श्रीकृष्ण को फँसाने की प्राणपण से चेष्टा की। पर 'अच्युत' श्रीकृष्ण अपने लक्ष्य से कब चूकनेवाले थे। संधि का प्रस्ताव स्वीकृत न हुआ। दुर्योधन, कर्ण, शकुनि आदि अपने साथियों के साथ सभा से उठ कर चला गया। जब उसने साम-दाम से काम बनते न देखा तो आवश्यक दंड देने—क़ैद कर लेने का षड्यंत्र रचा, उन्हें अपने घर निमन्त्रित किया। दुर्योधन की इस दुरभिसन्धि को विदुर आदि दूरदर्शी ताड़ गये। उन्होंने श्रीकृष्ण को वहाँ जाने से रोका। श्रीकृष्ण स्वयं भी सब कुछ समझते थे, पर वे जिस काम के लिए आये थे उसके लिए एक बार फिर प्राणपण से प्रयत्न करना ही उन्होंने उचित समझा। वे दुर्योधन के घर पहुँचे और

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

१०--आत्मसंस्कार और संगति

[लेखक—पंडित रामचन्द्र शुक्ल]

आचार्य पं० रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी के उद्भट विद्वान्, उत्कृष्ट समालोचक, मौलिक निबन्धकार, गंभीर लेखक एवं सुकवि हैं। इनका जन्म बस्ती जिला के अगोना ग्राम में संवत् १९४१ में हुआ था। इन्होंने कालेज में रह कर एफ० ए० तक शिक्षा प्राप्त की थी, किन्तु स्वाध्याय से आपने हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी आदि भाषाओं पर अच्छा अधिकार प्राप्त कर लिया था। मिशन स्कूल मिर्जापूर में अध्यापन कार्य करने के बाद संवत् १९६५ में आप काशी आए और शब्द सागर के सहकारी संपादक नियुक्त हुए। काशी-नागरी-प्रचारिणी पत्रिका का कई वर्ष तक आपने सपादन भी किया और फिर हिन्दू विश्वविद्यालय में मृत्यु पर्यन्त हिन्दी-अध्यापक का कार्य करते रहे।

शुक्ल जी हिन्दी के आलोचक-सम्राट् हैं। हिन्दी में वैज्ञानिक ढंग की समीक्षा का प्रारंभ इन्हीं के लेखों से हुआ है। जायसी तुलसी, और सूर पर लिखे हुए आलोचनात्मक निबंध सर्वमान्य हैं। इनका हिन्दी-साहित्य का इतिहास अत्यन्त सुन्दर मौलिक ग्रंथ है जिसके अनुकरण पर हिन्दी में अनेक पुस्तकें लिखी गईं और लिखी जा रही हैं। हिन्दुस्तानी एकेडमी द्वारा शुक्ल जी को इस पुस्तक पर ५००) का पुरस्कार भी मिला था। उनके मनोवैज्ञानिक लेखों का संग्रह 'चिन्तामणि' नाम से छपा है।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

प्राणों का मोह छोड़ कर दुर्योधन को समझाने गये और भयानक संकट के भय से भी कर्त्तव्य पराङ्मुख न हुए।

आर्य-जाति के नेता और शिक्षित युवक श्रीकृष्ण-चरित्र को अपना आदर्श मानकर यदि अपने चरित्र का निर्माण करें तो देश और जाति का उद्धार करने में समर्थ हो सकेंगे। परमात्मा ऐसा ही करे।

अभ्यास के लिये

१—भगवान् श्रीकृष्ण किन कारणों से संसार भर के आदर्शों में सर्वाङ्गपूर्ण आदर्श हैं ?

२—श्रीकृष्ण सोलह कलापूर्ण अवतार हैं—इसे भली भांति समझाइए ?

३—श्रीकृष्ण के संबन्ध में बंकिमचन्द्र चटर्जी की क्या धारणा है ?

४—श्रीकृष्ण के चरित्र से कौन-कौन सी शिक्षा प्राप्त होती हैं ?

५—पं० पद्मसिंह के विषय में एक परिचयात्मक लेख लिखिये और उनकी शैली की विशेषताएँ बतलाइये।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

आयोजन का स्थान नहीं है? क्या वह तुम्हारे हाथ में सौंपा हुआ ऐसा पदार्थ नहीं है जिसका लेखा तुम्हें परमात्मा को और अपनी आत्मा को देना होगा ? सोचो तो कि दो, चार, दस जितने गुण तुम्हें दिए गए हैं, उन्हें तुम्हें देनेवाले को पचास गुने सौगुने करके लौटाना चाहिए, अथवा ज्यों के त्यों बिना व्याज वा वृद्धि के। यदि जीवन एक प्रहसन ही है जिसमें तुम गा-बजाकर और हँसी-ठट्ठा करके समय काटो, तब जो कुछ उसके महत्त्व के विषय में मैंने कहा है, सब व्यर्थ ही है। पर जीवन में गंभीर बातें और विपत्ति के दृश्य भी हैं। मेरी समझ में तो महाराणा प्रताप की भाँति संकट में दिन काटना वाजिद अली शाह की भाँति भोग-विलास करने से अच्छा है। मेरी समझ में शिवाजी के सवारों की तरह चने बाँधकर चलना औरंगजेब के सवारों की तरह हुक्के और पानदान के साथ चलने से अच्छा है। मैं जीवन को न तो दुःखमय और न सुखमय बतलाना चाहता हूँ, बल्कि उसे एक ऐसा अवसर समझता हूँ जो हमें कुछ कर्त्तव्यों के पालन के लिये दिया गया है, जो हमें परलोक के लिये कुछ कमाई करने के लिये दिया गया है। हमारे सामने ऐसे बहुत से लोगों के दृष्टांत हैं जिनके विचार भी महान् थे, कर्म भी महान् थे।

हमें सदा इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि हम कैसा साथ करते हैं। दुनिया तो जैसी हमारी संगत होगी, वैसा ही समझेगी ही ; पर हमें अपने कामों में भी संगत ही के अनुसार

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ने आपकी इस पुस्तक पर 'मंगलाप्रसाद पारितोषिक, प्रदान किया है। 'काव्य में रहस्यवाद' आपकी एक और आलोचना की पुस्तक है। बुद्धचरित, शशांक, आपके सुन्दर अनुवाद-ग्रन्थ हैं। हृदय का मधुर भार, वसन्त, पथिक इत्यादि आपकी प्रसिद्ध कविताएँ हैं जिनमें प्रकृति का वर्णन बहुत ही सुन्दर है।

शुक्ल जी गंभीर प्रकृति के लेखक हैं। आपकी गद्य-शैली पर अपने व्यक्तित्व की अनोखी छाप है। आपकी लेखन-शैली ठोस और संक्षिप्त है। मननशीलता एवं उद्भावना इसकी प्रधान विशेषताएँ हैं आपकी भाषा संस्कृत-निष्ठ है। मुहावरों और कहावतों का आपने बहुत ही कम प्रयोग किया है। आपने उर्दू शब्दों का भी कहीं-कहीं प्रयोग किया है। जिससे आपके काव्य में अपूर्वता आ गई है। आपका वाक्य संगठन बड़ा ही सुन्दर है। विराम-चिन्हों का प्रयोग आप ने बड़ी ही सतर्कता से किया है।

यह लेख 'आत्मसंस्कार और संगीत,' 'आदर्श जीवन' नामक पुस्तक से उद्धृत किया गया है।

संगति का गुप्त प्रभाव हमारे आचरण पर बड़ा भारी पड़ता है। जो मनुष्य आत्मसंस्कार में लगा हो उसे अपने-मिलने वालों के आचरण पर भी दृष्टि रखनी चाहिए, उसे यह ध्यान रखना चाहिए कि उनकी बुद्धि और उनका आचरण ठिकाने का है। साधारणतः हमें अपने ऊपर ऐसे प्रभावों को न पड़ने देना चाहिए जिनसे हमारी विवेचना की गति मन्द हो वा भले-बुरे का विवेक क्षीण हो। जीवन का उद्देश्य क्या है? क्या वह भविष्य के लिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

में सम्मिलित हो सकते हैं, न हमें कर्त्तव्य का ध्यान दिला सकते हैं, तो ईश्वर हमें उनसे दूर ही रखे। हमें अपने चारों ओर जड़ मूर्तियाँ सजाना नहीं है। आजकल ज़ान-पहचान बढ़ाना कोई बड़ी बात नहीं है। कोई भी युवा पुरुष ऐसे अनेक युवा पुरुषों को पा सकता है जो उसके साथ थिएटर देखने जायँगे, नाच-रंग में जायँगे, सैर-सपाटे में जायँगे, भोजन का निमन्त्रण स्वीकार करेंगे। यदि ऐसे जान-पहचान के लोगों से कुछ हानि न होगी तो लाभ भी न होगा। पर यदि हानि होगी तो बड़ी भारी होगी। सोचो तो, तुम्हारा जीवन कितना नष्ट होगा, यदि ये जान-पहचान के लोग उन मनचले युवकों में से निकलें जिनकी संख्या दुर्भाग्य-वश आजकल बहुत बढ़ रही है, यदि उन शोहदों में से निकलें जो अमीरों की बुराइयों और मूर्खताओं की नकल करते हैं, दिन-रात बनाव-सिंगार में रहा करते हैं, कुलटा स्त्रियों के फोटो मोल लिया करते हैं, महफ़िलों में 'ओ हो हो' 'वाह, वाह' किया करते हैं, गलियों में ठट्ठा मारते हैं और सिगरेट का धुआँ उड़ाते चलते हैं। ऐसे नवयुवकों से बढ़कर शून्य, निःसार और शोचनीय जीवन और किसका है? वे अच्छी बातों के सच्चे आनन्द से कोसों दूर हैं। उनके लिए न तो संसार में सुन्दर और मनोहर उक्ति-वाले कवि हुए हैं और न सुन्दर आचरणवाले महात्मा हुए हैं। उनके लिये न तो बड़े-बड़े वीर अद्भुत कर्म्म कर गए हैं और न बड़े बड़े ग्रन्थकार ऐसे विचार छोड़ गए हैं जिनसे मनुष्य जाति के हृदय में सात्विकता की उमंगें उठती हैं। उनके लिये फूल-पत्तियों

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

सहायता वा बाधा पहुँचेगी। उसका चित्त अत्यन्त दृढ़ समझना चाहिए जिसकी चित्तवृत्ति पर उन लोगों का कुछ भी प्रभाव न पड़े जिनका बराबर साथ रहता है। पर अच्छी तरह समझ रखो कि यह कभी हो नहीं सकता। चाहे तुम्हें जान न पड़े, पर उनका प्रभाव तुम पर बराबर हर घड़ी पड़ता रहेगा और उसी के अनुसार तुम उन्नत वा अवनत होगे, उत्साहित वा हतोत्साह होगे। एक विद्वान् से पूछा गया—"जीवन में किस शिक्षा की सब से अधिक आवश्यकता है ?" उसने उत्तर दिया—"व्यर्थ की बातों को जानकर भी अनजान होना।" यदि हम जान-पहचान करने में बुद्धिमानी से काम न लेंगे तो हमें बराबर अनजान बनना पड़ेगा।

महामति बेकन कहता है—'समूह का नाम संगत नहीं है। जहाँ प्रेम नहीं है, वहाँ लोगों की आकृतियाँ चित्रवत् हैं और उनकी बातचीत झाँझ की झनकार है।" पहचान करने में हमें कुछ स्वार्थ से काम लेना चाहिये। जान-पहचान के लोग ऐसे हों जिनसे हम कुछ लाभ उठा सकते हों, जो हमारे जीवन को उत्तम और आनंदमय करने में कुछ सहायता दे सकते हों, यद्यपि उतनी नहीं जितनी गहरे मित्र दे सकते हैं। मनुष्य का जीवन थोड़ा है; उसमें खोने के लिये समय नहीं। यदि क, ख और ग हमारे लिये कुछ नहीं कर सकते, न कोई बुद्धिमानी वा विनोद की बातचीत कर सकते हैं, न कोई अच्छी बात बतला सकते हैं, न अपनी सहानुभूति द्वारा हमें ढारस बंधा सकते हैं, न हमारे आनंद

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

अवनति के गढ़े में गिराती जायगी ; और यदि अच्छी होगी तो सहारा देनेवाली बाहु के समान होगी जो उसे निरंतर उन्नति की ओर उठाती जायगी।

बहुत से लोग ऐसे होते हैं जिनके घड़ी भर के साथ से भी बुद्धि भ्रष्ट होती है ; क्योंकि उतने ही बीच में ऐसी-ऐसी बातें कही जाती हैं जो कानों में न पड़नी चाहियें, चित्त पर ऐसे-ऐसे प्रभाव पड़ते हैं जिनसे उसकी पवित्रता का नाश होता है। बुराई अटल भाव धारण करके बैठती है। बुरी बातें हमारी धारणा में बहुत दिनों तक टिकती हैं। इस बात को प्रायः सब लोग जानते हैं कि भद्दी दिल्लगी वा फूहड़ गीत जितनी जल्दी ध्यान पर चढ़ते हैं, उतनी जल्दी कोई गम्भीर वा अच्छी बात नहीं। एक बार एक मित्र ने मुझसे कहा कि उसने लड़कपन में कहीं से एक बुरी कहावत सुन पाई थी जिसका ध्यान वह लाख चेष्टा करता है कि न आवे, पर बार-बार आता है। जिन भावनाओं को हम दूर रखना चाहते हैं, जिन बातों को हम याद नहीं करना चाहते, वे बार-बार हृदय में उठती हैं और बेधती हैं। अतः तुम पूरी चौकसी रखो, ऐसे लोगों को कभी साथी न बनाओ जो अश्लील, अपवित्र और फूहड़ बातों से तुम्हें हँसना चाहें। सावधान रहो। ऐसा न हो कि पहले-पहल तुम इसे एक बहुत सामान्य बात समझो और सोचो कि एक वार ऐसा हुआ, फिर ऐसा न होगा ; अथवा तुम्हारे चरित्र-बल का ऐसा प्रभाव पड़ेगा कि ऐसी बातें बकनेवाले आगे चलकर आप सुधर जायँगे। नहीं, ऐसा नहीं

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

में कोई सौंदर्य्य नहीं, झरनों के कलकल में मधुर संगीत नहीं, अनन्त सागर-तरंगों में गंभीर रहस्यों का आभास नहीं, उनके भाग्य में सच्चे प्रयत्न और पुरुषार्थ का आनन्द नहीं उनके भाग्य में सच्ची प्रीति का सुख और कोमल हृदय की शांति नहीं। जिनकी आत्मा अपने इंद्रिय-विषयों में ही लिप्त है, जिनका हृदय नीच आशयों और कुत्सित विचारों से कलुषित है, ऐसे नाशोन्मुख प्राणियों को दिन-दिन अंधकार में पतित होते देख कौन ऐसा होगा जो तरस न खायगा ? जिसने स्वसंस्कार का विचार अपने मन में ठान लिया हो, उसे ऐसे प्राणियों का साथ न करना चाहिए। मकदूनिया का बादशाह डेमेट्रियस कभी-कभी राज्य का सब काम छोड़ अपने ही मेल के दस-पाँच साथियों को लेकर विषय-वासना में लिप्त रहा करता था। एक बार बीमारी का बहाना करके इसी प्रकार वह अपने दिन काट रहा था। इसी बीच उसका पिता उससे मिलने के लिये गया और उसने एक हँस-मुख जवान को कोठरी से बाहर निकलते देखा। जब पिता कोठरी के भीतर पहुँचा, तब डेमेट्रियस ने कहा—"ज्वर ने मुझे अभी छोड़ा है।" पिता ने कहा—"हाँ! ठीक है, वह दरवाजे पर मुझे मिला था।"

कुसंग का ज्वर सबसे भयानक होता है। यह केवल नीति और सद्वृत्ति का ही नाश नहीं करता, बल्कि बुद्धि का भी क्षय करता है। किसी युवा पुरुष की संगत यदि बुरी होगी, तो वह उसके पैर में बँधी चक्की के समान होगी जो उसे दिन-दिन

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

सब बातों की जानकारी नहीं प्राप्त हो सकती जो स्वशिक्षा के लिये आवश्यक हैं। समाज में प्रवेश करने से हमें अपना यथार्थ मूल्य विदित होता है। हम देखते हैं कि हम उतने चतुर नहीं हैं जितने एक कोने में बैठकर कोई पुस्तक आदि हाथ में लेकर अपने को समझा करते थे। भिन्न-भिन्न लोगों में भिन्न-भिन्न प्रकार के गुण होते हैं। यदि कोई एक बात में निपुण है तो दूसरा दूसरी में। समाज में प्रवेश करके हम देखते हैं कि इस बात की कितनी आवश्यकता है कि लोग हमारी भूलों को क्षमा करें; अतः हम दूसरों की भूल-चूक को क्षमा करना सीखते हैं। हम कई ठोकरें खाकर नम्रता और अधीनता का पाठ सीखते हैं। इनके अतिरिक्त और भी बड़े-बड़े लाभ होते हैं। समाज में सम्मिलित होने से हमारी समझ बढ़ती है, हमारी विवेक-बुद्धि तीव्र होती है, वस्तुओं और व्यक्तियों के सम्बन्ध में हमारी धारणा विस्तृत होती है, हमारी सहानुभूति गहरी होती है, हमें अपनी शक्तियों के उपयोग का अभ्यास होता है। समाज एक परेड है जहाँ हम चढ़ाई करना सीखते हैं, अपने साथियों के साथ-साथ मिलकर बढ़ना और आज्ञा-पालन करना सीखते हैं, इनसे भी बढ़कर और और बातें हम सीखते हैं। हम दूसरों का ध्यान रखना, उनके लिये कुछ स्वार्थ-त्याग करना सीखते हैं, सद्गुणों का आदर करना और सुन्दर चालढाल की प्रशंसा करना सीखते हैं। स्वसंस्कारा-भिलाषी युवक को उस चाल-व्यवहार की अवहेलना न करनी चाहिए जो भले आदमियों के समाज में आवश्यक समझी जाती

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

होगा। जब एक बार मनुष्य अपना पैर कीचड़ में डाल देता है, तब फिर यह नहीं देखता कि वह कहाँ और कैसी जगह पैर रखता है। धीरे-धीरे उन बुरी बातों से अभ्यस्त होते-होते तुम्हारी घृणा कम हो जायगी। पीछे तुम्हें उनसे चिढ़ न मालूम होगी, क्योंकि तुम यह सोचने लगोगे कि चिढ़ने की बात ही क्या है। तुम्हारा विवेक कुंठित हो जायगा और तुम्हें भले-बुरे की पहचान न रह जायगी। अन्त में होते-होते तुम भी बुराई के भक्त बन जाओगे। अतः हृदय को उज्ज्वल और निष्कलंक रखने का सब से अच्छा उपाय यही है कि बुरी संगत की छूत से बचो। यह पुरानी कहावत है कि—

काजल की कोठरी में कैसो हू सयानो जाय,
एक लीक काजर की लागिहै पै लागिहै।

जो कुछ ऊपर कहा गया है, उससे यह न समझना चाहिए कि मैं युवा पुरुषों को समाज में प्रवेश करने से रोकता हूँ। नहीं, कदापि नहीं। अच्छा समाज यदि मिले तो उसका बहुत अच्छा प्रभाव पड़ता है और उससे आत्मसंस्कार के कार्य में बड़ी सहायता मिलती है। प्रायः देखने में आता है कि गाँवों से जो लोग नगरों में जीविका आदि के लिये आते हैं, उनका जी बहुत दिनों तक, संगी साथी न रहने से, बहुत घबराता है और कभी-कभी उन्हें ऐसे लोगों का साथ कर लेना पड़ता है जो उनकी रुचि के अनुकूल नहीं होते। ऐसे लोगों के लिये अच्छा तो यह होता है कि वे किसी साहित्य-समाज में प्रवेश करें। पर वहाँ भी उन्हें उन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

सब बातों की जानकारी नहीं प्राप्त हो सकती जो स्वशिक्षा के लिये आवश्यक हैं। समाज में प्रवेश करने से हमें अपना यथार्थ मूल्य विदित होता है। हम देखते हैं कि हम उतने चतुर नहीं हैं जितने एक कोने में बैठकर कोई पुस्तक आदि हाथ में लेकर अपने को समझा करते थे। भिन्न-भिन्न लोगों में भिन्न-भिन्न प्रकार के गुण होते हैं। यदि कोई एक बात में निपुण है तो दूसरा दूसरी में। समाज में प्रवेश करके हम देखते हैं कि इस बात की कितनी आवश्यकता है कि लोग हमारी भूलों को क्षमा करें; अतः हम दूसरों की भूल-चूक को क्षमा करना सीखते हैं। हम कई ठोकरें खाकर नम्रता और अधीनता का पाठ सीखते हैं। इनके अतिरिक्त और भी बड़े-बड़े लाभ होते हैं। समाज में सम्मिलित होने से हमारी समझ बढ़ती है, हमारी विवेक-बुद्धि तीव्र होती है, वस्तुओं और व्यक्तियों के सम्बन्ध में हमारी धारणा विस्तृत होती है, हमारी सहानुभूति गहरी होती है, हमें अपनी शक्तियों के उपयोग का अभ्यास होता है। समाज एक परेड है जहाँ हम चढ़ाई करना सीखते हैं, अपने साथियों के साथ-साथ मिलकर बढ़ना और आज्ञा-पालन करना सीखते हैं, इनसे भी बढ़कर और और बातें हम सीखते हैं। हम दूसरों का ध्यान रखना, उनके लिये कुछ स्वार्थ-त्याग करना सीखते हैं, सद्गुणों का आदर करना और सुन्दर चालढाल की प्रशंसा करना सीखते हैं। स्वसंस्कारा-भिलाषी युवक को उस चाल-व्यवहार की अवहेलना न करनी चाहिए जो भले आदमियों के समाज में आवश्यक समझी जाती

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

होगा। जब एक बार मनुष्य अपना पैर कीचड़ में डाल देता है, तब फिर यह नहीं देखता कि वह कहाँ और कैसी जगह पैर रखता है। धीरे-धीरे उन बुरी बातों से अभ्यस्त होते-होते तुम्हारी घृणा कम हो जायगी। पीछे तुम्हें उनसे चिढ़ न मालूम होगी, क्योंकि तुम यह सोचने लगोगे कि चिढ़ने की बात ही क्या है। तुम्हारा विवेक कुंठित हो जायगा और तुम्हें भले-बुरे की पहचान न रह जायगी। अन्त में होते-होते तुम भी बुराई के भक्त बन जाओगे . अतः हृदय को उज्ज्वल और निष्कलंक रखने का सब से अच्छा उपाय यही है कि बुरी संगत की छूत से बचो। यह पुरानी कहावत है कि—

काजल की कोठरी में कैसो हू सयानो जाय,
एक लीक काजर की लागिहै पै लागिहै।

जो कुछ ऊपर कहा गया है, उससे यह न समझना चाहिए कि मैं युवा पुरुषों को समाज में प्रवेश करने से रोकता हूँ। नहीं, कदापि नहीं। अच्छा समाज यदि मिले तो उसका बहुत अच्छा प्रभाव पड़ता है और उससे आत्मसंस्कार के कार्य में बड़ी सहायता मिलती है। प्रायः देखने में आता है कि गाँवों से जो लोग नगरों में जीविका आदि के लिये आते हैं, उनका जी बहुत दिनों तक, ंगी साथी न रहने से, बहुत घबराता है और कभी-कभी उन्हें ऐसे लोगों का साथ कर लेना पड़ता है जो उनकी रुचि के अनुकूल नहीं होते। ऐसे लोगों के लिये अच्छा तो यह होता है कि वे किसी साहित्य-समाज में प्रवेश करें। पर वहाँ भी उन्हें उन

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

मौज से आगे चलकर वे ऊब जाते हैं और सौ में निन्नानवे मनुष्य इस मौज की लीक ग्लानि और घृणा के साथ पीटते चले जाते हैं, उन्हें उसमें कोई आनन्द नहीं रह जाता और अन्त में उनकी आत्मा इतनी जड़ हो जाती है कि उसमें सत्य और सौंदर्य्य का कुछ भी अनुभव नहीं रह जाता। पर इस पतित दशा में पड़ने के पहले मनुष्य अच्छी बातों के लिये छटपटाता अवश्य है, और उसका यह छटपटाना सफल हो सकता है, यदि वह इस संसार के कलुषित अँधेरे मार्गों से निकलकर किसी अच्छे परिवार वा अच्छे समाज में पड़ जाय।

हमारे बड़े नगरों के युवक साधारणतः दो भागों में बाँटे जा सकते हैं—एक वे जिन्होंने लड़कपन में कुछ धर्म-सम्बन्धी शिक्षा पाई, दूसरे वे जिन्होंने संसार के व्यवहारों में प्रवेश करने के पहले इस प्रकार की तैयारी नहीं की। पहले प्रकार के लोगों के लिये तो कथा-वार्त्ता, धर्मोपदेश आदि बहुत से साधन मिल जाते हैं जिनसे चित्त पर घर ही का सा संस्कार बना रहता है। उनके लिये किसी नए यंत्र की आवश्यकता नहीं होती। जो यंत्र उनके पास रहता है, उसी के स्वच्छंद उपयोग की आवश्यकता होती है। धर्मोपदेशकों को युवा पुरुषों की बहुत खोज-खबर रखनी चाहिए, उन्हें कुमार्ग से बचाने का उद्योग करना चाहिए, उनकी सहायता के लिये प्रत्येक समय उद्यत रहना चाहिए। माता-पिता को भी चाहिए कि युवकों को घर से बाहर किसी अन्य स्थान पर भेजते समय ऐसा प्रबन्ध करें कि उनके चित्त का संस्कार

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

है। बड़ों के प्रति सम्मान और सरलता का व्यवहार, बराबर वालों से प्रसन्नता का व्यवहार, और छोटों के प्रति कोमलता का व्यवहार भलेमानुसों के लक्षण हैं। सुडौल और सुन्दर वस्तु को देखकर हम लोग प्रसन्न होते हैं। सुन्दर चाल-ढाल को देखकर हम सब लोग आनंदित होते हैं। मीठे वचनों को सुनकर हम सब लोग सन्तुष्ट होते हैं! ये सब बातें हमें मनोनीत होती हैं। किसी भले आदमी को यह कहते सुनकर कि फटी, पुरानी और मैली पुस्तक हाथ में लेकर पढ़ते नहीं बनता हमें हँसना नहीं चाहिए। सोचो तो कि तुम्हारी मंडली में कोई उजड्ड गँवार आकर फूहड़ बातें बकने लगे तो तुम्हें कितना बुरा लगेगा।

युवा पुरुषों को बुरे अनुभवों से बचने के लिये सब से सीधा और सुगम उपाय सत्संग है। अच्छे आदमियों के समाज में बैठने से, जहाँ परस्पर प्रेम और शांति का आनन्द रहता है, बड़ी भारी रक्षा रहती है। यह निश्चय समझना चाहिए कि ऐसे बहुत कम मनुष्य मिलेंगे जो पहले-पहल प्रसन्नता के साथ बुराइयों में फँसते हों, तथा संसार की बुराइयों का अनुभव प्राप्त करते हुए जो कुछ हिचकते न हों और जिनके जी में कुछ खटका न होता हो। मुझे पूरा विश्वास है कि अधिकांश युवा पुरुष जब पहले पहल कुमार्ग पर पैर रखते हैं, तब यदि संसार में कोई उनका हाथ पकड़ने वाला हो तो वे उससे हट सकते हैं। संसार में सब प्रकार के रंग में रहने का उपदेश तो बहुत लोग किया करते हैं और बहुत से लोग विषय-मद में मत्त भी होते हैं, पर अपनी इस

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

जिनके पीछे पुलीस तैनात रहती है। वे समाज में बड़े-बड़े अनर्थों का सूत्रपात करते हैं

अभ्यास के लिये

१—आत्मसंस्कार के अभिलाषी युवकों को कैसे लोगों की संगति रखना चाहिए ?

२—नाना प्रकार के लोगों से मिलने से युवा पुरुष को क्या लाभ होता है ? विस्तार-सहित समझाइए ।

३—निम्नांकित वाक्यों के भाव को भली भाँति समझाइए । :—

(क) कुसंग का ज्वर भयानक होता है ।

(ख) बुराई हमारी धारणा में बहुत दिनों तक टिकती है ।

४—बुरे प्रभावों से बचने का सरल उपाय क्या है ?

५—सत्संग के प्रभाव और महत्त्व पर अपने विचार प्रकट कीजिए ।

६—पं० रामचन्द्र शुक्ल की गद्य-शैली एवं रचनाओं पर एक निबन्ध लिखिए ।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

शुद्ध रहे। हमारे युवा पुरुष चाहे जिस नगर में जायँ, उन्हें धर्म-चर्चा सुनने का अवसर मिल सकता है, धार्मिक सज्जनों की मंडली मिल सकती है; क्योंकि भारतवर्ष के ऐसा धार्मिक देश दूसरा नहीं।

अब रह गए दूसरे वर्ग के लोग जिन्होंने परिवार में सच्चा सुख नहीं प्राप्त किया है, जो किसी कारणवश धार्मिक संस्कार से वंचित रहे हैं। ऐसों के लिये तो कोई उपाय बताना कठिन है। आत्मसंस्कार का प्रयत्न यदि हृदय से करें तो ऐसे युवा पुरुष भी दुष्ट प्रलोभनों से बच सकते हैं; पर उनके लिये सबसे अच्छा उपाय यही है कि वे सत्संग करें। सत्संग का बड़ा भारी प्रभाव पड़ता है। इसमें से बहुत से लोग तो समाजों और साहित्य-संस्थाओं में सम्मिलित होकर अपने समय का सदुपयोग कर सकते हैं और बुराइयों में पड़ने से बचे रह सकते हैं। पर बहुत से ऐसे निकलेंगे जिनकी सभा-समाजों की ओर प्रवृत्ति नहीं होगी, जिन्हें धर्मोपदेश अच्छे नहीं लगते, जो अधिक चहल-पहल और मज़ेदारी की बातें चाहते हैं। बहुत से युवा-पुरुष जो गलियों में टेढ़ी टोपी देकर निकलते हैं, जो अश्लील ठुमरी-टप्पा गाते चलते हैं, जो दिन-रात शतरंज-गंजीफा खेलते रहते हैं, जो दुनिया में सब तरह के मज़े उठाने का दम भरते हैं, जो मेलों-तमाशों में खूब बन ठनकर निकलते हैं, जो महफिलों में बिना बुलाए पहुँचते हैं, उनके लिये क्या किया जा सकता है? वे समाज के कोढ़ हैं, वे उसी प्रकार भयंकर हैं जिस प्रकार चोर और डाकू,

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

के लिए भी कुछ साहित्य-निर्माण किया है 'सच्ची शांति' शीर्षक कहानी आपकी एक उत्कृष्ट रचना है।

१

वे तीन भाई थे—सुचालू, बालू और पालू। सुचालू गवर्नमेन्ट स्कूल गुजरात में व्यायाम का मास्टर था, इसलिये लोग उसे सुचालामल के नाम से पुकारते थे। बालू दुकान करता था, उसे बालकराम कहते थे; परन्तु पालू की रुचि सर्वथा खेल-कूद ही में थी। पिता समझाता, माँ उपदेश करती, भाई निष्ठुर दृष्टि से देखते; मगर पालू सुनी अनसुनी कर देता और अपने रंग में मस्त रहता।

इसी प्रकार पालू की आयु के तैंतीस वर्ष बीत गये, परन्तु कोई लड़की देने को तैयार न हुआ। माँ दुखी होती थी, मगर पालू हँसकर टाल देता और कहता—"मैं ब्याह करके क्या करूँगा मुझे इस बन्धन से दूर ही रहने दो।" परन्तु विधाता के खेल को कौन मेट सकता है? पाँच मील की दूरी पर टाँडा नामक ग्राम है। वहाँ के एक चौधरी ने पालू को देखा, तो लट्टू हो गया। रूप रंग में सुन्दर था, शरीर सुडौल। जात-पाँत पूछ कर उसने अपनी बेटी ब्याह दी।

२

पालू के जीवन में पलटा आ गया। पहले वह दिन के बारह घंटे बाहर रहता था, और घर से ऐसा घबराता था जैसे चिड़िया

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

.. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

११—सच्ची शान्ति

[लेखक—श्री सुदर्शन]

श्री सुदर्शन जी का जन्म पंजाब में सन् १८९५ में हुआ था। आप कहानी लिखने में सिद्धहस्त हैं और प्रेमचन्द्र जी के बाद आपको ही कहानी-संसार में इतनी अधिक ख्याति प्राप्त हुई है। प्रेमचन्द्र और इनमें बहुत कुछ समानता है। दोनों ही सर्व प्रथम उर्दू लेखक थे, तत्पश्चात् हिन्दी की ओर आकृष्ट हुए। कहानियों के अतिरिक्त इन्होंने 'भगवती' और 'परिवर्तन' उपन्यास तथा 'अंजना' नाटक की भी रचना की है। आपके कुछ एकांकी नाटक भी प्रकाशित हो चुके हैं, परन्तु जो सफलता आपको कहानी क्षेत्र में प्राप्त हुई है, वह अन्यत्र प्राप्त नहीं हो सकती। आपकी कहानियों में समाज का सुन्दर एवं मार्मिक चित्रण होता है। व्यंग्य एवं हास्य आपके अनेक कहानियों की जान है। आपकी वर्णन-शैली में चित्र को सजीवता प्रदान करने की अपूर्व क्षमता है। आपकी शैली सरल, सुबोध एवं आडम्बर विहीन है। आपकी भाषा, सुन्दर मुहाविरेदार तथा उर्दू की चाशनी लिए हुए है। सिद्धांत की दृष्टि से आप आदर्शवादी कहानीकार हैं। आपकी कहानियाँ हिन्दी के सुप्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं और 'पुष्प-लता' 'सुदर्शन सुधा' 'तीर्थयात्रा'—प्रभृति आपके कहानी-संग्रह पुस्तक के रूप में भी निकल चुके हैं। इधर आपने व्यावसायिक फ़िल्म-कम्पनियों

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

३

पालू विलक्षण प्रकृति का मनुष्य था। धीरता और नम्रता उसके स्वभाव के सर्वथा प्रतिकूल थी। बाल्यावस्था में वह बेपरवा था। बेपरवाई चरम सीमा पर पहुँच चुकी थी। आठ-आठ दिन घर से बाहर रहना उसके लिये साधारण बात थी। फिर विवाह हुआ प्रेम ने हृदय के साथ पाँवों को भी जकड़ लिया। यह वह समय था जब उसके नेत्र एकाएक बाह्य संसार की ओर से बन्द हो गए, और वह इस प्रकार प्रेम-पाश में फँस गया जैसे शहद में मक्खी। मित्र-मण्डली नोक-झोंक करती थी, भाई-बन्धु आँखों में मुस्कुराते थे, मगर उसके नेत्र और कान दोनों बन्द थे। परन्तु जब स्त्री भी मर गई, तो पालू की प्रकृति फिर चंचल हो उठी। इस चंचलता को न खेल-तमाशे रोक सके, न मनोरंजक किस्से-कहानियाँ। यह दोनों रास्ते उससे पद-दलित किये जा चुके थे। प्रायः ऐसा देखा गया है कि पढ़े-लिखे लोगों की अपेक्षा अनपढ़ और मूर्ख लोग अपनी टेक का ज्यादा ख्याल रखते हैं, और इसके लिये तन-मन-धन तक न्यौछावर कर देते हैं। पालू

यह गुण कूट-कूटकर भरा हुआ था। माता-पिता ने दुबारा ब्याह करने की ठानी परन्तु पालू ने स्वीकार न किया, और उनके कहने-सुनने पर कहा कि जिस बन्धन से एक बार छूट चुका हूँ, उसमें दुबारा न फसूँगा। गृहस्थ का सुख-भोग मेरे प्रारब्ध में न था। यदि होता, तो मेरी पहली स्त्री क्यों मरती। अब तो इसी प्रकार जीवन बिता दूँगा। परन्तु यह

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

पिंजरे से, परन्तु अब वही पिंजरा उसके लिए फूलों की वाटिका बन गया, जिससे बाहर पाँव रखते हुए उसका चित्त उदास हो जाता था। स्त्री क्या आई, उसका संसार ही बदल गया। अब उसे न बाँसुरी से प्रेम था, न किस्सों से प्रीति। लोग कहते, यार! कैसे जोरू-दास हो, कभी बाहर ही नहीं निकलते। हमारे सब साज-समाज उजड़ गये। क्या भाभी कभी कमरे से बाहर निकलने की भी आज्ञा नहीं देतीं? माँ कहती, बेटा व्याह सब के होते आये हैं, परन्तु तेरा सरीखा निर्लज्ज किसी को नहीं देखा कि दिन-रात स्त्री के पास ही बैठा रहे। पिता उसके मुँह पर उसे कुछ कहना उचित नहीं समझता था। मगर सुना कर कह दिया करता था कि जब मेरा व्याह हुआ था, तब मैंने दिन के समय तीन वर्ष तक स्त्री के साथ बात न की थी। पर अब तो समय का रंग ही पलट गया है; आज व्याह होता है, कल घुल-घुल कर बातें होने लगती हैं। पालू लाख अनपढ़ था, परन्तु मूर्ख नहीं था कि इन बातों का अर्थ न समझता। पर स्वभाव का बेपरवा था, हँस कर टाल देता।

× × ×

दिन को प्रेम के दौर चलते, रात को स्वर्ग-वायु के झकोरे आते। पालू की स्त्री की गोद में दो वर्ष का बालक खेलता था, जिस पर माता-पिता दोनों न्योछावर थे। एकाएक उजाले में अन्धकार ने सिर निकाला। गाँव में बिशूचिका का रोग फूट पड़ा, जिसका पहला शिकार पालू की स्त्री हुई।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

है, पिता सन्यासी हो रहा है। परमात्मा के लिये इसका हृदय न दुखाना।"

बालक ने जब देखा कि पिता रो रहा है, तो वह भी रोने लगा और उसके गले लिपट गया; परन्तु पालू के पाँव को यह स्नेह-रज्जु भी न बाँध सकी। उसने हृदय पर पत्थर रक्खा और अपने संकल्प को दृढ़ कर लिया।

कैसा हृदय-वेधक दृश्य था! सायंकाल को जब पशु-पक्षी अपने-अपने बच्चों के पास घरों को वापस लौट रहे थे, पालू अपने बच्चे को छोड़कर घर से बाहर जा रहा था!

४

दो वर्ष बीत गए। पालू की अवस्था में आकाश-पाताल का अन्तर पड़ गया। वह पर्वत पर रहता था, पत्थरों पर सोता था, रात्रि को जागता था और प्रति-क्षण ईश्वर-भक्ति में मग्न रहता था। उसके इस आत्म-संयम की सारे हृषिकेश में धूम मच गई। लोग कहते, यह मनुष्य नहीं देवता है। यात्री लोग जब तक स्वामी विद्यानंद के दर्शन न कर लेते, अपनी यात्रा को सफल न समझते। उसकी कुटिया बहुत दूर पर्वत की एक कन्दरा में थी, परन्तु उसके आकर्षण से लोग वहाँ खिंचे चले आते थे। उसकी कुटिया में रुपये-पैसे और फल-मेवे के ढेर लगे रहते थे, परन्तु वह त्याग का मूर्तिमान रूप उसकी ओर आँख भी न उठाता था। हाँ, इतना लाभ अवश्य हुआ कि उनके निमित्त स्वामी जी के बीसों चेले बन गए। स्वामी जी के मुखमण्डल पर तेज बरसता था, जैसे सूरज

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

अवस्था भी अधिक समय तक न रह सकी। तीन मास के अन्दर-अन्दर उसके माता-पिता दोनों चल बसे। पालू के हृदय पर दूसरी चोट लगी। क्रिया-कर्म से निवृत्त हुआ, तो रोता हुआ बड़ी भावज के पाँवों में गिर पड़ा और बोला—"अब तो तुम्हीं बचा सकती हो, अन्यथा मेरे मरने में कोई कसर नहीं।"

भावज ने उसके सिर पर हाथ फेर कर कहा—"मैं तुम्हें पुत्रों से बढ़कर चाहूँगी। क्या हुआ, जो तुम्हारे माता-पिता मर गये? हम तो जीते हैं।"

"यह नहीं, मेरे बेटे को सँभालो। मैं अब घर में न रहूँगा।"

उसकी भाभी अवाक् रह गई। पालू अब सम्पत्ति बाँटने के लिए झगड़ा करेगा, उसे इस बात की शंका थी; परन्तु यह सुन कर कि पालू घर-बार छोड़ जाने को उद्यत है, उसका हृदय आनन्द से झूलने लगा। मगर अपने हर्ष को छिपा कर बोली—

"यह क्या? तुम भी हमें छोड़ जाओगे, तो हमारा जी यहाँ कैसे लगेगा?"

"नहीं अब यह घर भूत के समान काटने दौड़ता है। मैं यहाँ रहूँगा तो जीता न बचूँगा। मेरे बच्चे के सिर पर हाथ रक्खो। मुझे न धन चाहिए, न सम्पत्ति। मैं सांसारिक धंधों से मुक्त होना चाहता हूँ। अब मैं संन्यासी बनूँगा।"

यह कहकर अपने पुत्र सुखदयाल को पकड़ कर भावज की गोद में डाल दिया और रोते हुए बोला—"इसकी माँ मर चुकी

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

देखा, फूल की तरह खिल गये। उनको विद्यानन्द पर गर्व था। हँसकर बोले—

"कहिए क्या हाल है, शरीर तो अच्छा है ?"

परन्तु, स्वामी विद्यानन्द ने कोई उत्तर न दिया, और रोते हुए उनके चरणों से लिपट गये।

स्वामी प्रकाशानन्द को बड़ा आश्चर्य हुआ। अपने सबसे अधिक माननीय शिष्य को रोते देखकर उनके आत्मा पर आघात-सा लगा। उन्हें प्यार से उठाकर बोले—"क्यों, कुशल तो है ?"

स्वामी विद्यानन्द ने बालकों की तरह फूट-फूटकर रोते हुए कहा—"महाराज, मैं पाखण्डी हूँ। संसार मुझे धर्मावतार कह रहा है, परन्तु मेरे मन में अभी तक अशान्ति भरी हुई है। मेरा चित्त आठों पहर अशान्त रहता है।"

जिस प्रकार भले-चंगे मनुष्य को देखते-देखते कुछ क्षण-पश्चात् उसकी मृत्यु का समाचार सुनकर विश्वास नहीं होता, उसी प्रकार स्वामी प्रकाशानन्द को अपने सदाचारी शिष्य की बात पर विश्वास न हुआ, और उन्होंने इस व्यंग्य से, मानों उनके कानों ने धोखा खाया हो, पूछा—"क्या कहा ?"

स्वामी विद्यानन्द ने सिर झुका कर उत्तर दिया—"महाराज, मेरा शरीर दग्ध हो गया है। परन्तु आत्मा अभी तक निर्मल नहीं हुआ।"

"इससे तुम्हारा अभिप्राय क्या है ?"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

से किरणें निकलती हैं। परन्तु, इतना होते हुए मन को शान्ति न थी। वहुधा सोचा करते कि देश-देशान्तर में मेरी भक्ति की धूम मच रही है, दूर-दूर मेरे यश के डंके वज रहे हैं, मेरे संयम को देखकर बड़े-बड़े महात्मा चकित रह जाते हैं, परंतु मेरे मन को शांति क्यों नहीं। सोचता हूँ, तो सुख की निद्रा नहीं आती। जागता हूँ, तो पूजा-पाठ में मन एकाग्र नहीं होता। इसका कारण क्या है? उन्हें कई बार ऐसा अनुभव हुआ कि चित्त में अशान्ति है; पर वह क्यों है, इसका पता न लगता।

इसी प्रकार दो वर्ष व्यतीत हो गये। स्वामी विद्यानन्द की कीर्त्ति सारे हृषीकेश में फैल गई, परन्तु इतना होने पर भी उनका हृदय शान्त था। प्रायः उनके कान में आवाज़ आती थी कि तू अपने आदर्श से दूर जा रहा है। स्वामी जी बैठे-बैठे चौंक उठते, मानो किसी ने काँटा चुभो दिया हो। बार-बार सोचते, परन्तु कारण समझ में न आता। तव वे घवराकर रोने लग जाते। इससे मन तो हल्का हो जाता था, परन्तु चित्त को शान्ति फिर भी न होती। उस समय सोचते—संसार मुझे धर्मावतार समझ रहा है, पर कौन जानता है कि यहाँ आठों पहर आग सुलग रही है, पता नहीं पिछले जन्म में कौन पाप किए थे, जिससे अब तक आत्मा को शान्ति नहीं मिलती। ✓

अन्त में उन्होंने एक दिन दण्ड हाथ में लिया और अपने गुरु स्वामी प्रकाशानन्द के पास जा पहुँचे। उस समय वे 'रामायण' की कथा से निवृत्त हुए थे। उन्होंने ज्योंही स्वामी विद्यानन्द को

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

५

पालू के मित्रों में लाला गणपतराय का पुत्र भोलानाथ हाँडा बड़ा सज्जन पुरुष था। लखनवाल के लोग उसकी सज्जनता पर लट्टू थे। उसे पालू के साथ प्रेम था। उसके मन की स्वच्छता, उसका भोलापन, उसकी निःस्वार्थता पर भोलानाथ तन-मन से न्योछावर था। जब तक पालू लखनवाल में रहा, भोलानाथ ने सदैव उसकी सहायता की। वे दोनों जोहड़ के किनारे बैठते, धर्मशाला में जाकर खेलते, मन्दिर में जाकर कथा सुनते। लोग देखते तो कहते, कृष्ण-सुदामा की जोड़ी है; परन्तु कृष्ण के आदर-सत्कार करने पर भी जब सुदामा ने वन का रास्ता लिया, तब कृष्ण को बहुत दुःख हुआ। इसके पश्चात् उनको किसी ने खुलकर हँसते नहीं देखा।

भोलानाथ ने पालू का पता लगाने की बड़ी चेष्टा की, परन्तु जब यत्न करने पर भी सफलता न हुई, तब उसके पुत्र सुखदयाल की ओर ध्यान दिया। प्रायः बालकराम के घर चले जाते और सुखदयाल को गोद में उठा लेते, चूमते, प्यार करते, पैसे देते। कभी-कभी उठाकर घर भी ले जाते। वहाँ उसे दूध पिलाते, मिठाई खिलाते और बाहर साथ ले जाते। लोगों से कहते—यह अनाथ है, इसे देखकर मेरा हृदय वश में नहीं रहता। उनके पैरों की चाप सुनकर सुखदयाल के चेहरे पर रौनक़ आ जाती थी। उसके साथ चाचा-चाची घोर निर्दयता का व्यवहार करते। और भोलानाथ का उसे प्यार करना तो उन्हें और भी बुरा लगता था।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

"मैं प्रतिक्षण अशान्त रहता हूँ, मानों कोई कर्त्तव्य है, जिसे मैं पूरा नहीं कर रहा हूँ।"

"इसका कारण क्या हो सकता है, जानते हो ?"

"जानता तो आपकी सेवा में क्यों आता ?"

"एकाएक स्वामी प्रकाशानन्द को कोई बात याद आ गई। वे हँसकर बोले—"तुम्हारी स्त्री है ?"

"उसकी मृत्यु ही तो संन्यास का कारण हुई थी।"

"माता ?"

"वह भी नहीं।"

"पिता ?"

"वह भी मर चुके हैं।"

"कोई बाल-बच्चा ?"

"हाँ, एक बालक है, वह चार वर्ष का होगा।"

"उसका पालन कौन करता है ?"

"मेरा भाई और उसकी स्त्री।"

स्वामी प्रकाशानन्द का मुख-मण्डल चमक उठा। हँसकर बोले—

"तुम्हारी अशान्ति का कारण मालूम हो गया। हम कल तुम्हारे गाँव को चलेंगे।"

विद्यानन्द ने नम्रता से पूछा—

"मुझे शान्ति मिल जायगी ?"

"अवश्य, परन्तु कल अपने गाँव की तैयारी करो।"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

से देख रहा था कि एकाएक भोलानाथ ने उसके कंधे पर हाथ रखकर कहा—

"सुक्खू !"

सूखे धानों में पानी पड़ गया। सुखदयाल ने पुलकित होकर उत्तर दिया—"चाचा !"

"आज लोहड़ी है, तुम्हारी ताई ने तुम्हें क्या दिया।"

"मक्की।"

"और क्या दिया ?"

"और कुछ नहीं।"

"और तुम्हारी बहनों को ?"

"मिठाई भी दी, संगतरे भी दिये, पैसे भी दिये।"

भोलानाथ के नेत्रों में जल भर आया। भर्राये हुए स्वर से बोले—

"हमारे घर चलोगे ?"

"चलूँगा।"

"कुछ खाओगे ?"

"हाँ, खाऊँगा।"

घर पहुँचकर भोलानाथ ने पत्नी से कहा—इसे कुछ खाने को दो। भोलानाथ की तरह, उनकी पत्नी भी सुखदयाल को बहुत प्यार करती थी। उसने बहुत-सी मिठाई उसके सम्मुख रख दी। सुखदयाल रुचि से खाने लगा। खा चुका, तो चलने

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

प्रायः कहा करते—कैसा निर्दयी आदमी है, हमारी कन्याओं के साथ बात भी नहीं करता; कैसी गोरी और सुन्दर हैं, जैसे मक्खन के पेड़े, देखने से भूख मिटती है; परन्तु उसको सुखदयाल के सिवा कोई पसन्द ही नहीं आता। पसन्द नहीं आता, तो न सही; परन्तु क्या यह भी नहीं हो सकता कि कभी-कभी उनके हाथ पर दो पैसे ही रख दे, जिससे सुखदयाल के साथ उसका व्यवहार देखकर उनका हृदय न मुर्झा जाय? पर, यह बातें भोलानाथ के सामने करने का उन्हें साहस न होता। हाँ, उसका क्रोध बेचारे सुखदयाल पर उतरता था। नल नीचे की ओर बहता है। परिणाम यह हुआ कि सुखदयाल सदैव उदास रहने लगा। उसका सुख-कमल मुर्झा गया। प्रेम जीवन की धूप है, वह उसे प्राप्त न था। जब कभी भोलानाथ आता, तब उसे पितृ-प्रेम के सुख का अनुभव होने लगता था।

लोहड़ी का दिन था, साँझ का समय। बालकराम के द्वार पर पुरुषों की भीड़ थी, आँगन में स्त्रियों का जमघट। कोई गाती थी, कोई हँसती थी, कोई आंगन में चावल फेंकती थी, कोई चिवड़े खाती थी। तीन कन्याओं के पश्चात् परमात्मा ने पुत्र दिया था। यह उसकी पहली लोहड़ी थी। बालकराम और उसकी स्त्री दोनों आनन्द से प्रफुल्लित थे। बड़े समारोह से त्योहार मनाया जा रहा था। दस रुपये की मक्की उड़ गई, चिवड़े और रेवड़ी इसके अतिरिक्त, परन्तु सुखदयाल की ओर किसी का भी ध्यान न था। वह घर से बाहर दीवार के साथ खड़ा लोगों की ओर लुब्ध-दृष्टि

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

तक उससे पहले जा पहुँची थीं। उसके क्रोध की कोई थाह नहीं थी। जब रात्रि चली गई और गली-मुहल्ले की स्त्रियाँ अपने-अपने घर चली गईं, तो उसने सुखदयाल को पकड़ कर कहा— "क्यों बे कलमुँहे, चाचा से क्या कहता था ?"

सुखदयाल का कलेजा काँप गया। डरते-डरते बोला—"कुछ नहीं कहता था।"

"तू तो कहता था, ताई मुझे चिमटे से मारती है। बालकराम पास खड़ा था, आश्चर्य से बोला—"अच्छा, अब यह छोकरा हमारी मिट्टी उड़ाने पर उतर आया है"

सुखदयाल ने आँखों-ही-आँखों ताऊ की ओर देखकर प्रार्थना की कि मुझे इस निर्दयी से बचाओ; परन्तु वहाँ क्रोध बैठा था। आशा ने निराशा का रूप धारण कर लिया। ताई ने कर्कश स्वर से डाँटकर पूछा—

"क्यों, बोलता क्यों नहीं ?"

"अब न कहूँगा।"

"अब न कहूँगा। न मरता है, न पीछा छोड़ता है। खाने को देते जाओ, जैसे इसके बाप की जागीर पड़ी है।"

यह कहकर उसने पास पड़ा हुआ बेलन उठाया। उसे देखकर सुखदयाल बिलबिला उठा। परन्तु, अभी उसके शरीर पर पड़ा न था कि उसकी लड़की दौड़ती हुई आई और कहने लगी—

"चाचा आया है।"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

को तैयार हुआ। भोलानाथ ने कहा—"ठहरो, इतनी जल्दी काहे की है।"

"ताई मारेगी।"

"क्यों मारेगी ?"

"कहेगी, तू चाचा के घर क्यों गया था ?"

"तेरी बहनों पर भी मार पड़ती है ?"

"नहीं। उन्हें प्यार करती है।"

भोलानाथ की स्त्री के नेत्र भर आये। भोलानाथ बोले—"जो मिठाई बची है, वह जेब में डाल ले।"

सुखदयाल ने तृषित नेत्रों से मिठाई की ओर देखा और उत्तर दिया—"न।"

"क्यों ?"

"ताई मारेगी और मिठाई छीन लेगी।"

"पहले भी कभी मारा है !"

"हाँ, मारा है।"

"कितनी बार मारा है ?"

"कई बार मारा है।"

"किस तरह मारा है ?"

"चिमटे से मारा है।"

भोलानाथ के हृदय पर जैसे किसी ने हथौड़ा मार दिया। उन्होंने ठंडी साँस भरी और चुप हो गये। सुखदयाल धीरे-धीरे अपने घर की ओर रवाना हुआ; परन्तु उसकी बातें ताई के कानों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

बोले—"भाई तनिक बाल-बच्चों को तो बुलाओ, देखने को जी तरस गया।"

सुखदेवी अन्दर को चली; परन्तु पाँव मन-मन के भारी हो गये। सोचती थी—यदि बालक सो गये होते, तो कैसा अच्छा होता सब बातें ढँकी रहतीं। अब क्या करूँ ? इस बदमाश सुक्खू के वस्त्र इतने मैले हैं कि सामने करने का साहस नहीं पड़ता। आँखें कैसे मिलाऊँगी ? रंग में भंग डालने के लिए इसे आज ही आना था ? दो वर्ष बाद आया है; इतना भी न हुआ कि पहले से पत्र ही लिख देता।

इतने में स्वामी विद्यानन्द अन्दर आ गये; पितृ-वात्सल्य ने लज्जा को दबा लिया था। परन्तु, सुखदयाल और भतीजियों के वस्त्र तथा उनके रूप-रंग को देखा, तो खड़े-के-खड़े रह गये। भतीजियाँ ऐसी थीं जैसे चमेली के फूल; और सुक्खू, वही सुक्खू जो कभी मैना के समान चहकता फिरता था, जिसकी बातें सुनने के लिए राह जाते लोग खड़े हो जाते थे, जिसकी नटखटी बातों पर प्यार आता था, आज उदासीनता की मूर्ति बना हुआ था। उसका मुँह इस प्रकार कुम्हलाया हुआ था जिस प्रकार जल न मिलने से वृक्ष कुम्हला जाता है। उसके बाल रूखे थे, और मुँह पर दारिद्र्य बरसता था। उसके वस्त्र मैले-कुचैले थे, और जैसे किसी भिखारी का लड़का हो। स्वामी विद्यानन्द के नेत्रों में आँसू आ गये। सुखदेवी और बालकराम पर घड़ों पानी पड़ गया; खिसियाने-से होकर बोले—"कैसा शरारती है, दिन-रात धूल में खेलता रहता है ?"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

६

सुखदेवी का हृदय काँप गया। वह बैठी थी, खड़ी हो गई, और बोली—"कौन सा चाचा ? गुजरातवाला ?"

"नहीं पालू।"

सुखदेवी और बालकराम दोनों स्तम्भित रह गये। जिस प्रकार बिल्ली को सामने देखकर कबूतर सहम जाता है, उसी प्रकार दोनों सहम गये। आज से दो वर्ष पहले जब पालू साधु बनने के लिये विदा होने आया था, तब सुखदेवी मन में प्रसन्न हुई थी, परन्तु उसने प्रकट ऐसा किया था मानों उसका हृदय इस समाचार से टुकड़े-टुकड़े हो गया है: इस समय उसके मन में भय और व्याकुलता थी, परन्तु मुख पर प्रसन्नता की झलक थी। वह जल्दी से बाहर निकली और बोली—"पालू।"

परन्तु वहाँ पालू के स्थान में एक साधु-महात्मा खड़े थे, जिनके मुख-मण्डल से तेज की किरणें फूट-फूट कर निकल रही थीं। सुखदेवी के मन को धीरज हुआ; परन्तु एकाएक ख्याल आया, यह तो वही है, वही मुँह, वही आँखें वही रंग, वही रूप परन्तु कितना परिवर्तन हो गया है। सुखदेवी ने मुस्कराकर कहा—"स्वामी जी, नमस्कार करती हूँ।"

इतने में बालकराम अन्दर से निकला और रोता हुआ स्वामी जी से लिपट गया। स्वामी जी भी रोने लगे; परन्तु यह रोना दुःख का नहीं, आनन्द का था। जब हृदय कुछ स्थिर हुआ तो

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

सुन्दरता है, इससे विदा हो चुका है; यह बाल्यावस्था ही में वृद्धों की नाई गम्भीर बन गया है। इस अनाथ का उत्तरदायित्व मेरे सिर है, जो इसे यहाँ छोड़ गया, नहीं तो इस दशा को क्यों पहुँचता।" इन्हीं विचारों में झपकी आ गई, क्या देखते हैं कि वही हृषीकेश का पर्वत है, वही कन्दरा। उसमें देवी की मूर्ति है, और वे उसके सम्मुख खड़े रो-रोकर कह रहे हैं—"माता, दो वर्ष व्यतीत हो गये, अभी तक शान्ति नहीं मिली। क्या यह जीवन रोने में ही बीत जायगा ?"

एकाएक ऐसा प्रतीत हुआ जैसे पत्थर की मूर्ति के होठ हिलते हैं। स्वामी विद्यानन्द ने अपने कान उधर लगा दिये। आवाज़ आई—"तू क्या माँगता है, यश ?"

"नहीं, मुझे उसकी आवश्यकता नहीं।"

"तो फिर जगत्-दिखावा क्यों करता है ?"

"मुझे शान्ति चाहिये।"

"शान्ति के लिए सेवा-मार्ग की आवश्यकता है। पर्वत छोड़ और नगर में जा। जहाँ दुःखी जन रहते हैं, उनके दुःख दूर कर। किसी के घाव पर फाहा रख, किसी के टूटे हुए मन को धीरज बंधा फिर तेरा पुत्र है, पहले तू उसकी ही देखरेख कर, अपने कर्त्तव्य का पालन कर, तभी तुझे सच्ची शान्ति प्राप्त होगी।"

यह सुनते ही स्वामी जी के नेत्र से पर्दा हट गया। जागे तो वास्तविक भेद मन पर खुल चुका था—कि मन की शान्ति कर्त्तव्य पालन से मिलती है।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

in Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

स्वामी विद्यानन्द सब कुछ समझ गये; परन्तु उन्होंने कुछ प्रकट नहीं किया, और बोले—"मैं आज अपने पुराने कमरे में सोऊँगा, एक चारपाई डलवा दो।"

रात्रि का समय था। स्वामी विद्यानन्द सुक्खू को लिये हुए अपने कमरे में पहुँचे। पुरानी बातें ज्यों-की-त्यों याद आ गईं। यही कमरा था। जहाँ प्रेम के पाँसे खेले थे; यहीं पर प्रेम के प्याले पिये थे; इसी स्थान पर बैठकर प्रेम का पाठ पढ़ा था, यही वाटिका थी जिसमें प्रेम पवन के मस्त झोंके चलते थे, कैसा आनन्द था, विचित्र काल था, अद्भुत वसन्त-ऋतु थी, उसने शिशिर के झोंके कभी देखे ही न थे। आज वह वाटिका उजड़ चुकी थी, प्रेम का राज्य लुट चुका था! स्वामी विद्यानन्द के हृदय में हलचल मच गई।

परन्तु सुक्खू का मुख इस प्रकार चमकता था जैसे ग्रहण के पश्चात् चन्द्रमा। उसे देखकर स्वामी विद्यानन्द ने सोचा—"मैं कैसा मूर्ख हूँ? ताऊ और ताई जब इस पर सख्ती करते होंगे, जब अकारण इसको मारते-पीटते होंगे, जब इसके सामने अपनी कन्याओं से प्यार करते होंगे, उस समय यह क्या कहता होगा, इसके हृदय में क्या विचार उठते होंगे? यही कि मेरा पिता नहीं है, वह मर गया; नहीं तो मैं इस दशा में क्यों रहता? यह फूल था जो आज धूल में मिला हुआ है। इसके हृदय में धड़कन है, नेत्रों में त्रास है, मुख पर उदासीनता है, वह चंचलता जो बच्चों का विशेष गुण है, इसमें नाम को नहीं; वह हठ जो बालकों की

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

अभ्यास के लिये—

१—विद्यानन्द (पालू) का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

२—इस कहानी का सारांश लिखिए ।

३—'सच्ची शान्ति कर्त्तव्य-पालन से ही प्राप्त होती है'—आप लेखक के इस विचार से कहाँ तक सहमत हैं ।

४—सुदर्शन जी का परिचय दीजिए और उनकी भाषा-शैली एवं कहानी-कला पर अपने विचार प्रकट कीजिए ।

Sachi Samti
सच्ची शान्ती

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

१२—हंस का नीर-क्षीर विवेक

[लेखक—आचार्य पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी]

आचार्य पं० महावीर प्रसाद जी द्विवेदी से प्रत्येक हिन्दी-भाषा-भाषी परिचित हैं। आपका जन्म रायबरेली प्रान्त के दौलतपुर ग्राम में सम्वत् १९२१ वि० में हुआ था। प्रारंभ में आप जी० आई० पी० रेलवे में हेडक्लर्क थे और काफी वेतन पाते थे, किन्तु मातृभाषा हिन्दी की सेवा के हित आपने इस नौकरी को छोड़ 'सरस्वती' मासिक-पत्रिका का संपादन-भार स्वीकार किया। संवत् १९६० से १९७३ वि० तक आपने इस कार्य को बड़ी योग्यतापूर्वक निबाहा। इस बीस वर्ष के दीर्घ संपादन-काल में आपने हिन्दी-साहित्य की बहुमुखी सेवाएँ की। एक ओर तो आपने हिन्दी लेखकों के व्याकरण-शिक्षक बनकर हिन्दी भाषा और गद्य-शैली का रूप स्थिर किया और आलोचनाशास्त्र की नींव डाली; दूसरी ओर खड़ी बोली में कविता करने का पथप्रदर्शन कर अनेक कविरत्नों की सृष्टि की। वर्तमान हिन्दी के निर्माण का श्रेय भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के पश्चात् आप ही को है। द्विवेदी जी ही आधुनिक युग के आचार्य हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

आचार्य द्विवेदी को सत्तरवीं वर्षगाँठ हिन्दी-संसार में बड़े समारोह से मनाई गई थी। इस शुभ अवसर पर 'नागरी-प्रचारिणी-सभा, काशी' ने 'द्विवेदी-अभिनन्दन' नामक वृहद् ग्रंथ समर्पण कर तथा प्रयाग के साहित्यिकों ने द्विवेदी-मेला की नींव डालकर आचार्य जी के प्रति अगाध सम्मान एवं कृतज्ञता का परिचय दिया।

द्विवेदी जी संस्कृत, फ़ारसी, उर्दू अंग्रेजी प्रभृति भाषाओं के पंडित, सुलेखक और उत्कृष्ट समालोचक एवं कवि हैं। 'रघुवंस', 'हिन्दी महाभारत', 'कुमारसंभव', 'किरातार्जुनीय' आदि संस्कृत-ग्रंथों का, तथा 'वेकन-विचार-माला', 'शिक्षा,' 'स्वाधीनता,' प्रभृति अंग्रेजी ग्रन्थों का सुन्दर अनुवाद किया है। आपके स्वतन्त्र ग्रंथों में—'अद्भुत आलाप', 'रसज्ञरंजन', 'साहित्यसीकर', 'विचित्र चित्रण' प्रभृति निबन्धसंग्रह तथा 'कालिदास की निरंकुशता', 'संपत्तिशास्त्र', 'हिन्दीभाषा की उत्पत्ति' आदि विशेष प्रसिद्ध हैं। आपकी गद्य-शैली व्याकरणसम्मत, परिमार्जित और विषयानुकूल परिवर्तनशील हैं।

ओज और सुबोधता उसकी प्रधान विशेषता है। भावप्रकाशन के भेद से उनके नाम व्यंगात्मक, विचारात्मक और गवेषणात्मक स्थिर किए गए हैं। आपका शब्द-भण्डार बड़ा विस्तृत है जिसमें संस्कृत के तत्सम, तद्भव, देशज आदि शब्द सम्मिलित हैं। व्यंग्य के लिए उर्दू के प्रचलित शब्दों का भी आप प्रयोग करते हैं।

साहित्य का यह महारथी हिन्दी की अभूतपूर्व सेवा कर सं० १९९५ वि० को परलोकवासी हुआ।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

संस्कृत-साहित्य में हंस, पिक, भ्रमर और कमल की बड़ी धूम है। बिना इनके कवियों की कविता फीकी हो जाती है। कोई पुराण, कोई काव्य, कोई नाटक ऐसा नहीं जिनमें इनका जिक्र न हो। सब में कवियों ने एक न एक विशेषता भी रक्खी है। यथा—हंस; मिले हुए दूध और पानी को अलग-अलग कर देता है; दूध पी लेता है और पानी पीना छोड़ देता है। पिक अपने बच्चे कौओं के घोसलों में रख आता है और बड़े होने तक उन्हीं से उनकी सेवा कराता है। भ्रमर, आम की मंजरी से अतिशय प्रेम रखता है, पर चम्पे के पास तक नहीं जाता। कमल चन्द्रमा से द्वेष रखता है, उसकी विद्यमानता में वह कभी नहीं खिलता; पर सूर्य का वह परम भक्त है। इनमें से दो एक बातें तो निःसन्देह सही हैं; पर औरों के विषय में मतभेद हैं। उदाहरण के लिए हंस और उसके नीर-क्षीर विषयक विवेक को लीजिए।

संस्कृत काव्यों में जगह-जगह पर यह लिखा हुआ है कि हंस में यह शक्ति है कि वह दूध और पानी को अलग-अलग कर देता है। पर दूध और पानी को अलग-अलग करते उसे किसी ने नहीं देखा। शायद किसी ने देखा भी हो, पर इस विषय का कोई लेख कहीं नहीं मिलता। यह प्रवाद सात समुद्र पार करके अमेरिका पहुँचा। वहाँ के विद्वानों को हंस का यह अद्भुत गुण सुन कर आश्चर्य हुआ। पर वे लोग ऐसी-ऐसी बातों को चुपचाप मान लेने वाले नहीं इस देश में हंस-विषयक यह प्रवाद हजारों वर्षों से सुना जाता है। पर इसके सत्यासत्य की जाँच आज तक किसी ने

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

नहीं की। यदि किसी ने की भी हो तो उसका फल कहीं लिपिबद्ध नहीं मिलता। अमेरिका में हर्वार्ड नाम का एक विश्वविद्यालय है। उसमें लाँगमैन साहब एक अध्यापक हैं। आपने हंस के इस अलौकिक गुण की परीक्षा का प्रण किया। इसलिये आपने कई हंस मँगा कर पाले और अनेक तरह से उनकी परीक्षा की। पर नीर को क्षीर से अलग करने में उन्होंने हंस को असमर्थ पाया, तो हंस के नीर-क्षीर विवेक-विषयक वाक्यों की क्या संगति हो? इस के विषय में दो एक वाक्य देखिए—

नीर-क्षीर-विवेके हंस्यालस्यं त्वमेव तनुषे चेत्।
विश्वास्मिन्नधुनान्यः कुलव्रतं पालयिष्यति कः॥

—भामिनीविलास।

हे हंस, यदि क्षीर को नीर से अलग कर देने का विवेक तू ही शिथिल कर देगा तो, फिर इस जगत् में अपने कुलव्रत का पालन और कौन करेगा?

यो हनिष्यति वध्यं त्वां रक्ष्यं रक्षति च द्विजम्। ब्राह्मण को
हंसो हि क्षीरमादत्ते तन्मिश्रा वर्जयत्यपः॥

त्यप: —शकुन्तला।

हंस जिस तरह क्षीर ग्रहण कर लेता है और उसमें मिला हुआ पानी पड़ा रहने देता है, वैसे ही यह भी वध करने योग्य मुझे मारेगा और रक्षणीय द्विज की रक्षा करेगा।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

प्रज्ञास्तु जल्पतां पुंसां श्रुत्वा वाचः शुभाऽशुभाः ।
गुणवद्वाक्यमादत्ते हंसः क्षीरमिवाम्भसः ॥

—महाभारत—आदिपर्व

लोगों के मुँह से भली-बुरी बातें सुनकर बुद्धिमान् आदमी अच्छी बात को वैसे ही ग्रहण कर लेता है। जैसे हंस जल में से दूध को ग्रहण कर लेता है।

इसका कारण टीकाकार सायनाचार्य ने यह बतलाया है कि जल-मिश्रित दूध के वर्तन में हंस जब अपनी चोंच डालता है, तब मुख-गत रस-विशेष का योग होते ही जल और दूध अलग-अलग हो जाते हैं, या अलग-अलग जान पड़ते हैं।

इस पिछले अवतरण से यह सूचित होता है कि किसी-किसी की राय में हंस के मुँह में एक प्रकार का रस होता है। उस रस का मेल होने से पानी और दूध अलग-अलग हो जाते हैं। यदि इस रस में खट्टापन हो तो दूध का जम कर दही हो जाना संभव है। पर इसके लिये कुछ समय चाहिए। क्या हंस की चोंच दूध के भीतर पहुँचते ही दूध जम जाता होगा ? सम्भव है, जम जाता हो, पर यह बात समझ में नहीं आती कि पात्र में भरे हुए जल-मिश्रित दूध में से जल को अलग करके दूध को हंस किस तरह पी लेता है। अध्यापक लांगमैन की परीक्षा से तो यह बात सिद्ध नहीं हुई।

अमेरिका के एक और विद्वान् ने हंस के नीर-क्षीर-विषयक प्रवाद का विचार किया है। आपका नाम है डाक्टर काम्मस।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

आप वाशिंगटन में रहते हैं। आपका मत कि हंस के मुँह की बनावट ऐसी है जब वह कोई चीज खाता है, तब उसका रस-मय पतला अंश उसके मुँह के बाहर गिर पड़ता है और कड़ा अंश पेट में चला जाता है। आपके मत में दूध से मतलब इसी कड़े अंश से है। बहुत रसीली चीज के कठोर अंश का बाहर वह आना सम्भव जरूर है पर किसी चीज के कठोर अंश का अर्थ दूध करना हास्यास्पद है।

अच्छा हंस रहते कहाँ हैं और खाते क्या हैं ? हंस बहुत करके इसी देश में पाये जाते हैं। उनका सबसे प्रिय निवासस्थान मानसरोवर है। यह सरोवर हिमालय पर्वत के ऊपर है। सुनते हैं, यह तालाब बहुत सुन्दर है। इसका जल मोती के समान निर्मल है। यहीं हंस अधिकता से रहते हैं और यहीं वे अंडे देते हैं। जाड़ा आरम्भ होते ही, शीताधिक्य के कारण, मानसरोवर छोड़ करके नीचे चले आते हैं, पर विन्ध्याचल के आगे वे नहीं बढ़ते। विन्ध्य और हिमालय के बीच ही में निर्मल जल-राशि-पूर्ण तालाबों और नदियों के किनारे वे रहते हैं। चैत्र-वैशाख में वे हिमालय की तरफ चले जाते हैं। जलाशयों में कमलों की अधिकता होती है, वे हंसों को अधिक प्रिय होते हैं। वहीं वे अधिक रहते हैं। उनके शरीर का रंग सफ़ेद होता है और उनके पैर लाल होते हैं। चोंच का रंग भी लाल होता है, डील-डौल उनका बतक से कुछ बड़ा होता है।

यदि हंस दूध पीते हैं, तो दूध उनको मिलता कहाँ से है ?

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

मानसरोवर में उन्होंने गायें या भैंसें तो पाल नहीं रक्खीं और न हिन्दुस्तान ही के किसी तालाब या नदी में उनके दूध पीने की कोई सम्भावना है! इससे गाय-भैंस का दूध पीना हंसों के लिए असम्भव-सा जान पड़ता है। कोई-कोई कवि-जन कहते हैं कि हंस मोती चुगते हैं। पर मोती भी मानसरोवर में नहीं पैदा होते। यदि उसमें मोतियों का पैदा होना मान भी लिया जाय तो हिन्दुस्तान के तालाबों में, जहाँ वे कुछ दिन रहते हैं, मोतियों का पैदा होना आज तक नहीं सुना गया। हाँ एक बार हमने कहीं पढ़ा था कि पंजाब, या राजपूताने की किसी झील में कुछ शुक्तियाँ ऐसी मिली थीं जिनमें मोती थे, पर क्या जितने हंस मानसरोवर छोड़ कर नीचे आते हैं वे सिर्फ उसी झील में जाकर रहते और मोती चुगते हैं? वहाँ भी यदि मोती बिखरे हुए पड़े हों, तभी उन्हें हंस-गण आसानी से चुगेंगे? पर यदि वे शुक्तियों के भीतर ही रहते हों तो उनको फोड़ कर मोती निकालना हंसों के लिए जरा कठिन काम होगा। पर इन सम्भावनाओं का कुछ अर्थ नहीं। निर्मल जल की उपमा मोती से दी जाती है और मानसरोवर का जल अत्यन्त निर्मल है। इससे उसके मोती सदृश निर्मल जल की उपमा मोती से देते-देते लोगों ने जल को ही मोती मान लिया हो तो कोई आश्चर्य नहीं। अतएव—"की हंसा मोती चुगै की भूखे रह जाय" आदि में मोती चुगने से मतलब मोती के समान निर्मल जल पीने से जान पड़ता है। यह पीने की बात हुई। अब खाने की बात का विचार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कीजिए। नैषधचरित्र के पहले सर्ग में लिखा है कि राजा नल ने एक हंस पकड़ा। हंस आदमी की बोली बोलता था (उसने राजा से कहा—"फलेन मूलेन वारिभूरुहो मुनेरिवेत्थं मम यस्य वृत्तयः।" अर्थात् पानी में पैदा होने वाले पौधों और बेलों के फलों और कन्दों से मैं मुनियों के समान अपना जीवन-निर्वाह करता हूँ।) भामिनी-विलास में जगन्नाथराय ने हंस की एक अन्योक्ति कही है यथा—

भुक्ता मृणालपटली भवता निपीता-
न्यम्बूनि यत्रनलिनानि निषेवितानि।
रे राजहंस! वद तस्य सरोवरस्य
कृत्येन केन भवितासि कृतोपकार?

रे राजहंस, जिसके आश्रय में रह कर तूने मृणालदण्डों को खाया, जल-पान किया, और नलिनों का स्वाद लिया उस सरोवर का तू किस प्रकार प्रत्युपकार करेगा?

इन अवतरणों से प्रकट है कि हंस चाहे मोती चुगते और दूध पीते ही क्यों न हों; पर वे पानी भी पीते हैं और जलरुह पौधों के फल, फूल, मूल, नाल, मृणाल बिस-तन्तु भी खाते हैं। हंसों को जलपूर्ण जलाशयों में रहना अधिक पसन्द है। वहाँ उनके खाने की सामग्री, विशेष करके मृणालदंड, उनके भीतर के विस-तन्तु और उनसे निकलने वाला रस है। कमल-नाल को तोड़ने से उसके भीतर से सफेद-सफेद सूत-सी एक चीज निकलती है उसी को बिस-तन्तु कहते हैं। सुनते हैं, उसे हंस बहुत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

खाते हैं। मृणाल-दंड की गाँठों से एक तरह का रस भी निकलता है, वह पतले दूध की तरह सफेद होता है। उसमें कुछ मीठापन भी होता है। उस रस का भी नाम क्षीर है। पेड़ों से निकलने वाले पानी के सदृश सफेद रंग के प्रायः सभी प्रवाही पदार्थों का नाम क्षीर है। यहाँ तक कि गूलर, बरगद, थूहड़, और मदार तक से निकलने वाली सफेद चीज़ को हम लोग दूध ही कहते हैं। मृणाल-दंड पानी में रहते हैं। उन्हीं के भीतर से क्षीर-तुल्य सफेद रस निकलता है। उसी रस को हंस लोग पीते या खाते हैं। अतएव, इस तरह, पानी के भीतर से निकालकर हंसों का दूध पीना जरूर सिद्ध है। अनुमान होता है कि आरंभ में इसी प्रकार के नीर-क्षीर के पृथक्त्व से पंडितों का मतलब रहा होगा। धीरे-धीरे लोग यह बात भूल गए। उनकी यह समझ हो गई कि मामूली जल-मिश्रित दूध से हंस जल को पृथक् कर देते हैं और जल को छोड़ कर दूध भर पी जाते हैं।

अभ्यास के लिये

१—क्या हंस में दूध और पानी अलग-अलग कर देने की शक्ति है ?

२—सायानाचार्य ने हंस के नीर-क्षीर विवेक पर क्या कारण लिखा है ?

३—इस विषय में पाश्चात्य विद्वानों ने जो खोज की उससे क्या बात सिद्ध हुई ?

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

४—हंस कहाँ रहते हैं और क्या खाते-पीते हैं ?

५—'की हंसा मोती चुगै की भूखे रह जाय' का क्या अर्थ है उस कथन पर अपनी सम्मति दीजिए।

६—पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी के विषय में क्या जानते हैं ? इनकी साहित्यिक महत्ता और गद्य-शैली की विशेषताओं पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

---

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

१३—पेनिसिलिन

[लेखक—श्री भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव]

विज्ञान संबंधी लेखों द्वारा हिन्दी भाषा की श्री-वृद्धि करने वाले व्यक्तियों में श्री भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव, एम० एस-सी० का नाम विशेष उल्लेखनीय है। आप किशोरी रमण कालेज, मथुरा में भौतिक विज्ञान के प्रसिद्ध अध्यापक हैं। आपके सुन्दर वैज्ञानिक लेख प्रायः प्रति सप्ताह 'आज' साप्ताहिक में प्रकाशित होते रहते हैं। इधर आपके लेखों का एक संग्रह "विज्ञान के चमत्कार" नाम से ज्ञान-मण्डल, काशी द्वारा प्रकाशित भी हो चुका है, और एक दूसरी पुस्तक परमाणु-शक्ति भी शीघ्र ही निकलने वाली है। इन लेखों का मुख्य उद्देश्य जनता के बीच विज्ञान के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करना है। आपकी भाषा सुबोध और सरल हिन्दी का निखरा स्वरूप है। इनकी विषय-प्रतिपादन की शैली अत्यन्त ही आकर्षक है। प्रस्तुत 'पेनिसिलिन' पाठ 'विज्ञान के चमत्कार' नामक आपकी पुस्तक से ही उद्धृत किया गया है।

औषधि विज्ञान के इतिहास में सम्भवतः 'पेनिसिलिन' का आविष्कार एक अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण घटना है। समस्त कीटाणु नाशक औषधियों में 'पेनिसिलिन' का स्थान सर्वोपरि है। बीसियों प्राणनाशक व्याधियों के कीटाणुओं को यह निश्चय

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

रूप से तथा कम से कम समय में नष्ट कर सकता है। अन्य कीटाणुनाशक औषधियों के इस्तेमाल के उपरान्त रोगी पर उसके कुछ हानिकर प्रभाव रह जाते हैं किन्तु पेनिसिलिन इस दोष से सर्वथा मुक्त है।

पेनिसिलिन के अविष्कार की कहानी स्वयं बड़ी रोचक है। लगभग १७ वर्ष पूर्व १९२९ में सेन्ट मेरी अस्पताल लन्दन के प्रोफ़ेसर एलेक्जेन्डर फ्लेमिंग 'कार्बन्कल' के तथा रुधिर को विषाक्त बनाने वाले कीटाणुओं का अध्ययन कर रहे थे। टेस्ट-ट्यूब के अन्दर इन्हीं कीटाणुओं को उत्पन्न करने का प्रयोग ये कर रहे थे। इस सिलसिले में थोड़ी-थोड़ी देर के उपरान्त प्रोफ़ेसर फ्लेमिंग टेस्ट-ट्यूब को खोल कर अनुवीक्षण-यन्त्र द्वारा कीटाणुओं का निरीक्षण करते थे। हवा में फफूँद उत्पन्न करने वाले कुछ कीटाणु भीतर पहुँच गए। फलस्वरूप एक दिन आपने देखा कि एक टेस्ट-ट्यूब के अन्दर मख़मली फफूँद सी लग गई थी। अनुवीक्षण-यन्त्र द्वारा ध्यान से परीक्षा करने पर उन्होंने पाया कि फफूँद के चारों ओर के कीटाणु तेज़ी के साथ विनष्ट होते जा रहे थे। उन्होंने सोचा कि अवश्य ही इस फफूँद में कुछ ऐसे तत्त्व मौजूद हैं जो इन कीटाणुओं के लिए विशेष रूप से घातक साबित होते हैं। इसी पदार्थ को पेनिसिलिन का नाम दिया गया। तदुपरान्त प्रोफ़ेसर फ्लेमिंग ने इस फफूँद का थोड़ा-सा भाग तार के टुकड़े की सहायता से बाहर निकाला और उसे एक दूसरे टेस्ट-ट्यूब में विशुद्ध अवस्था में बढ़ने के लिए रख

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

दिया। फिर प्रयोगों द्वारा उनने यह दिखलाया कि जिस द्रव में यह फफूँद पैदा हुई उसी के अन्दर 'पेनिसिलिन' का निर्माण हुआ और फफूँद का कीटाणु-नाशक गुण इसी पेनिसिलिन के कारण है।

किन्तु उन दिनों पेनिसिलिन विशुद्धावस्था में तैयार नहीं की जा सकी थी तथा वह गाढ़े रूप में भी प्राप्त न हो सकी। इसीलिए पूरे दस वर्ष तक इस रामबाण औषधि का पूरा फ़ायदा हम उठा न पाए थे। बाद में आक्सफ़ोर्ड के प्रोफेसर फ्लोरे ने पेनिसिलिन को गाढ़ा बनाने की विधि मालूम की और तभी प्रयोगों द्वारा उन्होंने प्रमाणित किया कि गाढ़ी अवस्था की पेनिसिलिन का प्रयोग रोग कीटाणुओं का नाश करता है साथ ही रोगी पर यह किसी प्रकार का हानिकारक प्रभाव नहीं डालता। युद्ध के दौरान में पेनिसिलिन का सर्व-प्रथम प्रयोग शरीरांगों के घाव को कीटाणु रहित करके उन्हें स्वास्थ रखने के निमित्त हुआ था।

तदुपरान्त आक्सफोर्ड के प्रोफ़ेसर फ्लोरे ने चूहों के शरीर में पेनिसिलिन को द्रव के रूप में प्रविष्ट कराकर उनके कीटाणु नाशक गुण को साबित किया। सुई द्वारा प्रोफ़ेसर फ्लोरे ने पेनिसिलिन के इंजेक्शन की विधि निकाली। सन् १९४१ में इस सिलसिले में प्रोफेसर फ्लोरे ने दस ऐसे मनुष्यों को चुना जिनके रोग 'सल्फो नामाइड' द्वारा भी दूर न हो सके थे। पेनिसिलिन के प्रयोग से इन सभी व्यक्तियों को लाभ हुआ। प्रोफेसर फ्लोरे ने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अब पेनिसिलिन निर्माण के लिए परामर्श देने के लिए अमेरिका आमन्त्रित किए गए। शीघ्र ही अमेरिका में एक बड़े पैमाने पर पेनिसिलिन तैयार करने के लिए फैक्टरियाँ खुल गईं, और सन् १९४३ में सर्वत्र मित्र राष्ट्रों की सेना में आहत तथा बीमार सैनिकों की औषधि उपचार के लिए पेनिसिलिन का प्रयोग प्रचुरता से होने लगा।

अधिक पेनिसिलिन तैयार करने के लिए काफ़ी झंझटों का सामना करना पड़ता है और देर भी लगती है। चीनी के शर्बत पर फफूंद धीरे-धीरे हफ़्तों उगाया जाता है। इसके लिए ख़ास ढंग के काँच के बर्तन (फ़लास्क) का प्रयोग किया जाता है। फ़लास्क के मुँह पर रुई रख देते हैं ताकि फफूँद उत्पन्न करने वाले कीटाणु अन्दर जाकर फफूंद का निर्माण कर सकें। लगभग १५ दिनों तक फफूँद बढ़ते रहते हैं। इस प्रकार नमदे की तरह एक मोटी तह फफूंद की एक शर्बत पर जम जाती है। इस स्टेज पर नीचे तह में पेनिसिलिन समाविष्ट हो जाती है। तदुपरान्त इस द्रव से पेनिसिलिन शुद्धावस्था में प्राप्त की जाती है। फिर इसे गाढ़ा बनाया जाता है। द्रव से पेनिसिलिन प्राप्त करने तथा उसे गाढ़ा बनाने के लिए शीघ्रता तथा सावधानी की आवश्यकता पड़ती है। अन्यथा द्रव से पेनिसिलिन अपने आप विनष्ट हो जाता है।

पेनिसिलिन के गुणों के सम्बन्ध में किए गए नूतनतम अनुसंधानों से पता चला है कि गर्दन तोड़ ज्वर, कार्न्क्ल,

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

न्यूमोनिया, विषाक्त गैस के प्रभाव, उपदंश तथा विषाक्त चोट के लिए पेनिसिलिन रामबाण औषधि साबित होती है। किन्तु राजयक्ष्मा, मोतीझाला, ज्वर, पेचिश तथा मलेरिया के कीटाणुओं पर पेनिसिलिन का प्रभाव नहीं पड़ता।

साधारणतः पेनिसिलिन घोल के रूप में शरीर के अन्दर इंजेक्शन द्वारा प्रविष्ट कराया जाता है। इंजेक्शन या तो रक्त-वाहिनी शिराओं में दिया जाता है, या उसे जाँघों के पिछले भाग की मांसपेशियों में डाला जाता है। एक बार पेनिसिलिन प्रविष्ट करा देने पर लगभग तीन घंटे तक वह शरीर में रहता है। फिर मूत्र के रास्ते वह बाहर निकल जाता है। अतः पेनिसिलिन द्वारा उपचार करने में पेनिसिलिन की प्रचुर मात्रा की आवश्यकता पड़ती है, बार-बार पेनिसिलिन का इंजेक्शन देना पड़ता है। एक बार के इंजेक्शन के लिए १५,००० यूनिट पेनिसिलिन की ज़रूरत होती है।

विषाक्त हुए चोट (सेप्टिक) पर मलहम के साथ पेनिसिलिन मिलाकर लगाते हैं। किन्तु गहरी चोट में भीतर तक मलहम का पेनिसिलिन पहुँच नहीं पाता। अतः ऐसी दशा में इंजेक्शन की ही शरण लेनी पड़ती है। मुँह के रास्ते पेनिसिलिन खाने के लिए साधारणतः नहीं दिया जाता, क्योंकि मुँह के अन्दर तथा पेट में पाए जाने वाले अम्लतत्त्व के संसर्ग में आने पर तुरन्त ही पेनिसिलिन नष्ट हो जाती है।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

गर्दन तोड़ ज्वर में पेनिसिलिन का इंजेक्शन सीधे रीढ़ के अन्दर दिया जाता है। इस दशा में रक्त-वाहिनी शिराओं में इंजेक्शन देने से विशेष लाभ नहीं होता, क्योंकि रुधिर में से रीढ़ के अन्दर पेनिसिलिन आसानी से नहीं पहुँच पाती।

पेनिसिलिन चिकित्सा में इस बात का विशेष ध्यान रखना पड़ता है कि हर बार शरीर के अन्दर औषधि की पूरी मात्रा पहुँचे क्योंकि कुछ बीमारियों के कीटाणु पेनिसिलिन अपर्याप्त मात्रा के संसर्ग में आने पर एक प्रकार की सुरक्षित अवस्था अख्तियार कर लेते हैं और तब पेनिसिलिन का इन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

हड्डी टूटने अथवा शरीरांगों के विक्षत हो जाने पर भी पेनिसिलिन का इस्तेमाल विशेष उपयोगी साबित होता है।

पेनिसिलिन साधारणतः रबर की कार्क लगी छोटी-छोटी शीशियों में आती है। प्रत्येक शीशी में १ लाख यूनिट पेनिसिलिन की मौजूद रहती है। इसे शुद्ध परिस्रवित पानी में मिलाकर या नमक के घोल में मिलाकर इंजेक्शन के लिए इस्तेमाल करते हैं। रीफ्रिजरेटर के अन्दर बर्फ़ के टेम्प्रेचर पर ही इसे रखा जाता है अन्यथा इसकी शक्ति क्षीण हो जाती है। पाउडर के रूप में भी पेनिसिलिन फ़र्म द्वारा तैयार की जाती है। इस पाउडर को नमक के घोल में मिलाकर इंजेक्शन के लिए तैयार कर लेते हैं।

पेनिसिलिन का रासायनिक विश्लेषण इस उद्देश्य से किया जा रहा है कि उसे रसायनशाला में कम से कम समय में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कृत्रिम साधनों द्वारा तैयार किया जा सके। अचूक होने के नाते पेनिसिलिन की माँग बहुत ज्यादा है। किन्तु अमेरिका पर्याप्त मात्रा में पेनिसिलिन तैयार कर सकने में असमर्थ है। हमारे देश में भी सायन्टिफिक-रिसर्च-इन्सटीट्यूट (Scientific-Research-Institute) में प्रचुर मात्रा में पेनिसिलिन तैयार करने के प्रयत्न किए जा रहे हैं। जिस दिन वैज्ञानिक कृत्रिम ढंग पर पेनिसिलिन तैयार कर पायगा, उस दिन से गर्दन तोड़ ज्वर, कार्बन्कल, न्यूमोनिया सरीखे घातक रोगों से मानव जाति को सदा के लिए छुटकारा मिल जायगा।

अभ्यास के लिए

१—पेनिसिलिन क्या है ? यह इतनी उपयोगी क्यों है ?

२—पेनिसिलिन का आविष्कार किस प्रकार हुआ ?

३—प्रोफेसर फ्लोरे ने पेनिसिलिन को और अधिक उपयोगी किस प्रकार बना दिया ?

४—किन किन रोगों में पेनिसिलिन रामबाण सिद्ध हुआ है ?

५—पेनिसिलिन चिकित्सा में किस बात का ध्यान रखना पड़ता है ?

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

१४—प्रताप-प्रतिज्ञा

[लेखक—श्री जगन्नाथ प्रसाद 'मिलिन्द']

श्री 'मिलिन्द' जी हिन्दी के एक उदीयमान कवि, नाटककार और लेखक हैं आप ग्वालियर राज्य के मुरार स्थान के निवासी हैं। आपके गद्य-लेख तथा कविताएँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं। आपकी शैली भाव-पूर्ण और ओजस्विवनी है। आपकी भाषा में संस्कृत के तत्सम शब्दों की प्रचुरता रहती है। आप विश्व-कवि रवीन्द्र नाथ टागुर के 'शान्ति-निकेतन' में हिन्दी के अध्यापक भी रह चुके हैं। 'प्रताप-प्रतिज्ञा' नाटक आपका बहुत प्रसिद्ध है। प्रस्तुत अंश इसी नाटक से उद्धृत किया गया है।

[उदयपुर। प्रताप का प्रासाद। प्रभात। विचारमग्न प्रतापसिंह। सहसा सामन्त का प्रवेश।]

सामन्त—राणा!

प्रताप—(चौंक कर) कौन? सामन्त जी, कहिए क्या सम्वाद है?

सामन्त—क्या कहूँ? बस अब नहीं देखा जाता। जी चाहता है, जन्म-जन्मान्तर के लिए आँखे मूँद लूँ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

प्रताप—क्यों-क्यों ? क्या कोई विशेष घटना...........।

सामन्त—नहीं राणा, यही नित्य की दुर्दशा प्रतिदिन नई मालूम होती है । काँटे की तरह इसकी कसक पल-पल पर अपरिचित-सी, नवीन-सी जान पड़ती है ।

प्रताप—राजमहल का कोई विशेष सम्वाद है ।

सामन्त—राजमहल ? उसे राजमहल न कहो राणा, उसके वक्षस्थल पर वासनाओं का वह अविराम ताण्डव देखकर भी क्या उसे पिशाचपुरी न कहना चाहिए ? देखते नहीं हो राणा, आज बाप्पा रावल का वह उज्ज्वल राज-मुकुट कायरता के कलंक से काला हो रहा है । मखमली म्यान में भुवन-विजयी वीरों की करारी कटारी पर जंग चढ़ रहा है । क्या यह सब चुपचाप सह लेने की बातें हैं ? देव ! उसदिन का अमर इतिहास क्या सहज ही में भुलाया जा सकता है, जब......(कण्ठावरोध)

प्रताप—हाँ हाँ, कहो भाई, जब......

सामन्त—जब स्वाधीनता की आराध्यदेवी, स्वच्छन्द वायु झकोरों से, स्वर्ण उषा के अधरों से मुक्त मेघ की बूँदों से, तेजस्वी सूर्य-चन्द्र की स्वतन्त्र किरणों से, इसी मरुभूमि पर उतर कर क्रीड़ा किया करती थी, इसी अभागे मेवाड़ की उन्नत रक्त-ध्वजा उसके पावन चरणों के एक-एक चुम्बन पर प्रफुल्ल होकर चित्तौड़-दुर्ग के सर्वोच्च शिखर पर बड़े वेग से फहरा उठती थी, तब मेवाड़ को 'अपना' कहते समय हमारे वीर पूर्वजों की छाती फूल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

जाती थी, मस्तक ऊँचा हो जाता था और आरक्त आँखों के कोनों से सन्तोष और स्वाभिमान की किरणें फूट निकलती थीं। किन्तु अब........।

प्रताप—अब भी मेवाड़ को 'माँ' कहते समय किसे रोमाञ्च न होगा ? क्या कहते हो भाई, हम माँ को भूल गये ? सम्भव है। पर माँ तो हमें नहीं भूली। कल जिसे 'अपनी' कहने में गर्व होता था, उसी को आज कोई केवल इसलिए 'पराई' कैसे कहेगा कि उसे 'अपनी' कहने में लाज लगती है ? क्षुब्ध न हो सामन्त जी ! शक्ति और साधन तो देशभक्ति का शरीर-मात्र है। उसकी अन्तरात्मा तो हृदय का वह उज्ज्वल भाव है, जो हममें उसके लिए पतंगे की तरह मर मिटने का साहस भर देता है।

सामन्त—फिर भी, जिनके कन्धों पर आज चित्तौड़ के उद्धार का भार है, लाखों प्रजा-जनों की उत्सुक आँखें जिनकी विशाल भुजाओं से आशा रखती हैं, उन्हीं को इस प्रकार विलासिता और बुजदिली का जीवन बिताने का क्या अधिकार है ? मेवाड़ का राज-मुकुट इस प्रकार कायरों के मस्तक का भूषण बन कर कब तक अपनी हँसी कराता रहेगा ?

प्रताप—यह प्रजा का प्रश्न है, जनता का अधिकार है। मेवाड़ के सच्चे सैनिक, अधिकारों के लोभ से, सर्वस्व बलिदान नहीं करते। हमारे हृदय में लगन और त्याग की भावना तो हो, सारा संसार क्षण भर में हमारा सहायक बन जायगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

(नेपथ्य में 'हर हर महादेव', 'मेवाड़-पति की जय', 'महाराणा प्रताप की जय' की ध्वनि)

प्रताप—(चौंककर) इस कुसमय में विजय-नाद कैसा ? मेवाड़ के अकिञ्चन सेवक को किसने कहा, 'महाराणा' ? किसकी जय और किसकी विजय ? जननी-जन्मभूमि चित्तौड़ के उद्धार के पहले यह जय-नाद उपहास-सा प्रतीत होता है।

(चन्द्रावत का एक हाथ में मुकुट और दूसरे में तलवार लिये हुए प्रवेश)

प्रताप—(खड़ा होकर) कौन ? चन्द्रावत कृष्णाजी ! आइए मेवाड़ के छोटे से सैनिक को 'महाराणा' कह कर क्या विनोद करने आये हैं ?

चन्द्रावत—महाराणा, यह विनोद नहीं, सत्य है—सूर्योदय की तरह सुन्दर और स्पष्ट । आज चित्तौड़ का भाग जागा है। उदयपुर से उत्सुक वीर आपको बधाई देने आ रहे हैं।

(राजपूतों का प्रवेश)

राजपूत—महाराणा की जय हो !

(प्रताप किंचित संकुचित होते हैं, फिर उनका स्वागत करते हैं।)

सामन्त—(सबको यथास्थान बिठलाकर) सम्भवतः किसी आकस्मिक घटना के आघात से राणा का गृह पवित्र करने को मेवाड़ी वीरों की यह मन्दाकिनी आज इधर से बह निकली है। क्यों न चन्द्रावत जी ?

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

चन्द्रावत—(खड़ा होकर) वीरो, तुम साक्षी हो। आज मैं प्रजा के प्रतिनिधि की हैसियत से वीरवर बाप्पा रावल का यह उज्ज्वल राज-मुकुट—राजपुत्र प्रताप को नहीं—स्वदेश के सच्चे सैनिक को सौंपता हूँ। इसलिए नहीं कि इसे पहन कर राजा प्रजा पर अत्याचार करें, इसलिए नहीं कि इसे पहन कर प्रताप चित्तौड़ को भूल जायँ, इसलिए नहीं कि इसे पहन कर सेवक प्रभु बन जायँ। मैं इसे सैनिक प्रताप को देता हूँ—वीर प्रताप को देता हूँ—व्रती प्रताप को देता हूँ। केवल तेज पर मुग्ध होकर, त्याग को सिर झुका कर, न्याय का भक्त बन कर, मातृभूमि पर मर मिटने की आपकी अमर अभिलाषा से चित्तौड़ के उद्धार की आशा रख कर। वह प्रजा का निर्णय 'नहीं' सुनना नहीं जानता। देव, यह जनता की धरोहर, प्रजा की भेंट स्वीकार कीजिए!

(राजपूत जय-नाद करते हैं। प्रताप घुटने टेक देते हैं।)

प्रताप—आपके आग्रह के आगे सर झुकाना मेरा धर्म है। मैं खूब जानता हूँ, चद्रावत जी, यह काँटो का ताज है, शूलों की सेज है, न्याय की दुधारी तलवार है, त्याग का सर्वोच्च शिखर है। यह मुकुट नहीं, कर्त्तव्य का स्मरण दिलाने वाला चिह्न है। यह जितना उज्ज्वल है, उतना ही कटु है। यह प्रभुता का चिह्न नहीं, सेवा का निशान है; राजकुमारों के विलास का साधन नहीं, वीरों को वलिदान के लिए अग्रसर करने वाला है। मैं इस विष के प्याले को अपने प्रभु की—प्रजा की—आज्ञा से अमृत की तरह पीने को तैयार हूँ।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

(चन्द्रावत सर पर मुकुट रखते हैं, हाथ में तलवार देते हैं। राजपूत जय-नाद करते हैं।)

प्रताप—(तलवार खींच कर) भवानी, तू साक्षी है। जनता-जनार्दन ने आज मुझे अपना सेवक चुना है। मैं आज तुझे छूकर प्रतिज्ञा करता हूँ कि जन्म भर मातृभूमि मेवाड़ के हित में तन, मन, धन सर्वस्व अर्पण करने से मुँह न मोड़ूँगा। सागर मर्यादा, हिमालय गौरव, सूर्य तेज और वायु वेग भले ही छोड़ दे, पर यह प्रताप प्राण छोड़ कर भी प्रण न छोड़ेगा। भाइयो, जब तक चित्तौड़ का उद्धार न कर लूँगा, सत्य कहता हूँ, कुटी में रहूँगा, पत्तल में खाऊँगा और तृणों पर सोऊँगा। आज ही से नहीं, इसी क्षण से—मेरे लिए यह राजप्रासाद, ये स्वर्ण-शृङ्गार और यह आनन्द-विहार तृण से भी तुच्छ हैं। माँ का स्वर्ण-संसार आज श्मशान हो रहा है। प्यारे चित्तौड़ में एक भी दीपक नहीं—उसका सम्मान आज यवनों की पद-रज बन रहा है। क्या अब भी हम सुख की नींद सो सकते हैं ?

(जन-समूहों से खड्गों की झंकार, 'नहीं-नहीं' की ध्वनि)

प्रताप—चित्तौड़ के सपूतो, मेवाड़ के वीरों, आज यदि तुम्हारे उष्ण रक्त में कुछ भी उबाल आता है, तो मेरी प्रतिज्ञा में सहायक बनो !

राजपूत—आपके इङ्गित पर हम हँसते-हँसते मर मिटेंगे।

चन्द्रावत—मेवाड़ के सूर्य, बरसों से जो अभिलाषा इस हृदय में छिपी पड़ी थी, वह आज पूरी हुई। चित्तौड़ की दशा पर तो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

रोते-रोते आँखें अन्धी हो चली थीं, हृदय फटा जाता था। कोई ऐसा नायक नज़र न आता था, जिसके इङ्गित पर मेवाड़ी वीर हँसते-हँसते चित्तौड़ की वलि-वेदी पर अपने प्राण होम कर देते। राणा, तुम्हें पाकर आज हम धन्य हैं, मेवाड़ धन्य है और धन्य है, सीसौदिया वंश !

प्रताप—वीरो ! मेवाड़ के अभिमान ! चित्तौड़ की आशा ! आज तुम्हें पाकर हृदय उत्साह से भर गया है। चित्तौड़ के खंडहरों का शून्य-हृदय हमारी अकर्मण्यता पर हाहाकार कर रहा है। एक बार फिर उसे स्वाधीनता संग्राम के लाल दिन दिखाने को जी चाहता है। आज से मेवाड़ का प्रत्येक पर्वत हमारा दुर्ग, प्रत्येक बन हमारा युद्ध-क्षेत्र और प्रत्येक गुफा हमारा राज-महल होगी। चित्तौड़ का उद्धार हमारा लक्ष्य और वलिदान हमारा मार्ग होगा। 'हर-हर महादेव !' (प्रस्थान)

अभ्यास के लिये

१—राणा प्रताप का चरित्र-चित्रण कीजिए।

२—सामन्त, राणा प्रताप और चन्द्रावत के बीच जो देश-भक्ति की बातें हुईं, उन्हें अपने शब्दों में लिखिए:—

३—निम्नांकित का आशय स्पष्ट कीजिए :—

(क) उसे राज महल न कहो राणा.........कहना चाहिए।

(ख) जब स्वाधीनता की..............फूट निकलती हैं।

(ग) यह मुकुट नहीं.........अग्रसर करने वाला है।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

१५—साहित्य और सामाजिक स्थिति

[लेखक—डा० श्यामसुन्दर दास]

हिन्दी के कर्मठ कार्य-कर्त्ताओं में रायबहादुर डा० श्यामसुन्दर दास जी का नाम अग्रगण्य है। आपका जन्म सं० १९३२ में काशी के लाला देवीदास खन्ना के यहाँ हुआ था। बी० ए० तक की शिक्षा प्राप्त करने के बाद कुछ समय तक आप सेन्ट्रल हिन्दू-कालेज में अध्यापक रहे। फिर कुछ दिन नहर-विभाग और काश्मीर नरेश के यहाँ नौकरी करने के बाद कालीचरन-हाई-स्कूल लखनऊ के हेडमास्टर हुए। इसके बाद आप बहुत समय तक काशी विश्व विद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष रहे। अवकाश प्राप्त करने के दो-तीन वर्ष बाद वह हिन्दी माता का वरद पुत्र—स्वर्गवासी हुआ।

डा० श्यामसुन्दर दास ने हिन्दी प्रचार में अथक सम्पूर्ण जीवन उत्सर्ग कर दिया है। काशी-नागरी-प्रचारणी-सभा आपका प्रधान कीर्ति-स्तम्भ है। सभा के स्थापन काल से लेकर मृत्यु-पर्यन्त आपने हिन्दी की अधिक सेवायें की हैं। आपके ही सम्पादकत्व में हिन्दी शब्दकोष तथा वैज्ञानिक कोष प्रकाशित हुए। आपने सौ से अधिक पुस्तकों का सम्पादन और संकलन किया होगा। वर्षों तक प्राचीन हिन्दी पुस्तकों की खोज भी आप ही की अध्यक्षता में होती रही। साहित्य-सम्बन्धी विभिन्न भाषा-विषयों पर आपने कई उच्चकोटि की पुस्तकें लिखी हैं। इनमें भाषा विज्ञान, साहित्यालोचन, हिन्दी भाषा और साहित्य, रूपक-रहस्य और

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

रोते-रोते आँखें अन्धी हो चली थीं, हृदय फटा जाता था। कोई ऐसा नायक नज़र न आता था, जिसके इङ्गित पर मेवाड़ी वीर हँसते-हँसते चित्तौड़ की बलि-वेदी पर अपने प्राण होम कर देते। राणा, तुम्हें पाकर आज हम धन्य हैं, मेवाड़ धन्य है और धन्य है, सीसौदिया वंश !

प्रताप—वीरो ! मेवाड़ के अभिमान ! चित्तौड़ की आशा ! आज तुम्हें पाकर हृदय उत्साह से भर गया है। चित्तौड़ के खंडहरों का शून्य-हृदय हमारी अकर्मण्यता पर हाहाकार कर रहा है। एक बार फिर उसे स्वाधीनता संग्राम के लाल दिन दिखाने को जी चाहता है। आज से मेवाड़ का प्रत्येक पर्वत हमारा दुर्ग, प्रत्येक बन हमारा युद्ध-क्षेत्र और प्रत्येक गुफा हमारा राज-महल होगी। चित्तौड़ का उद्धार हमारा लक्ष्य और बलिदान हमारा मार्ग होगा। 'हर-हर महादेव !' (प्रस्थान)

अभ्यास के लिये

१—राणा प्रताप का चरित्र-चित्रण कीजिए।

२—सामन्त, राणा प्रताप और चन्द्रावत के बीच जो देश-भक्ति की बातें हुईं, उन्हें अपने शब्दों में लिखिए:—

३—निम्नांकित का आशय स्पष्ट कीजिए :—

(क) उसे राज महल न कहो राणा.........कहना चाहिए।

(ख) जब स्वाधीनता की..............फूट निकलती हैं।

(ग) यह मुकुट नहीं.........अग्रसर करने वाला है।

---

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

१५—साहित्य और सामाजिक स्थिति

[लेखक—डा० श्यामसुन्दर दास]

हिन्दी के कर्मठ कार्य-कर्त्ताओं में रायबहादुर डा० श्यामसुन्दर दास जी का नाम अग्रगण्य है। आपका जन्म सं० १९३२ में काशी के लाला देवीदास खन्ना के यहाँ हुआ था। बी० ए० तक की शिक्षा प्राप्त करने के बाद कुछ समय तक आप सेन्ट्रल हिन्दू-कालेज में अध्यापक रहे। फिर कुछ दिन नहर-विभाग और काश्मीर नरेश के यहाँ नौकरी करने के बाद कालीचरन-हाई-स्कूल लखनऊ के हेडमास्टर हुए। इसके बाद आप बहुत समय तक काशी विश्व विद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष रहे। अवकाश प्राप्त करने के दो-तीन वर्ष बाद वह हिन्दी माता का वरद् पुत्र—स्वर्गवासी हुआ।

डा० श्यामसुन्दर दास ने हिन्दी प्रचार में अथक सम्पूर्ण जीवन उत्सर्ग कर दिया है। काशी-नागरी-प्रचारणी-सभा आपका प्रधान कीर्ति-स्तम्भ है। सभा के स्थापन काल से लेकर मृत्यु-पर्यन्त आपने हिन्दी की अधिक सेवायें की हैं। आपके ही सम्पादकत्व में हिन्दी शब्दकोष तथा वैज्ञानिक कोष प्रकाशित हुए। आपने सौ से अधिक पुस्तकों का सम्पादन और संकलन किया होगा। वर्षों तक प्राचीन हिन्दी पुस्तकों की खोज भी आप ही की अध्यक्षता में होती रही। साहित्य-सम्बन्धी विभिन्न भाषा-विषयों पर आपने कई उच्चकोटि की पुस्तकें लिखी हैं। इनमें भाषा विज्ञान, साहित्यालोचन, हिन्दी भाषा और साहित्य, रूपक-रहस्य और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

गोस्वामी तुलसीदास प्रमुख हैं। आपकी साहित्य-सेवा के ही कारण काशी-विश्वविद्यालय ने डी० लिट्० की उपाधि से आपको विभूषित किया था।

डा० श्यामसुन्दर दास शुद्ध हिन्दी के पक्षपाती थे। आपकी भाषा में संस्कृत के तत्सम शब्दों का बाहुल्य रहता है। उर्दू और मुहावरों का सर्वथा अभाव है। आपकी लेखन-शैली गम्भीर, परिष्कृत एवं विषयानुकूल परिवर्तनशील है। हिन्दी में आप पंचम वर्णों का प्रयोग उचित नहीं समझते और सर्वत्र विंदु से ही काम चलाते थे।

'साहित्य और समाज' आपका एक सुन्दर लेख है।

सामाजिक मस्तिष्क अपने पोषण के लिए जो भाव-सामग्री निकाल कर समाज को सौंपता है, उसी के संचित भंडार का नाम साहित्य है। अतः किसी जाति के साहित्य को हम उस जाति की सामाजिक शक्ति या सभ्यता का निदर्शक कह सकते हैं। वह उसका प्रतिरूप, प्रतिच्छाया या प्रतिबिंब कहला सकता है। जैसी उसकी सामाजिक अवस्था होगी, वैसा ही उसका साहित्य होगा। किसी जाति के साहित्य को देख कर हम यह स्पष्ट बता सकते हैं कि उसकी सामाजिक अवस्था कैसी है, वह सभ्यता की सीढ़ी के किस डंडे तक चढ़ सकी है। साहित्य का मुख्य उद्देश्य विचारों के विधान तथा घटनाओं की स्मृति को संरक्षित रखना है। पहले पहल अद्भुत बातों को देखने से जो मनोविकार उत्पन्न होते हैं उन्हें वाणी द्वारा प्रदर्शित करने की

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

स्फूर्ति होती है। धीरे-धीरे युद्धों के वर्णन, अद्भुत घटनाओं के उल्लेख और कर्मकांड के विधानों तथा नियमों के निर्धारण में वाणी का विशेष स्थायी रूप में उपयोग होने लगता है। इस प्रकार वह सामाजिक जीवन का एक प्रधान अंश हो जाती है।

एक विचार को सुन या पढ़ कर दूसरे विचार उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार विचारों की एक शृंखला बंध जाती है, जिससे साहित्य के विशेष अंगों की सृष्टि होती है। मस्तिष्क को क्रियमाण रखने तथा उसके विकास और वृद्धि में सहायता पहुँचाने के लिए साहित्य रूपी भोजन की आवश्यकता होती है। जिस प्रकार का यह भोजन होगा वैसी ही मस्तिष्क की स्थिति होगी है। जैसे शरीर की स्थिति और वृद्धि के लिए अनुकूल आहार की अपेक्षा होती है उसी प्रकार मस्तिष्क के विकास के लिये साहित्य का प्रयोजन होता है। मनुष्य के विचारों में प्राकृतिक अवस्था का बहुत भारी प्रभाव पड़ता है। शीतप्रधान देशों में अपने को जीवित रखने के लिए निरंतर परिश्रम करने की आवश्यकता रहती है। ऐसे देशों में रहनेवाले मनुष्यों का सारा समय अपनी रक्षा के उपायों के सोचने और उन्हीं का अवलंबन करने में बीत जाता है। अतएव क्रम-क्रम से उन्हें सांसारिक बातों से अधिक ममता हो जाती है और अपने जीवन का उद्देश्य सांसारिक वैभव प्राप्त करना ही मानने लगते हैं।

जहाँ उसके प्रतिकूल अवस्था है वहाँ आलस्य का प्राबल्य होता है। जब प्रकृति ने खाने, पीने, पहनने, ओढ़ने का सब

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

सामान प्रस्तुत कर दिया, तब फिर उसकी चिंता ही कहाँ रह जाती है। भारत भूमि को प्रकृति देवी का प्रिय और प्रकांड क्रीड़ा-क्षेत्र समझना चाहिए। यहाँ सब ऋतुओं का आवागमन होता रहता है। जल की यहाँ प्रचुरता है। भूमि भी इतनी उर्वरा है कि सब कुछ खाद्य-पदार्थ यहाँ उत्पन्न हो सकते हैं। फिर इसकी चिंता यहाँ के निवासी कैसे कर सकते हैं? इस अवस्था में या तो सांसारिक बातों से हटकर मन, जीवात्मा और परमात्मा की ओर लग जाता है अथवा विलास-प्रियता में फँसकर इंद्रियों का शिकार बन बैठता है। यही मुख्य कारण है कि यहाँ का साहित्य, धार्मिक विचारों या शृंगार रस के काव्यों से भरा हुआ है। अस्तु, जो कुछ मैंने अब तक निवेदन किया है, उससे यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि मनुष्य की सामाजिक स्थिति के विकास में साहित्य का प्रधान योग रहता है।

यदि संसार के इतिहास की ओर हम ध्यान देते हैं तो हमें यह भली भाँति विदित होता है कि साहित्य ने मनुष्यों की सामाजिक स्थिति में कैसा परिवर्तन कर दिया है। पाश्चात्य देशों में एक समय धर्म संबंधी शक्ति पोप के हाथ में आ गई थी। माध्यमिक काल में इस शक्ति का बड़ा दुरुपयोग होने लगा। अतएव जब पुनरुत्थान ने वर्तमान काल का सूत्रपात किया और यूरोपीय मस्तिष्क स्वतंत्रता देवी की आराधना में रत हुआ तब पहला काम जो उसने किया, वह धर्म के विरुद्ध विद्रोह खड़ा करना था। इसका परिणाम यह हुआ कि यूरोपीय कार्यक्षेत्र से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

धर्म का प्रभाव हटा और व्यक्तिगत स्वातंत्र्य की लालसा बढ़ी। यह कौन नहीं जानता कि फ्रांस की राज्यक्रांति का सूत्रपात रूसो और वालटेयर के लेखों ने किया और इटली के पुनरुत्थान का बीज मेज़िनी के लेखों ने बोया। भारतवर्ष में भी साहित्य का प्रभाव इसकी अवस्था पर कम नहीं पड़ा। यहाँ की प्राकृतिक अवस्था के कारण सांसारिक चिन्ता ने लोगों को अधिक न ग्रसा। उनका विशेष ध्यान धर्म की ओर रहा। जब जब उसमें अव्यवस्था और अनीति की वृद्धि हुई, नये विचारों, नई संस्थाओं की सृष्टि हुई। बौद्ध धर्म और आर्य-समाज का प्राबल्य और प्रचार ऐसी ही स्थिति के बीच हुआ। इस्लाम और हिन्दू धर्म जब परस्पर पड़ोसी हुए तब दोनों में से कूप-मंडूकता का भाव निकालने के लिए कबीर, नानक आदि का प्रादुर्भाव हुआ। अतः यह स्पष्ट है कि मानव-जीवन की सामाजिक गति में साहित्य का स्थान बड़े गौरव का है।

अब यह प्रश्न उठता है कि जिस साहित्य के प्रभाव से संसार में इतने उलट-फेर हुए हैं, जिसने यूरोप के गौरव को बढ़ाया, जो मनुष्य समाज का हित-विधायक मित्र है, वह क्या हमें राष्ट्र-निर्माण में सहायता नहीं दे सकता? क्या हमारे देश की उन्नति करने में हमारा पथ-प्रदर्शक नहीं हो सकता? हो अवश्य सकता है यदि हम लोग जीवन के व्यवहार में उसे अपने साथ-साथ लेते चलें, उसे पीछे न छूटने दें। यदि हमारे जीवन का प्रवाह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

सामान प्रस्तुत कर दिया, तब फिर उसकी चिंता ही कहाँ रह जाती है। भारत भूमि को प्रकृति देवी का प्रिय और प्रकांड क्रीड़ा-क्षेत्र समझना चाहिए। यहाँ सब ऋतुओं का आवागमन होता रहता है। जल की यहाँ प्रचुरता है। भूमि भी इतनी उर्वरा है कि सब कुछ खाद्य-पदार्थ यहाँ उत्पन्न हो सकते हैं। फिर इसकी चिंता यहाँ के निवासी कैसे कर सकते हैं ? इस अवस्था में या तो सांसारिक बातों से हटकर मन, जीवात्मा और परमात्मा की ओर लग जाता है अथवा विलास-प्रियता में फँसकर इंद्रियों का शिकार बन बैठता है। यही मुख्य कारण है कि यहाँ का साहित्य, धार्मिक विचारों या शृंगार रस के काव्यों से भरा हुआ है। अस्तु, जो कुछ मैंने अब तक निवेदन किया है, उससे यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि मनुष्य की सामाजिक स्थिति के विकास में साहित्य का प्रधान योग रहता है।

यदि संसार के इतिहास की ओर हम ध्यान देते हैं तो हमें यह भली भाँति विदित होता है कि साहित्य ने मनुष्यों की सामाजिक स्थिति में कैसा परिवर्तन कर दिया है। पाश्चात्य देशों में एक समय धर्म संबंधी शक्ति पोप के हाथ में आ गई थी। माध्यमिक काल में इस शक्ति का बड़ा दुरुपयोग होने लगा। अतएव जब पुनरुत्थान ने वर्तमान काल का सूत्रपात किया और यूरोपीय मस्तिष्क स्वतंत्रता देवी की आराधना में रत हुआ तब पहला काम जो उसने किया, वह धर्म के विरुद्ध विद्रोह खड़ा करना था। इसका परिणाम यह हुआ कि यूरोपीय कार्यक्षेत्र से

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

धर्म का प्रभाव हटा और व्यक्तिगत स्वातंत्र्य की लालसा बढ़ी। यह कौन नहीं जानता कि फ्रांस की राज्यक्रांति का सूत्रपात रूसो और वालटेयर के लेखों ने किया और इटली के पुनरुत्थान का बीज मेज़िनी के लेखों ने बोया। भारतवर्ष में भी साहित्य का प्रभाव इसकी अवस्था पर कम नहीं पड़ा। यहाँ की प्राकृतिक अवस्था के कारण सांसारिक चिन्ता ने लोगों को अधिक न ग्रसा। उनका विशेष ध्यान धर्म की ओर रहा। जब जब उसमें अव्यवस्था और अनीति की वृद्धि हुई, नये विचारों, नई संस्थाओं की सृष्टि हुई। बौद्ध धर्म और आर्य-समाज का प्राबल्य और प्रचार ऐसी ही स्थिति के बीच हुआ। इस्लाम और हिन्दू धर्म जब परस्पर पड़ोसी हुए तब दोनों में से कूप-मंडूकता का भाव निकालने के लिए कबीर, नानक आदि का प्रादुर्भाव हुआ। अतः यह स्पष्ट है कि मानव-जीवन की सामाजिक गति में साहित्य का स्थान बड़े गौरव का है।

अब यह प्रश्न उठता है कि जिस साहित्य के प्रभाव से संसार में इतने उलट-फेर हुए हैं, जिसने यूरोप के गौरव को बढ़ाया, जो मनुष्य समाज का हित-विधायक मित्र है, वह क्या हमें राष्ट्र-निर्माण में सहायता नहीं दे सकता? क्या हमारे देश की उन्नति करने में हमारा पथ-प्रदर्शक नहीं हो सकता? हो अवश्य सकता है यदि हम लोग जीवन के व्यवहार में उसे अपने साथ-साथ लेते चलें, उसे पीछे न छूटने दें। यदि हमारे जीवन का प्रवाह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

दूसरी ओर को है, तब तो हमारा उसका प्रकृति संयोग ही नहीं हो सकता।

अब तक जो वह हमारा सहायक नहीं हो सका है, इसके दो मुख्य कारण हैं। एक तो इस विस्तृत देश की स्थिति एकांत रही है और दूसरे इस से संघशक्ति का संचार जैसा चाहिए वैसा नहीं हो सका है और यह अब तक आलसी और सुखलोलुप बना हुआ है। परन्तु अब इन अवस्थाओं में परिवर्तन हो चला है। इसके विस्तार दुर्गमता और स्थिति की एकांतता को आधुनिक वैज्ञानिक आविष्कारों ने एक प्रकार से निर्मूल कर दिया है और प्राकृतिक वैभव का लाभालाभ बहुत कुछ तीव्र जीवन-संग्राम की सामर्थ्य पर निर्भर है।

यह जीवन संग्राम दो भिन्न सभ्यताओं के संघर्षण से और भी तीव्र और दुःखमय प्रतीत होने लगा है। इस अवस्था के अनुकूल ही जब साहित्य उत्पन्न हो कर समाज के मस्तिष्क को प्रोत्साहित और प्रतिक्रियमाण करेगा तभी वास्तविक उन्नति के लक्षण देख पड़ेंगे और उस का कल्याणकारी फल देश को आधुनिक काल का गौरव प्रदान करेगा।

अब विचारणीय यह है कि वह साहित्य किस प्रकार का होना चाहिए जिससे कथित उद्देश्य की सिद्धि हो सके? मेरे विचार के अनुसार इस समय हमें विशेष कर ऐसे साहित्य की आवश्यकता है, जो मनोवेगों का परिष्कार करने वाला, संजीवनी

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

शक्ति का संचार करने वाला, चरित्र को सुन्दर साँचे में ढालने वाला तथा बुद्धि को तीव्रता प्रदान करने वाला हो। साथ ही इस बात की भी आवश्यकता है कि यह साहित्य परिमार्जित, सरल और ओजस्विनी भाषा में तैयार किया जाय। इसको सब लोग स्वीकार करेंगे कि ऐसे साहित्य का हमारी हिन्दी भाषा में अभी तक बड़ा अभाव है पर शुभ लक्षण चारों ओर देखने में आ रहे हैं, और यह दृढ़ आशा होती है कि थोड़े ही दिनों में उसका उदय दिखाई पड़ेगा, जिससे जन-समुदाय की आँखें खुलेंगी और भारतीय जीवन का प्रत्येक विभाग ज्ञान की ज्योति से जगमगा उठेगा।

अभ्यास के लिये

१—साहित्य क्या है ? मनुष्य की सामाजिक स्थिति के विकास में साहित्य क्या करता है ?

२—साहित्य की शक्ति का वर्णन कीजिए।

३—हमारा साहित्य राष्ट्र-निर्माण में अब तक वांछित सहयोग क्यों नहीं दे सका ?

४—भारत के लिए किस प्रकार के साहित्य की आवश्यकता है ?

५—डा० श्यामसुन्दर दास की साहित्य की सेवाओं का उल्लेख कीजिए और उनकी गद्य-शैली पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

---

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

१६—विश्व-कवि रवीन्द्र

[लेखक—श्री गुलाबराय एम० ए०, एल-एल० बी०]

श्री गुलाब राय हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान् एवं आलोचक हैं। आप मैनपुरी, युक्त प्रान्त के निवासी हैं। कई वर्ष महाराजा छत्रपुर के प्राइवेट सेक्रेटरी रह चुकने पर आपने पेन्शन ग्रहण की। आजकल आप सेंट जौन्स कालेज, आगरा में हिन्दी के अध्यापक हैं और साहित्य-संदेश मासिक पत्र का संपादन भी कर रहे हैं। आपको दर्शन-शास्त्र एवं साहित्य दोनों पर समान अधिकार है। 'नवरस' ग्रन्थ एवं हास्यरस पर लिखे हुए अत्यन्त सफल निबंध आपकी साहित्यिक मर्मज्ञता का पूर्ण परिचय देते हैं और 'तर्क-शास्त्र' 'कर्त्तव्य शास्त्र' तथा 'फिर निराशा क्यों' इत्यादि प्रकाशित दर्शन ग्रन्थ भी अत्यन्त प्रशंसनीय हैं।

प्रबन्ध-प्रभाकर, हिन्दी नाट्य विमर्श, हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास, प्रसाद की कला तथा सिद्धान्त और अध्ययन इनके उत्कृष्ट आलोचनात्मक ग्रंथ हैं। हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में आपके निबन्ध बहुधा प्रकाशित हुआ करते हैं। आपके लेख गंभीर और विचार पूर्ण होते हैं, और आपकी भाषा संस्कृत मिश्रित हिन्दी का उत्कृष्ट रूप है।

हिन्दी निबंधकारों में आपका स्थान विशेष महत्त्व का हैं। प्रस्तुत निबंध 'विश्व-कवि रवीन्द्र' आप ही की कृति है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

निधन = अपने धर्म के लिए मरना,

बंगाल में ठाकुर परिवार साहित्य, संगीत और कला में प्रवीणता के लिए प्रख्यात है। उस घर में सरस्वती और लक्ष्मी अपने स्वाभाविक वैमनस्य को त्याग कर चिरकाल से एक दूसरे का अनुरञ्जन करती हुई विलास करती रही हैं। रवीन्द्र बाबू के जन्म समय इस कुल में तत्कालीन बंगाल की धार्मिक, सामाजिक एवं साहित्यिक जागृति के स्रोत स्वच्छन्दता से परन्तु मर्यादित रूप से बह रहे थे। कवि के पूज्य पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ ब्रह्मोसमाज के एकेश्वरवाद में दृढ़ विश्वासी होते हुए भी हिन्दू संस्कृति के संरक्षक थे। वे बंगाल में ईसाई-धर्म की बाढ़ को, जो कि कालीचरन बेनर्जी, लालबिहारी दे, कृष्णमोहन बेनर्जी, माइकेल मधुसूदन दत्त जैसे नर-रत्नों को अपने प्रवाह में बहा ले गई थी, रोकने में बड़े सहायक हुए।

रवीन्द्र बाबू का जन्म ६ मई सन् १८६१ में हुआ। यह समय बंगाल में साहित्यिक-वसन्त गिना जाता है। इस बात को कहने की आवश्यकता नहीं कि रवीन्द्र बाबू में आगे चल कर इस वसन्तश्री का पुनीत प्रभाव पूर्णतया प्रस्फुटित हुआ।

रवीन्द्र बाबू का बाल्यकाल ठाकुर परिवार के जोड़ासांको नामक प्रासाद में व्यतीत हुआ। यह स्थान कलकत्ता नगर के केन्द्र में है, जहाँ से वे मानव-जीवन के चित्र-विचित्र दृश्यों को पञ्जर-बद्ध पक्षी की भाँति देखा करते थे। वे नौकरों द्वारा खींची हुई रेखा का उल्लंघन नहीं कर सकते थे। उन्होंने 'जीवन-स्मृति' में अपने घर के जंगले में से देखे हुए निकटस्थ कुंड पर स्नान करने वालों का

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

क्रिया-विधान बड़े मनोरंजक शब्दों में लिखा हैं। इतने सम्पन्न परिवार में जन्म लेकर भी उनके बाल्य-काल के जीवन में विलासिता का लेशमात्र भी न था। दश वर्ष की अवस्था तक उन्होंने मोज़े और जूतों का व्यवहार नहीं जाना था। जाड़े के दिनों में एक कुर्ते के ऊपर दूसरा कुर्ता ही पहन लेना पर्याप्त होता था। हाँ, जब कभी उनका दर्ज़ी, नियामत, कुर्ते में जेब लगाना भूल जाता था तो वह अवश्य असन्तोष का कारण होता था। क्योंकि कोई भी ऐसा ग़रीब परिवार नहीं है कि जिसके बच्चे अपने कपड़ों में जेब न रखते हों और कोई भी ऐसा बच्चा नहीं जो अपनी जेबों के लिये कुछ सामग्री न जुटा सकता हो। इस प्रकार की सामग्री में ग़रीब और अमीर बच्चों में कोई अन्तर भी नहीं होता। बचपन में साम्य-वाद की प्रधानता रहती है।

बालक रवीन्द्र का वही हाल था, जो प्रायः बड़े आदमियों के लड़कों का होता है। बहुत बड़े आदमी अपने बच्चों की देख-रेख स्वयं नहीं कर सकते। इसके लिये उन्हें फ़ुरसत कहाँ? नौकरशाही में ही उनका लालन-पालन हुआ और उसकी उनको बड़ी कटु-स्मृति है। वे उसको ग़ुलाम बादशाहों के राज्य के समान अव्यवस्थित बतलाते हैं। वे लोग "लालने बहवो दोषास्ताडने बहवो गुणाः" के मानने वाले थे। उनकी शिक्षा में ताड़ना की मात्रा अधिक थी। बाल्य-काल के स्वतन्त्रता के अभाव ने ही उनके मन में स्वतंत्रता का उचित मूल्य स्थापित कर दिया था। थोड़ी सी स्वतन्त्रता को भी वे ईश्वर-दत्त वर मानते थे। अपने ऊपर की हुई स्कूल की सख़्ती का बदला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

वे अपने बरामदे में लगी हुई कठसोई के डंडों को विद्यार्थी मान, उनको बेतों की मार लगाकर निकाल लेते थे। एक बार ग्यारह वर्ष की अवस्था में जब उनको अपने पूज्य पिताजी के साथ यात्रा में जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ तब से नौकरशाही के कठिन बन्धन शिथिल हो गए और उनके लौटने पर वे नौकरों के अधिकार में न रह कर भीतर घर में रहने लगे।

अन्य बड़े आदमियों की भाँति उनको भी स्कूल के पाठ्य-क्रम से अरुचि थी। उनकी स्कूल-शिक्षा की व्यवस्था ठीक न रही। उनके एक बड़े भाई जज थे। उनका परिवार 'ब्राइटन' में रहता था। वे रवीन्द्र बाबू को शिक्षा के लिये विलायत ले गये। व्यावहारिक दृष्टि से वहाँ भी उनकी शिक्षा का क्रम ठीक न रहा; किन्तु वहाँ उन्होंने अंग्रेजी साहित्य का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया। काव्य-रचना तो वे प्रायः बाल्यकाल से ही करने लगे थे, और विलायत में भी बंगला की कविता करते थे। विलायत के सहपाठियों में उन्होंने 'लोकन पालित' के नाम का उल्लेख बड़े स्नेह और आदर के साथ किया है। गाने के लिये उनका कंठ शुरू से ही मधुर है। गाने के इस माधुर्य के कारण उनको एक बार दंड भुगतना पड़ा। किसी भारतीय सिविल सर्विस के अफसर की विधवा को उसके पति-देव की स्मृति में बनाये हुए एक बंगाली करुण—गीत को विहाग राग में सुनने की चाट लग गई थी। रवि बाबू का गायन तो मधुर था ही, किन्तु अपने मेहमानों को उस गीत के सुनवाने में उस अंगरेज़ की विधवा के आत्म-भाव की भी

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

वृद्धि होती थी। वह गीत विहाग में गाने का न था। उसके गाने में रवीन्द्र बाबू को एक विशेष कष्ट होता था, जिसका एक सुगायक ही अनुभव कर सकता है। एक बार उसी महिला ने उनको लन्दन से विलायत के किसी ग्राम में बुलाया। वे बेचारे रात में पहुँचे, भोजन भी न मिला, भूखे पेट सोना पड़ा; रात को सराय में ठहरना पड़ा; सुबह को खाना बासी मिला—जो यदि रात को ही दे दिया जाता तो कुछ अंग लगता और सबसे बड़ी बात यह कि जिस महिला को गीत सुनवाने के लिये वे बुलाये गये थे, वह बीमार थी, उसके दर्शन भी न हुए और उनको कमरे के बाहर से ही गीत सुनाना पड़ा। लन्दन लौटने पर वे बीमार पड़ गये और डाक्टर स्काट से, जिनके यहाँ वे ठहरे थे, उन्होंने सब हाल कहा। उनकी लड़कियों ने बड़ी लज्जा प्रकट करते हुए कहा कि इस उदाहरण से अंगरेज़ी मेहमानदारी का अन्दाज़ा न लगाइये। यह तो उस महिला के भारत में रहने का फल है। रवीन्द्र बाबू ने इंगलिस्तान के लोगों की ईमानदारी की बहुत प्रशंसा की है। वहाँ के कुलियों का तो कहना क्या, भिक्षुक भी ईमानदार हैं।

रवीन्द्र बाबू का जीवन कोरी काव्य-रचना में ही नहीं बीता था। उनके पूज्य पिताजी ने अपने अन्य पुत्रों की फिज़ूलख़र्ची और अव्यावहारिकता देखकर रवि बाबू को उनकी इच्छा के विरुद्ध ज़मींदारी का काम सौंप दिया। वे महर्षि की आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकते थे अतः वे अपने गाँव में चले गये। वहाँ पद्मा (गंगाजी का दूसरा नाम) के किनारे का वातावरण उनके मानसिक स्वास्थ्य

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

के लिये बहुत अनुकूल पड़ा। उनकी रचनाओं में गंगा; तरी और धान के खेतों की अधिक छाया मिलती है। इस काल में उनकी प्रतिभा का प्रकाश खूब चमका और उन्होंने ज़मीदारी के काम के साथ-साथ बड़ी उच्च-कोटि की साहित्य सेवा की। वहाँ से 'भारती' और 'साधना' नाम की पत्रिकाएँ भी निकालीं। उनकी 'सोनार तरी' नामक गीत-काव्यों की संग्रहात्मक पुस्तक, जो सन् १८९१ से १८९३ तक लिखी गई, उस समय की रचनाओं की प्रतिनिधि स्वरूपा है। उसके पश्चात् सन् १८९८ से लगाकर १९०५ तक धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक उथल-पुथल का समय आता है। इस काल में उन्होंने धार्मिक-काव्य लिखा और बहुत-सा समय शान्ति-निकेतन में व्यतीत किया। धार्मिक काव्य के सम्बन्ध में एक बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है वह यह कि उन्होंने वैष्णव कवियों का अनुकरण करते हुए भानुसिंह (रवि और भानु पर्य्याय-वाची शब्द हैं) के नाम से कुछ काव्य लिखा। अनुकरण की उत्तमता के कारण लोग सहज में ही धोखे में आ गये, यहाँ तक कि डाक्टर निशिकान्त चटर्जी ने अपनी डाक्टरेट की उपाधि के लिये पेश किये हुए लेख में प्राचीन बंगला गीत-काव्य के सम्बन्ध में लिखते हुए भानुसिंह की कविता को बड़े आदर का स्थान दिया है और आश्चर्य की बात है कि उस लेख पर उनको डाक्टर की उपाधि भी मिल गई।

सन् १९०५ से लेकर सन् १९१९ तक का उनकी 'गीताञ्जलि' और उसके कारण उनकी बढ़ती हुई ख्याति का समय है।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

'गीताञ्जलि' की कविताओं का अंगरेज़ी अनुवाद उन्होंने कुछ स्यालदह में और कुछ स्वास्थ्य-सुधार के निमित विलायत जाते समय जहाज़ पर किया। इंगलिस्तान में रवीन्द्र बाबू ने वह अनुवाद अपने दो-एक मित्रों को भी दिखलाया। लोग उसकी आध्यात्मिक और संगीत-मयता को देख कर चकित हो गये। स्वयं रवीन्द्र बाबू को भी उसके लिये इतनी आशा न थी। सन् १९१३ में, जब कि रवीन्द्र बाबू 'शान्तिनिकेतन' में ही थे, उनके 'नोबेल-पुरस्कार' पाने की उनको सूचना मिली। उस सूचना का सारे भारत ने सहर्ष स्वागत किया। 'नोबेल पुरस्कार' का मिलना, भारत के ही नहीं, सारी एशिया के लिए गौरव की बात थी। ब्रिटिश साम्राज्य में भी साहित्य के लिए यह शायद दूसरा ही पुरस्कार था। पहला पुरस्कार रुडयर्ड किपलिंग को मिला था। उस समय से रवीन्द्र बाबू की ख्याति दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती रही है। यूरोप और अमेरिका में वे कई बड़ी-बड़ी व्याख्यान-मालाओं के देने के लिए आमंत्रित हुए। नोबेल पुरस्कार से जो द्रव्य मिला तथा उनके व्याख्यानों की सब आय कवि की प्रिय-संस्था 'शांतिनिकेतन' की उपयोगिता बढ़ाने में ख़र्च हुई। सन् १९१९ के बाद भी उनका रचना-काय स्थगित नहीं हुआ। उन्होंने विदेशों की खूब यात्रा की और सभी जगह उचित सम्मान पाया। वे चीन और जापान भी गये थे। हाल में वे हवाई जहाज़ द्वारा ईरान भी गये थे। इस प्रकार उन्होंने अपने पर्यटन द्वारा एक विश्व-बन्धुत्व स्थापित कर दिया है। उनकी स्थापित की हुई "विश्व-भारती" जिसका "यत्रविश्वं भवत्येक नीडम"—अर्थात्

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

"जहाँ पर सारा विश्व एक घोंसला बन गया है" आदर्श वाक्य है, विश्व-बन्धुत्व के भाव को चरितार्थ कर रही है। उनका सिद्धान्त है कि एक दूसरे की संस्कृति को समझ कर लोग एक दूसरे के साथ भ्रातृ-भाव रखते हैं।

रवीन्द्र बाबू के कवित्व के सम्बन्ध में भी दो-एक शब्द कहना अनुपयुक्त न होगा।

रवीन्द्र बाबू की कविताओं का बड़ा विस्तार है। समुद्र की भाँति जैसा उनका विस्तार है, वैसा ही उनका गाम्भीर्य भी है। उनमें सतकवि के सभी गुण हैं। उनकी कल्पना बड़ी उर्वरा है, शब्द-चित्र खींचने में वे बड़े ही निपुण हैं। उनकी लेखनी चित्रकार की तूलिका को बहुत पीछे छोड़ देती है। काव्य में बिना आवश्यक और निरर्थक शब्दों के समावेश किए संगीत उत्पन्न करने में बहुत थोड़े लोग उनकी बराबरी कर सकते हैं। उन्होंने अगणित नवीन छन्दों का निर्माण किया है। उन्होंने साहित्य, संगीत का अनुपम योग किया है। उनकी सरलता में गौरव और गाम्भीर्य है। इस छोटे से निबन्ध में उनकी कविता का दिग्दर्शन-मात्र कराया जा सकता है।

उनकी कविता केवल कविता नहीं है वरन् उसमें एक आध्यात्मिकता भरी हुई है। उनकी कविता को उनके दार्शनिक और धार्मिक भावों से अलग करना कठिन होगा। उन्होंने लौकिक कविता की है, किन्तु उस लौकिक में भी एक दैवी आभा दिखाई

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पड़ती है। वास्तव में कवि के लिए संसार और स्वर्ग में भेद नहीं। वे सुख-दुःख-मय संसार को ही प्रधानता देते हैं।

इसी प्रकार उनकी कविता में भी यह नहीं मालूम पड़ता कि उसमें कहाँ तक लौकिक शृंगार है और कहाँ तक दिव्य रूप। 'सोनार तरी' की कविताओं में उन्होंने घरेलू चित्र खींचे हैं, वे सब कविताएँ आध्यात्मिक महत्त्व रखती हैं। इसका अभिप्राय यह नहीं कि सभी कविताओं में खींच-तान कर आध्यात्मिक अर्थ लगाये जायँ; किन्तु उनकी अधिकांश कविताओं में आध्यात्मिक गाम्भीर्य है। "गार्डनर" में संग्रहीत कुछ कविताएँ ऐसी हैं, जिसमें शृंगार की मात्रा अधिक है और आध्यात्मिकता की मात्रा कम। किन्तु उनके शृंगार और करुण सब में विश्वतंत्री की झंकार सुनाई पड़ती है। उनका शृंगार और मिलन भी आत्मा के विकास के लिये ही है। वे वाह्य-सौन्दर्य का महत्त्व स्वीकार करते हुए भी आध्यात्मिक आन्तरिक सौन्दर्य को अधिक महत्त्व देते हैं। इस सम्बन्ध में उनकी "चित्रांगदा" पढ़ने योग्य है। सौन्दर्य-तत्त्व की उसमें बड़ी सूक्ष्म और गम्भीर विवेचना है।

रवीन्द्र वाबू के सौन्दर्य-बोध के सम्बन्ध में इतना और कह देना अनुपयुक्त न होगा कि वे सौन्दर्य को विषय गत (objective) और विषयी-गत (subjective) दोनों ही मानते हैं; अर्थात् सौन्दर्य वस्तु में भी है, और द्रष्टा की दृष्टि में भी। बिहारी के शब्दों में "रूप रिझावन हार यह, वे नयना रिझवार।"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

रवीन्द्र बाबू यह भी मानते हैं कि सौन्दर्य का अच्छा उपभोग आत्मा द्वारा ही हो सकता है; क्योंकि वह आत्मा की ही वस्तु है।

वे कला और आचार का विच्छेद नहीं करना चाहते। उनकी कविता में कला है, किन्तु उसमें आचार-सम्बन्धी अराजकता नहीं है, उसमें मर्यादा है। वे तुलसीदास जी की भाँति उसी कविता को उत्तम मानते हैं जो "सुर-सरिता सम सब कहँ हितकर होई।" उन्होंने अपनी कविता में "सत्यं शिवं सुन्दरम्" का आदर्श चरितार्थ किया है।

रवीन्द्र बाबू ने प्रायः सभी रसों पर लिखा है; किन्तु यहाँ पर उन सब का वर्णन नहीं हो सकता।

उनका एक विशेष व्यक्तित्व है, जो अपना स्वाभाविक आकर्षण रखता है। वे सच्चे कवि हैं उनका जीवन काव्य-मय है। वे संसार के कवियों में गिने जाते हैं। भारत का गौरव उन्होंने बहुत ऊँचा किया है।

अभ्यास के लिये

१—बचपन में रवीन्द्र बाबू किनके निरीक्षण में और किस प्रकार जीवन व्यतीत करते थे ?

२—रवि-बाबू की कवित्व-शक्ति का विकास कब आरम्भ हुआ ?

३—'नोबेल-पुरस्कार' के विषय में आप क्या जानते हैं ? कवि को यह पुरस्कार किस रचना पर मिला था ?

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

४—भावार्थ स्पष्ट कीजिए—

(क) यह समय बंगाल में साहित्यिक वसन्त का गिना जाता है।

(ख) वे सौन्दर्य को विषयगत और विषयीगत दोनों ही मानते हैं।

(ग) उनकी कविता में कला है; किन्तु उसमें आचार-संबंधी अराजकता नहीं है।

५—श्री गुलाबराय के साहित्यिक जीवन पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

———

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

१७—मधूलिका

[लेखक—श्री जयशंकर 'प्रसाद']

श्रीयुत 'प्रसाद' जी हिन्दी साहित्य में बहुमुखी प्रतिभा लेकर अवतरित हुए थे। अपनी साहित्यिक सेवाओं द्वारा आपने हिन्दी की महान् श्रीवृद्धि की है। आप आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रवर्तकों में से हैं। आपने गद्य और पद्य दोनों प्रकार के साहित्य का निर्माण किया है। गद्यकार के रूप में प्रसाद जी ने गद्य के सभी अंगों की पूर्ति की है। मौलिक नाटक, उपन्यास कहानी, निबंध, समालोचनाएँ आदि लिखकर आपने हिन्दी को विशेष रूप से गौरवान्वित किया है।

प्रसाद जी का जन्म माघ शुक्ल १० सं० १६४६ वि० में काशी में हुआ था। आपने अपने घर ही पर हिन्दी, उर्दू, संस्कृत, फारसी तथा अंग्रेज़ी आदि भाषाओं का अध्ययन किया और पूज्य पिता के देहावसान के उपरान्त आप देवी सरस्वती की आराधना तथा पैतृक व्यवसाय—दोनों कार्यों को साथ ही साथ बड़ी ही संलग्नता से चलाते रहे। हिन्दी जगत को अतुल संपत्ति देकर 'प्रसाद' जी स० १६६४ में इस संसार से विदा हो गये।

× × ×

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

'प्रसाद' जी ने चन्द्रगुप्त, अजातशत्रु स्कन्दगुप्त, राज्यश्री, विशाख, जन्मेजय का नाग यज्ञ, कामना, एक घूंट,—आदि मौलिक लिखकर हमारे अतीत का उज्ज्वल स्वरूप हमारे सामने रखा है। इसी प्रकार उन्होंने अनेक कहानियाँ लिखकर हमारे सम्मुख आदर्श चरित्र उपस्थित किए हैं। 'आकाश-दीप', 'आँधी', 'प्रतिध्वनि आप की कहानियों के संग्रह हैं। 'तितली' तथा 'कंकाल' आप के यथार्थवादी उपन्यास हैं। महाकाव्य 'कामायनी' पर आप को 'मंगला-प्रसाद-पुरस्कार' प्राप्त हुआ है। 'आँसू' प्रसाद' जी का स्वानुभूतिव्यंजक छन्दों का संग्रह है। 'लहर', 'झरना' तथा 'कविता कानन' उनकी—अन्य कविताओं के संग्रह हैं। 'चित्राधार' में आपकी प्रारंभिक कविताएँ संग्रहीत हैं।

'प्रसाद' जी की भाषा संस्कृत निष्ट है, शब्द-चयन बड़ा ही मधुर होता है तथा लेखों में अर्थ-गाम्भीर्य एवं माधुर्य—दोनों की ही प्रचुरता रहती है। 'प्रसाद' जी हिन्दी के एक सफल कहानी लेखक हैं। आप की कहानियाँ बड़े ही रोचक ढंग से प्रारंभ होती हैं। उनके कथोपकथन आकर्षक एवं सुसंयत होते हैं, तथा उनका अंत सदैव व्यंजनात्मक होता है। आपकी कहानियाँ भावना प्रधान होती हैं। उनमें यथार्थवाद अपेक्षाकृत न्यून पर आदर्शवाद की गहरी छाप रहती है।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

आर्द्रा नक्षत्र, आकाश में काले-काले बादलों की घुमड़, जिसमें देव-दुंदुभी का गंभीर घोष, प्राची के एक निरभ्र कोने से स्वर्ण-पुरुष झाँकने लगा था, देखने लगा महाराज की सवारी। शैलमाला के अंचल में समतल उर्वरा-भूमि में सोंधी बास उठ रही थी। नगर तोरण से जय-घोष हुआ, भीड़ में गजराज का चामरधारी शुंड उन्नत दिखाई पड़ा। हर्ष और उत्साह का वह समुद्र हिलोरें भरता हुआ आगे बढ़ने लगा। जनता ने मंगल सूचक हर्ष-ध्वनि की।

रथों, हाथियों और अश्वारोहियों की पंक्ति जम गई। दर्शकों की भीड़ भी कम न थी। गजराज बैठ गया, सीढ़ियों से महाराज उतरे। सौभाग्यवती और कुमारी सुन्दरियों के दो दल, आम्रपल्लवों से सुशोभित मङ्गल-कलश और फूल कुंकुम तथा खीलों से भरे थाल लिये, मधुर गान करते हुए आगे बढ़े।

महाराज के मुख पर मधुर मुस्क्यान थी। पुरोहित-वर्ग ने स्वस्त्ययन किया। स्वर्ण-रंजित हल की मूठ पकड़ कर महाराज ने जुटे हुए सुन्दर पुष्ट बैलों को चलने का संकेत किया। बाजे बजने लगे। किशोरी कुमारियों ने खीलों और फूलों की वर्षा की।

कोशल का उत्सव प्रसिद्ध था। एक दिन के लिए महाराज को कृषक बनना पड़ा—उस दिन इन्द्र-पूजन की धूम-धाम होती, गोठ होती। नगर-निवासी उस पहाड़ी भूमि में आनन्द मनाते। प्रति वर्ष कृषि का यह महोत्सव उत्साह से सम्पन्न होता; दूसरे

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

राज्यों से भी युवक राजकुमार इस उत्सव में आकर बड़े चाव से योग देते ।

मगध का एक राजकुमार अरुण अपने रथ पर बैठा बड़े कौतूहल से यह दृश्य देख रहा था ।

बीजों का एक थाल लिये कुमारी मधूलिका महाराज के साथ थी । बीज बोते हुए महाराज जब हाथ बढ़ाते तब मधूलिका उनके सामने थाल कर कर देती । यह खेत मधूलिका का था, जो इस साल महाराज की खेती के लिये चुना गया था । इसलिए बीज देने का सम्मान मधूलिका ही को मिला । वह कुमारी थी सुन्दरी थी । कौशेय-बसन उसके शरीर पर इधर-उधर लहराता हुआ स्वयं शोभित हो रहा था । वह कभी उसे सम्हालती और कभी अपने रूखे अलकों को । कृषक-बालिका के शुभ्र भाल पर श्रम-कणों की भी कमी न थी । वे सब बरौनियों में गुँथे जा रहे थे । सम्मान और लज्जा उसके अधरों पर मन्द मुस्कराहट के साथ सिहर उठते किन्तु महाराज को बीज देने में उसने शिथिलता न दिखलाई । सब लोग महाराज का हल चलाना देख रहे थे—विस्मय से, कौतूहल से । और अरुण देख रहा था, कृषक-कुमारी मधूलिका को । आह कितना भोला सौन्दर्य ? कितनी सरल चितवन !

उत्सव का प्रधान कृत्य समाप्त हो गया । महाराज ने मधूलिका के खेत का पुरस्कार दिया, थाल में कुछ स्वर्ण-मुद्रायें । वह राजकीय अनुग्रह था । मधूलिका ने थाली सिर से लगाया, किन्तु साथ ही उसमें की स्वर्ण-मुद्राओं को महाराज पर न्योछावर कर के बिखेर

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

दिया। मधूलिका की उस समय की ऊर्जस्वित मूर्ति लोग आश्चर्य से देखने लगे। महाराज की भृकुटि भी ज़रा चढ़ी ही थी की मधूलिका ने सविनय कहा:—

'देव ! यह मेरे पितृ, पितामहों की भूमि है। इसें बेचना अपराध है; इसलिये मूल्य स्वीकार करना मेरी सामर्थ्य के बाहर है।"

महाराज के बोलने के पहले ही वृद्ध मन्त्री ने तीखे स्वर से कहा—"अबोध ! क्या बक रही है ? राजकीय अनुग्रह का तिरस्कार ! तेरी भूमि से चौगुना मूल्य है; फिर कोशल का यह सुनिश्चित राजकीय नियम है। तू आज से राजकीय रक्षण पाने की अधिकारिणी हुई; इस धन से अपने को सुखी बना।"

'राजकीय रक्षण की अधिकारिणी तो सारी प्रजा है मंत्रिवर ! ....महाराज को भूमि समर्पण करने में तो मेरा कोई विरोध न था और न है, किन्तु मूल्य स्वीकार करना असम्भव है।" मधूलिका उत्तेजित हो उठी थी।

महाराज के संकेत करने पर मंत्री ने कहा—"देव ! वाराणसी-युद्ध के अन्यतम वीर सिंहमित्र की यह एकमात्र कन्या है।" महाराज चौंक उठे—"सिंहमित्र की कन्या ! जिसने मगध के सामने कोशल की लाज रखली थी, उसी वीर की मधूलिका कन्या है ?"

"हाँ, देव !" सविनय मंत्री ने कहा।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

"इस उत्सव के परम्परागत नियम क्या हैं मंत्रिवर ?" महाराज ने पूछा।

"देव, नियम तो बहुत साधारण हैं। किसी भी अच्छी भूमि को इस उत्सव के लिये चुन कर नियमानुसार पुरस्कार-स्वरूप उसका मूल्य दे दिया जाता है। वह भी अत्यंत अनुग्रह-पूर्वक अर्थात भूसम्पत्ति का चौगुना मूल्य उसे मिलता है। उस खेती को वही व्यक्ति वर्ष भर देखता है। वह राजा का खेत कहा जाता है।"

महाराज को विचार-संघर्ष से विश्राम की अत्यन्त आवश्यकता थी। महाराज चुप रहे। जय-घोष के साथ सभा विसर्जित हुई। सब अपने-अपने शिविरों में चले गये। किन्तु मधूलिका को उत्सव में फिर किसी ने न देखा। वह अपने खेत की सीमा पर विशाल मधूक वृक्ष के चिकने हरे पत्तों की छाया में अनमनी चुपचाप बैठी रही।

× × × ×

रात्रि का उत्सव अब विश्राम ले रहा था। राजकुमार अरुण उसमें सम्मिलित नहीं हुआ—वह अपने विश्राम-भवन में जागरण कर रहा था। आँखों में नींद न थी। प्राची में जैसी गुलाली खिल रही थी, वही रंग उसकी आँखों में था। सामने देखा तो मुंडेर पर कपोती एक पैर पर खड़ी पंख फैलाये अंगड़ाई ले रही थी। अरुण उठ खड़ा हुआ। द्वार पर सुसज्जित अश्व था, वह देखते देखते नगर तोरण पर जा पहुँचा। रक्षकगण ऊँघ रहे थे। अश्व के पैरों के शब्द से चौंक उठे।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

युवक कुमार तीर सा निकल गया। सिन्धु देश का तुरंग प्रभात के पवन से पुलकित हो रहा था। घूमता-घूमता अरुण उसी मधूक-वृक्ष के नीचे पहुँचा, जहाँ मधूलिका अपने हाथ पर सिर धरे हुए खिन्न निद्रा का सुख ले रही थी।

अरुण ने देखा, एक छिन्न माधवी-लता वृक्ष की शाखा से च्युत होकर पड़ी है। सुमन मुकुलित थे, भ्रमर निस्पन्द! अरुण ने अपने अश्व को मौन रहने का संकेत किया, उस सुषमा को देखने के लिये। परन्तु कोकिल बोल उठी। उसने अरुण से प्रश्न किया— "छिः, कुमारी के सोये हुए सौन्दर्य पर दृष्टिपात करने वाले धृष्ट, तुम कौन?" मधूलिका की आँखें खुल पड़ीं। उसने देखा, एक अपरिचित युवक। वह संकोच से उठ बैठी। "भद्रे! तुम्हीं न कल के उत्सव की संचालिका रही हो?"

"उत्सव! हाँ उत्सव ही तो था।"

"कल उस सम्मान........"

"क्यों आपको कल का स्वप्न सता रहा है? भद्र! आप क्या मुझे इस अवस्था में सन्तुष्ट न रहने देंगे?"

"मेरा हृदय तुम्हारी उस छवि का भक्त बन गया है, देवि!"

"मेरे उस अभिनय का—मेरी विडम्बना का। आह! मनुष्य कितना निर्दय है। अपरिचित, क्षमा करो! जाओ अपने मार्ग!"

"सरलता की देवि! मैं मगध का राजकुमार तुम्हारे अनुग्रह

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

का प्रार्थी हूँ—मेरे हृदय की भावना अवगुंठन में रहना नहीं जानती। उसे अपनी........"

"राजकुमार! मैं कृषक-बालिका हूँ! आप नन्दनविहारी और मैं पृथ्वी पर परिश्रम करके जीने वाली। आज मेरी स्नेह की भूमि पर से मेरा अधिकार छीन लिया गया है। मैं दुःख से विकल हूँ; मेरा उपहास न करो!"

"मैं कोशल-नरेश से तुम्हारी भूमि तुम्हें दिलवा दूँगा।"

'नहीं, वह कोशल का राष्ट्रीय नियम है। मैं उसे बदलना नहीं चाहती—चाहे उससे मुझे कितना ही दुःख हो।"

"तब तुम्हारा रहस्य क्या?"

"यह रहस्य मानव हृदय का है, मेरा नहीं। राजकुमार, नियम से यदि मानव-हृदय बाध्य होता तो आज मगध के राजकुमार का हृदय किसी राजकुमारी की ओर खिंच कर एक कृषक-बालिका का अपमान करने न आता।" मधूलिका उठ खड़ी हुई।

चोट खाकर राजकुमार लौट पड़ा। किशोर किरणों में उसका रत्न-किरीट चमक उठा। अश्व वेग से चला जा रहा था और मधूलिका निष्ठुर प्रहार करके क्या स्वयं आहत न हुई? उसके हृदय में टीस-सी होने लगी। वह सजलनेत्रों से उड़ती हुई धूल देखने लगी।

× × × ×

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

मधूलिका ने राजा का प्रतिदान, अनुग्रह नहीं लिया। वह दूसरे खेतों में काम करती और चौथे पहर रूखी-सूखी खाकर पड़ रहती। मधूक के वृक्ष के नीचे एक छोटी-सी पर्ण-कुटीर थी। सूखे डंठलों से उसकी दीवार बनी थी। मधूलिका का वही आश्रम था। कठोर परिश्रम से जो रूखा अन्न मिलता वही उसकी साँसों को बढ़ाने के लिए पर्याप्त था। दुबली होने पर भी उसके अंग पर तपस्या की कान्ति थी। आस-पास के कृषक उसका आदर करते। वह एक आदर्श-बालिका थी। दिन, सप्ताह, महीने और वर्ष बीतने लगे।

शीतकाल की रजनी, मेघों से भरा आकाश, जिसमें बिजली की दौड़-धूप। मधूलिका का छाजन टपक रहा था, ओढ़ने की कमी थी। वह ठिठुर कर कोने में बैठी थी। मधूलिका अपने अभाव को आज बढ़ा कर सोच रही थी। जीवन से सामंजस्य बनाये रखने वाले उपकरण तो अपनी सीमा निर्धारित रखते हैं, परन्तु उनकी आवश्यकता और कल्पना भावना के साथ बढ़ती घटती रहती है। आज बहुत दिनों पर उसे बीती हुई बात स्मरण हुई—"दो, नहीं-नहीं, तीन वर्ष हुए होंगे, इसी मधूक के नीचे, प्रभात में—तरुण राजकुमार ने क्या कहा था ?"

वह अपने हृदय से पूछने लगी—उन चाटुकी के शब्दों के सुनने के लिये उत्सुक-सी वह पूछने लगी—"क्या कहा था ?" दुख-दग्ध-हृदय उन स्वप्न-सी बातों को स्मरण रख सकता और

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

स्मरण ही होता तो भी कष्टों को इस काली निशा में वह कहने का साहस करता ? हायरी बिडंबना !

आज मधूलिका उस बीते हुए क्षण को लौटा लेने के लिए विकल थी। असहाय दारिद्र्य की ठोकरों ने उसे व्यथित और अधीर कर दिया है। मगध की प्रासाद-माला के वैभव का काल्पनिक चित्र—उन सूखे डंठलों के रन्ध्रों से नीचे नभ में—बिजली के आलोक में—नाचता हुआ दिखाई देने लगा। खिलवाड़ी शिशु जैसे श्रावण की सन्ध्या में जुगनू को पकड़ने के लिए हाथ लपकाता है वैसे ही मधूलिका "अभी वह, वह निकल गया।" मन ही मन कह रही थी। वर्षा ने भीषण रूप धारण किया। गड़गड़ाहट बढ़ने लगी। ओले पड़ने की सम्भावना थी। मधूलिका अपनी जर्जर झोंपड़ी के लिए काँप उठी। सहसा बाहर कुछ शब्द हुआ।

"कौन है यहाँ ? पथिक को आश्रय चाहिए।"

मधूलिका ने डंठलों का कपाट खोल दिया। बिजली चमक उठी। उसने देखा, एक पुरुष घोड़े की डोर पकड़े खड़ा है। सहसा वह चिल्ला उठी—"राजकुमार।"

"मधूलिका ?" आश्चर्य से युवक ने कहा।

एक क्षण के लिए सन्नाटा छा गया। मधूलिका अपनी कल्पना को सहसा प्रत्यक्ष देख कर चकित हो गई, "इतने दिनों के बाद आज फिर ?"

अरुण ने कहा—"कितना समझाया मैंने—परन्तु........"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

मधूलिका अपनी दयनीय अवस्था पर संकेत करने देना नहीं चाहती थी। उसने कहा—"और आज आपकी यह क्या दशा है ?"

सिर झुका कर अरुण ने कहा—"मैं मगध का विद्रोही निर्वासित कोशल में जीविका खोजने आया हूँ।"

मधूलिका उस अन्धकार में हँस पड़ी—"मगध के विद्रोही राजकुमार का स्वागत करे एक अनाथिनी कृषक-बालिका ! यह भी एक विडंबना है ! तो भी मैं स्वागत के लिए प्रस्तुत हूँ।"।

× × × ×

शीतकाल की निस्तब्ध रजनी, कुहरे से धुली हुई चांदनी, हाड़ कँपा देने वाला समीर, तो भी अरुण और मधूलिका दोनों पहाड़ी गह्वर के द्वार पर वट-वृक्ष के नीचे बैठे हुए बातें कर रहे हैं। मधूलिका को वाणी में उत्साह था, किन्तु अरुण जैसे अत्यन्त सावधान होकर बोलता है !

मधूलिका ने पूछा—"जब तुम इतनी विपन्न अवस्था में हो तो फिर इतने सैनिकों को साथ रखने की क्या आवश्यकता है ?"

मधूलिका ! बाहुबल ही तो वीरों की आजीविका है। ये मेरे जीवन-मरण के साथी हैं। भला मैं इन्हें कैसे छोड़ देता ? और करता ही क्या ?"

"क्यों ? हम लोग परिश्रम से कमाते और खाते हैं। अब तो तुम........।"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

"भूल न करो, मैं अपने बाहुबल पर भरोसा करता हूँ। नये राज्य की स्थापना कर सकता हूँ। निराश क्यों हो जाऊँ?" अरुण के शब्दों में कल्पना थी; वह जैसे कुछ कहना चाहता था, पर कह न सकता था।

"नवीन राज्य! ओहो, तुम्हारा उत्साह तो कम नहीं। भला कैसे? कोई ढंग बताओ तो मैं भी कल्पना का आनन्द ले लूँ।"

"कल्पना का आनन्द नहीं मधूलिका, मैं तुम्हें राजरानी के सम्मान में सिंहासन पर बिठाऊँगा! तुम अपने छिने हुए खेत की चिन्ता करके भयभीत न हो।"

एक क्षण में सरला मधूलिका के मन में प्रमाद का अन्धड़ बहने लगा—द्वन्द मच गया। उसने सहसा कहा—"आह, मैं सचमुच आज तक तुम्हारी प्रतीक्षा करती थी, राजकुमार!"

अरुण ढिठाई से उसके हाथों को दबा कर बोला, "तो मेरा भ्रम था, तुम सचमुच मुझे प्यार करती हो?"

युवती का वक्षस्थल फूल उठा, वह हाँ भी नहीं कह सकी, ना भी नहीं। अरुण ने उसकी अवस्था का अनुभव कर लिया। कुशल मनुष्य के समान उसने अवसर को हाथ से न जाने दिया। तुरन्त बोल उठा—"तुम्हारी इच्छा हो तो प्राणों से प्राण लगा कर मैं तुम्हें इसी कोशल के सिंहासन पर बिठा दूँ। मधूलिका, अरुण के खड्ग का आतंक देखोगी?" मधूलिका एक बार काँप उठी। वह कहना चाहती थी, नहीं—किन्तु उसके मुँह से निकला, "क्या?"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

"सत्य, मधूलिका, कोशल-नरेश तभी से तुम्हारे लिए चिन्तित हैं। यह मैं जानता हूँ, तुम्हारी साधारण-सी प्रार्थना वह अस्वीकार न करेंगे। और मुझे यह भी विदित है कि कोशल के सेनापति अधिकांश सैनिकों के साथ पहाड़ी दस्युओं का दमन करने के लिए बहुत दूर चले गये हैं।"

मधूलिका की आँखों के आगे बिजलियाँ हँसने लगीं। दारुण भावना से उसका मस्तक विकृत हो उठा। अरुण ने कहा—"तुम बोलती नहीं हो।"

"जो कहोगे वही करूँगी"—मंत्रमुग्ध सी मधूलिका ने कहा।

× × × ×

स्वर्ण-मंच पर कोशल-नरेश अधलेटी अर्द्ध-निद्रित अवस्था में आँखें मुकुलित किये हैं। एक चामरधारिणी युवती पीछे खड़ी अपनी कलाई बड़ी कुशलता से घुमा रही है। चामर के शुभ्र आनन्दोलन उस प्रकोष्ठ में धीरे-धीरे संचलित हो रहे हैं। ताम्बूल-वाहिनी प्रतिमा के समान दूर खड़ी है।

प्रतिहारी ने आकर कहा—"जय हो देव! एक स्त्री कुछ प्रार्थना करने आई है।"

आँख खोलते हुए महाराज ने कहा—स्त्री! प्रार्थना करने आई है? आने दो।"

प्रतिहारी के साथ मधूलिका आई। उसने प्रणाम किया।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

महाराज ने स्थिर दृष्टि से उसकी ओर देखा और कहा—"तुम्हें कहीं देखा है।"

"तीन बरस हुए देव ! मेरी भूमि खेती के लिए ली गई थी।"

"ओह, तो तुमने इतने दिन कष्ट में बिताये ! आज उसका मूल्य माँगने आई हो, क्यों? अच्छा, अच्छा तुम्हें मिलेगा। प्रतिहारी !"

"नहीं महाराज, मुझे मूल्य नहीं चाहिये ?"

"मूर्खे ! फिर क्या चाहिए ?"

"उतनी ही भूमि, दुर्ग के दक्षिणी नाले के समीप की जंगली भूमि। वहीं मैं अपनी खेती करूँगी। मुझे एक सहायक मिल गया है। वह मनुष्यों से मेरी सहायता करेगा; भूमि को समतल भी तो बनाना होगा।

महाराज ने कहा—"कृषक-बालिके ! वह बड़ी ऊबड़-खाबड़ भूमि है। तिस पर वह दुर्ग के समीप एक सैनिक महत्त्व रखती है।"

"तो फिर निराश लौट जाऊँ।"

"सिंह-मित्र की कन्या ! मैं क्या करूँ ? तुम्हारी यह प्रार्थना······!"

"देव ! जैसी आज्ञा हो।"

"जाओ, तुम श्रमजीवियों को उसमें लगाओ। मैं अमात्य को आज्ञा पत्र देने का आदेश करता हूँ।"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

"जय हो देव !" कह कर प्रणाम करती हुई मधूलिका राज-मन्दिर के बाहर आई।

× × × ×

दुर्ग के दक्षिण, भयावने नाले के तट पर, घना जंगल है। आज वहाँ मनुष्यों के पद-संचार से शून्यता भंग हो रही थी। अरुण के छिपे हुए मनुष्य स्वतंत्रता से इधर-उधर घूमते थे। झाड़ियों को काट कर पथ बन रहा था। नगर दूर था; फिर उधर यों ही कोई नहीं आता था। फिर अब तो महाराज की आज्ञा से वहाँ मधूलिका का अच्छा खेत बन रहा था किसको इसकी चिन्ता थी ?

एक घने कुंज में अरुण और माधूलिका एक दूसरे को हर्षित नेत्रों से देख रहे थे। सन्ध्या हो चली थी। उस निविड़ वन में उन नवागत मनुष्यों को देखकर पक्षीगण अपने नीड़ को लौटते हुए अधिक कोलाहल कर रहे थे।

प्रसन्नता से अरुण की आँखें चमक उठीं। सूर्य की अन्तिम किरणें झुरमुट से घुसकर मधूलिका के कपोलों से खेलने लगीं। अरुण ने कहा—"चार पहर और विश्वस करो और प्रभात में ही इस जीर्ण-कलेवर कोशल-राष्ट्र की राजधानी श्रावस्ती में तुम्हारा अभिषेक होगा। और मगध से निर्वासित मैं, एक स्वतंत्र राष्ट्र का अधिपति बनूँगा, मधूलिके !"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

"भयानक ! अरुण तुम्हारा साहस देख कर मैं चकित हो रही हूँ। केवल सौ सैनिकों से तुम........"

"रात के तीसरे पहर मेरी विजय-यात्रा होगी मधूलिके !"

"तो तुमको इस विजय पर विश्वास है ?"

"अवश्य। तुम अपनी झोपड़ी में यह रात बिताओ; प्रभात से तो राज-मन्दिर ही तुम्हारा लीला निकेतन बनेगा"

मधूलिका प्रसन्न थी, किन्तु अरुण के लिए उसकी कल्याण कामना सशंक थी। वह कभी-कभी उद्विग्न-सी होकर बालकों के समान प्रश्न कर बैठती। अरुण उसका समाधान कर देता। सहसा कोई संकेत पाकर उसने कहा—"अच्छा, अन्धकार अधिक हो गया। अभी तुम्हें दूर जाना है और मुझे भी प्राणपण से इस अभियान के प्रारम्भिक कार्यों को अर्ध-रात्रि तक पूरा कर लेना चाहिए। इसलिये रात्रि भर के लिए विदा !"

मधूलिका उठ खड़ी हुई। कँटीली झाड़ियों में उलझती हुई, क्रम से बढ़ने वाले अन्धकार में, वह अपनी झोपड़ी की ओर चली।

× × × ×

पथ अन्धकार-मय था और मधूलिका का हृदय भी निकिड़तम से घिरा था। उनका मन सहसा विचलित हो उठा; मधुरता नष्ट हो गई। जितनी सुख-कल्पना थी, वह जैसे अन्धकार में बिलीन होने लगी। वह भयभीत थी। पहला भय उसे अरुण के लिये

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

: In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

उत्पन्न हुआ, यदि वह सफल न हुआ तो ? फिर सहसा सोचने लगी; वह क्यों सफल हो ? श्रावस्ती-दुर्ग एक विदेशी के अधिकार में क्यों चला जाय ? मगध कोशल का चिर-शत्रु ! ओह, उसकी विजय कोशल नरेश ने क्या कहा था—"सिंह-मित्र की कन्या।" सिंह-मित्र कोशल का रक्षक वीर, उसकी कन्या आज क्या करने जा रही है ? नहीं, नहीं। 'मधूलिका ! मधूलिका !!' जैसे उसके पिता उस अन्धकार में पुकार रहे थे। वह पगली की तरह चिल्ला उठी ! रास्ता भूल गई।

रात एक पहर बीत चली, पर मधूलिका अपनी झोंपड़ी तक न पहुँची। वह उधेड़-बुन में विक्षिप्त-सी चली जा रही थी। उसकी आँखों के सामने कभी सिंह-मित्र और कभी अरुण की मूर्ति अन्धकार में चित्रित हो जाती। उसे सामने आलोक दिखाई पड़ा, वह बीच पथ में खड़ी हो गई। प्रायः एक सौ उल्काधारी अश्वारोही चले आ रहे थे और आगे-आगे एक वीर अधेड़ सैनिक था। उसके बायें हाथ में अश्व की वल्गा और दाहिने हाथ में नग्न खड्ग। अत्यन्त धीरता से वह टुकड़ी अपने पथ पर चल रही थी। परन्तु मधूलिका बीच पथ से हिली नहीं। प्रमुख सैनिक पास आ गया, पर मधूलिका अब भी नहीं हटी सैनिक ने अश्व रोक कर कहा—"कौन ?" कोई उत्तर नहीं मिला। तब तक दूसरे अश्वारोही ने कड़क कर कहा—"तू कौन है स्त्री ? कोशल के सेनापति को शीघ्र उत्तर दे !"

रमणी जैसे विकार-ग्रस्त स्वर में चिल्ला उठी—"बाँध लो

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

मुझे, बाँध लो ! मेरी हत्या करो । मैंने अपराध ही ऐसा किया है ।"

सेनापति हँस पड़े । बोले—"पगली है ।"

"पगली ! नहीं यदि वही होती तो इतनी विचार वेदना क्यों होती ? सेनापति ! मुझे बाँध लो । राजा के पास ले चलो ।"

"क्या है ? स्पष्ट कह !"

"श्रावस्ती का दुर्ग एक प्रहार में दस्युओं के हस्तगत हो जायगा । दक्षिणी नाले के पार उसका आक्रमण होग ।"

सेनापति चौंक उठे । उन्होंने आश्चर्य से पूछा—"तू क्या कह रही है ?"

"मैं सत्य कह रही हूँ ; शीघ्रता करो ।"

सेनापति ने अस्सी सैनिकों को नाले की ओर धीरे-धीरे बढ़ने की आज्ञा दी और स्वयं बीस अश्वारोहियों के साथ दुर्ग की ओर बढ़े । मधूलिका एक अश्वारोही के साथ बाँध दी गई ।

× × × ×

श्रावस्ती का दुर्ग, कोशल राष्ट्र का केन्द्र, इस रात्रि में अपने विगत वैभव का स्वप्न देख रहा था । भिन्न राजवंशों ने उसके प्रान्तों पर अधिकार जमा लिया है । अब वह कई गाँवों का अधिपति है । फिर भी उसके साथ कोशल के अतीत की स्वर्णगाथायें लिपटी है । वह लोगों की ईर्ष्या का कारण है दुर्ग के प्रहरी चौंक उठे, जब थोड़े से अश्वारोही बड़े वेग से आते हुए दुर्गद्वार पर रुके ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

जब उल्का के आलोक में उन्होंने सेनापति को पहचाना, तब द्वार खुला। सेनापति घोड़े की पीठ से उतरे। उन्होंने कहा—"अग्निसेन! दुर्ग में कितने सैनिक होंगे।"

"सेनापति की जय हो! दो सौ।"

"उन्हें शीघ्र एकत्र करो; परन्तु बिना किसी शब्द के। १०० को लेकर तुम शीघ्र ही चुपचाप दुर्ग के दक्षिण की ओर चलो। आलोक और शब्द न हो।"

सेनापति ने मधूलिका की ओर देखा। वह खोल दी गई। उसे अपने पीछे आने का संकेत कर सेनापति राज-मन्दिर की ओर बढ़े। प्रतिहारी ने सेनापति को देखते ही महाराज को सावधान किया। वह अपनी सुख-निद्रा के लिये प्रस्तुत हो रहे थे। किन्तु सेनापति और साथ में मधूलिका को देखते ही चंचल हो उठे। सेनापति ने कहा—"जय हो देव! इस स्त्री के कारण मुझे इस समय उपस्थित होना पड़ा है।"

महाराज ने स्थिर नेत्रों से देख कर कहा—"सिंह मित्र की कन्या, फिर यहाँ क्यों? क्या तुम्हारा क्षेत्र नहीं बन रहा है? कोई बाधा? सेनापति! मैंने दुर्ग के दक्षिणी नाले के समीप की भूमि इसे दी है। क्या उसी सम्बन्ध में तुम कहना चाहते हो?"

"देव! किसी गुप्त-शत्रु ने उसी ओर से आज रात में दुर्ग पर अधिकार कर लेने का प्रबन्ध किया है। और इसी स्त्री ने मुझे पथ में यह सन्देश दिया है।"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

राजा ने मधूलिका की ओर देखा। वह काँप उठी। घृणा और लज्जा से वह गड़ी जा रही थी। राजा ने पूछा—"मधूलिका, यह सत्य है ?"

"हाँ, देव !"

राजा ने सेनापति से कहा—"सैनिकों को एकत्र करके तुम चलो, मैं अभी आता हूँ। सेनापति के चले जाने पर राजा ने कहा—"सिंहमित्र की कन्या ! तुमने एक बार फिर कोशल का उपकार किया। यह सूचना देकर तुमने पुरस्कार का काम किया है। अच्छा, तुम यहीं ठहरो। पहले उन आततायियों का प्रबन्ध कर लूँ।

× × × ×

अपने साहसिक अभियान में अरुण बन्दी हुआ और दुर्ग उल्का के आलोक में अतिरंजित हो गया। भीड़ ने जयघोष किया। सबके मन में उल्लास था। श्रावस्ती-दुर्ग आज एक दस्यु के हाथ में जाने से बचा। आवाल बृद्ध-नारी आनन्द से उन्मत्त हो उठे।

उषा के आलोक में सभा-मंडप दर्शकों से भर गया। बन्दी अरुण को देखते ही जनता ने रोष से हुँकार की—"वध करो ! राजा ने सब से सहमत होकर कहा, "प्राणदण्ड ! मधूलिका, बुलाई गई। वह पगली-सी आकर खड़ी हो गई। कोशल-नरेश ने

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: .

पूछा—"मधूलिका, तुझे जो पुरस्कार लेना हो, माँग ।" वह चुप रही।

राजा ने कहा—"मेरे निज की जितनी खेती है, मैं सब तुझे देता हूँ।" मधूलिका ने एक बार वन्दी अरुण की ओर देखा। उसने कहा "मुझे कुछ न चाहिये।" अरुण हँस पड़ा! राजा ने कहा—"नहीं, मैं तुझे अवश्य दूँगा। माँग ले।"

"तो मुझे भी प्राणदण्ड मिले।" कहती हुई वह वन्दी अरुण के पास जा खड़ी हुई।

अभ्यास के लिये

१—इस कहानी का सारांश लिखिए।

२—'मधूलिका' और 'अरुण' का चरित्र-चित्रण कीजिये।

३—इस कहानी की विशेषतायें बतलाइए।

४—इस कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

५—जयशंकर प्रसाद जी की भाषाशैली पर एक संक्षिप्त लेख लिखिये।

———

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

१८—बदरीनाथ की यात्रा

[लेखिका—श्रीमती महादेवी वर्मा]

महादेवी वर्मा हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ कवियित्री हैं। इनका जन्म संवत् १९६४ में फर्रुखाबाद में हुआ था। आपके पिता बाबू गोबिन्द प्रसाद वर्मा इन्दौर में प्रोफेसर थे। आपने 'क्रास्थवेट गर्ल्स कालेज' में शिक्षा प्राप्त की और प्रयाग विश्वविद्यालय से ससम्मान एम० ए० पास किया। आज कल आप 'प्रयाग महिला विद्यापीठ' की प्रिंसिपल हैं। अब तक आपके चार कविता-संग्रह—नीहार, रश्मि, नीरजा तथा सांध्यगीत प्रकाशित हो चुके हैं। यामा और दीपशिखा नामक आपके दो संकलन बड़ी सजधज से निकले हैं। 'नीरजा' पर 'सेक्सरिया पुरस्कार' भी आप प्राप्त कर चुकी हैं और इधर 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' का 'मंगला प्रसाद पारितोषिक' प्राप्त कर आप हिंदी की सर्वश्रेष्ठ कलाकार भी घोषित की गई हैं।

कई वर्ष आपने चाँद का संपादन भी किया था। पद्य के साथ आप प्रवाह पूर्ण गद्य भी लिखती हैं। 'अतीत के चल चित्र' और 'शृङ्खला की कड़ियाँ' इनकी बहुत सुन्दर गद्य-रचनाएँ हैं। काश्मीर—बदरीनाथ—प्रभृति यात्राओं का वर्णन भी आपने अनोखे एवं रोचक ढंग से किया है। आपके गद्य में संस्कृत के तत्सम शब्दों का बाहुल्य है। आपकी भावाभिव्यंजन की शैली आलंकारिक है। आपके व्यंग में करुणा और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

शिष्ट हास मिला हुआ रहता है। आपकी शैली पर व्यक्तित्व की अनोखी छाप है।

किसी वस्तु को प्राप्त कर लेने की इच्छा में जो मधुरता है वह उस इच्छा की पूर्त्ति में नहीं, इसका अनुभव मुझे बद्रीनाथ के धूप में पारे के समान झिलमिलाते हुए हिममय शिखरों के निकट पहुँच कर हुआ।

हनुमान चट्टी से पाँच-छः मील की जो दुर्गम और विकट चढ़ाई आरम्भ हुई थी, उसका अन्त एक ओर नर और दूसरी ओर नारायण नाम के पर्वतों तथा उनकी असंख्य श्रेणियों से घिरी हुई समतल भूमि में हुआ। स्वेत कमल की पंखुरियों के समान लगने वाले पर्वतों के बीच में, निरंतर कलकल नादिनी अलकनंदा के तीर पर बसी हुई, वह पुरी हिमालय के हृदय में छिपी हुई इच्छा के समान जान पड़ी। वृक्ष फूल और पत्तों का कहीं चिह्न भी नहीं था। जहाँ तक दृष्टि जाती थी निस्पन्द समाधि में मग्न तपस्विनी जैसी आडंबर-हीन सूनी पृथ्वी ही दिखाई देती थी और उतने ही निश्चल तथा उज्ज्वल हिमालय के शिखर ऐसे लगते थे मानों किसी शरद-पूर्णिमा की रात्रि में पहरा देते-देते चाँदनी समेत जम कर जड़ हो गये हों!

बदरीनाथ से एक मील बाहर वहाँ के वयोवृद्ध रईस नारायण दत्त जी ने फूलों से सजा हुआ एक सुन्दर बँगला बनवा रक्खा है, जिसमें कभी-कभी कोई संभ्रांत व्यक्ति ठहर जाता है, परंतु प्रायः

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

उसकी दीवारों को पथिकों का दर्शन दुर्लभ रहता है। पक्के तीर्थ-यात्री तो पंडे की संकीर्ण घर में भेंड़-बकरियों की तरह भरे रहने में ही पुण्य की प्राप्ति समझते हैं।

नारायणदत्त जी ऐसे विदेह गृहस्थ हैं, जो अपनी साधना का फल औरों को समर्पण कर देने में ही सिद्धि समझते हैं—बदरीनाथ ऐसे स्थान में उन्होंने बाग़ लगाया है, फलों के पेड़ लगाये हैं, आलू की खेती आरंभ की है और न जाने कितने उपयोगी कार्य किये हैं—इतनी वृद्धावस्था में भी दिन-दिन भर धूप में उन्हें काम करते और कराते देख कर हमें बड़ा विस्मय हुआ।

फूलों के निकट रहने की इच्छा से, एकांत के आकर्षण से, और अपने स्वभाव के कारण मैं वहीं ठहरने का निश्चय किया, परंतु हमारे सहयात्रियों में जो एक-दो सच्चे तीर्थ-यात्री थे वे उसी समय अपने पंडे का आतिथ्य स्वीकार करने चले गये। पंडा जी हमें भी बुलाने आये और उनकी नम्रता, उनका शील देखकर मेरा पंडों के प्रति उपेक्षाभाव तो दूर हो गया परंतु वह स्थान इतना रमणीक था कि उसे छोड़ने की कल्पना भी अच्छी नहीं लगी।

वहीं रुपये सेर दूध, रुपये सेर आटा, और एक आने की एक छोटी लकड़ी के हिसाब से लकड़ियाँ मंगा कर भोजन की व्यवस्था की गई। कदाचित् इस मँहगेपन के कारण ही बदरीनाथ में यात्रियों के स्वयं भोजन न बनाकर पंडे के यहाँ या बाजार में भोजन का प्रबंध करने की प्रथा है। इस प्रथा का अनुसरण करने के कारण

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पुरी में ठहरने वाले हमारे साथी इतने अस्वस्थ हो गये कि दूसरे ही दिन उन्हें उसे छोड़ देना पड़ा।

उस दिन तीसरे पहर तक उन रुपहले शिखरों को मन भर कर देखने के उपरांत अलकनन्दा का छोटा सा पुल पार करके हम सब पुरी देखने निकले, परन्तु देख कर केवल निराशा हुई। संकीर्ण गलियाँ और घर दुर्गन्धपूर्ण और गन्दे थे। देख कर सोचा कि जब हम अपने इतने बड़े तीर्थ-स्थान को भी स्वच्छ और सुन्दर नहीं रख सकते तब किसी और स्थान को स्वच्छ रखने की आशा तो दुराशामात्र है। उत्तुङ्ग स्वर्ग के चरणों से ही नरक की अतल गह- ऊँचा राई बँधी है, इसका प्रमाण ऐसे ही स्थानों में मिल सकता है, जहाँ पाप-पुण्य, पवित्रता-मलिनता और करुणा-क्रूरता के एक दूसरे में जीने वाले द्वंद प्रत्यक्ष आ जाते हैं।

असंख्य गण्यमान्य और नगण्य, धनी और दरिद्र, शक्ति-संपन्न और दुर्बल, सपरिजन और एकाकी यात्री वहाँ प्रति वर्ष जाते-आते हैं। धनिकों के सारे अभाव धन दूर कर देता है परंतु दरिद्रों के रहने का न अच्छा प्रबन्ध है, न भोजन का। फलतः अधिकांश यात्री रोगी होकर लौटते हैं और कुछ मार्ग में ही परम धाम का मार्ग ले लेते हैं।

उस दिन हम लोग दो मील दूर उस मंदिर को देखने गये जो द्रौपदी के गलने के स्थान पर उसकी स्मृति में बनाया गया है। वहाँ से थोड़ी ही दूर पर दो पर्वतों के बीच से निकलती हुई वंसुधारा

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

की पतली धार दिखाई दी, जो दूर से बादलों से छन कर आती हुई किरणों की तरह जान पड़ती थी। उसी के पास व्यास गुफा नाम की गुफा और तिब्बत जाने का मार्ग है, और वहीं तिब्बती लोगों के एक ग्राम का भग्नावशेष है, जिसमें अब भी कुछ लोग आते-जाते दृष्टिगोचर हो जाते हैं।

बदरीनाथ पुरी में देखने योग्य वस्तुओं में मंदिर और अलकनंदा के बीच में एक बहुत उष्ण जल का और एक ठंडे जल का श्रोत है। वहीं एक कुंड बना दिया गया है, जिसमें दोनों श्रोतों का जल मिला कर यात्रियों को स्नान कराया जाता है—संभव है यही तप्तकुँड इस स्थान की प्रसिद्धि का कारण हो।

मंदिर अपनी प्रसिद्धि के अनुरूप नहीं है और भीतर द्वारों पर कटघरे से लगा कर मानों भगवान् को भी बंधन में डाल दिया है। द्वारपाल उन्हीं को सरलता से प्रवेश करने देते हैं जो संभ्रांत व्यक्ति जान पड़ते हैं और मलिन वेष वाले दरिद्र घंटों सतृष्ण दृष्टि से उन जाने-आने वालों को देखते रहते हैं। भीतर जाकर लाल पगड़ी वाले सिपाहियों को अंतःद्वार की रक्षा करते देख कर हमारे विस्मय की सीमा नहीं रही। वे भी वस्त्रों को आदर की दृष्टि से देखते थे और दीन स्त्री-पुरुषों को हाथ पकड़-पकड़ कर रोक देते थे। उस द्वार को भी पार कर नर-नारायण की मूक प्रतिमा देखी, जिस पर न हर्ष था, न विषाद, न कभी कुछ होने की आशा ही थी। केवल उसके पुजारी की आँखें हर्ष से नाच रही थीं, वे दोनों हाथों से चाँदी की राशि बटोर रहे थे। भगवान के लिए नहीं परंतु उनके

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पुजारी की प्रसन्नता के लिए मैंने भी रजत खंड चढ़ा कर विषएण मुख से विदा ली।

दूसरे दिन हमने निकटवर्ती चाँदी के पहाड़ पर चढ़ना आरंभ किया, जिसमें बड़ा आनंद आया। कहीं-कहीं बर्फ़ जम कर ऐसी हो गई थी कि संगमर्मर का भ्रम हो जाता था। न वह गलता था और न कुछ विशेष ठंडा लगता था; उससे ठंडा तो अलकनंदा का जल था, जिसमें हाथ डालते ही उँगलियाँ ऐंठ जाती थीं। हवा में भी कुछ विशेष सर्दी नहीं मालूम हुई, मुझे तो गर्म कपड़े भी न पहनने पड़े। जहाँ बर्फ़ पिघल रही थी, वहाँ से खोद कर कुछ बर्फ़ खाई और कुछ गोले बना कर लाये।

तीसरे दिन प्रस्थान के समय फिर मंदिर में जा कर फूलों की माला न मिलने के कारण जंगली तुलसी के पत्तों की माला चढ़ा कर विदा हुए। पंडा जी सुफल बोलने के लिए उत्सुक थे, परन्तु मुझसे यह सुन कर कि मेरी यात्रा की सफलता मेरे मन पर निर्भर है, मौन हो रहे। उन्होंने मुझे प्रसाद दिया और मैंने उनके आतिथ्य के बदले में कुछ उन्हें अर्पण किया। केवल उनसे स्वर्ग के लिए प्रवेश-पत्र लेना मुझे स्वीकार न था। बँगले में लौट कर कैमरे का कुछ दुरुपयोग सदुपयोग किया। फिर नारायण दत्त जी से मिल कर उनके आतिथ्य के बदले में कुछ भेंट देनी चाही। परन्तु उन्हें तो भगवान के मंदिर में रहने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ था जो लक्ष्मी की चरण-सेवा करना जानते! वे हमारी श्रद्धाँजलि से संतुष्ट हो गये।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

बदरीनाथ हमारा ऐतिहासिक तीर्थ स्थान है, परंतु असंख्य यात्रियों में से दो-चार ने भी कभी इसकी दुरवस्था के कारण पर विचार किया होगा, ऐसा विश्वास नहीं होता। ग्राम गंदा है, मंदिर टूटा जा रहा है। तप्त कुंड की ओर अलकनंदा की धारा बहती जा रही है। संभव है, किसी दिन वह भी न रहे। ऐसी दशा में समर्थ यात्रियों के कर्तव्य की इतिश्री क्या इसी में है कि वे अपनी यात्रा का सफलता-पत्र लेकर लौट आया करें!

यात्रीगण और विशेषकर रावल जी ध्यान दें तो वह अलकनंदा के तीर पर बसी हुई पुरी अलकापुरी के समान ही सुंदर हो सकती है।

अभ्यास के लिये

१—बदरीनाथ के आस-पास के दर्शनीय स्थानों के नाम बतलाइए और उनका संक्षेप में वर्णन कीजिए।

२—तप्तकुंड और अलकनंदा क्या हैं? इनका विवरण लिखिए।

३—श्री महादेवी वर्मा का परिचय लिखिए तथा उनकी भाषा-शैली पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

———

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

१६—लोकनायक तुलसीदास

[लेखक—पंडित हजारीप्रसाद द्विवेदी]

पंडित हजारीप्रसाद द्विवेदी का जन्म स्थान बलिया जिले का एक ग्राम है। आपने सर्व प्रथम संस्कृत विशेषतः ज्योतिष-शास्त्र का अध्ययन आरंभ किया; तत्पश्चात् आपने बंगला तथा अँग्रेजी में भी प्रवेश करके सफल कलाकार होने का परिचय दिया है। कुछ दिनों तक आप काशी-विश्वविद्यालय में भी रहे। आजकल आप विश्व-कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर के शान्ति-निकेतन बोलपुर में अध्यापन-कार्य कर रहे हैं।

द्विवेदी जी हिन्दी, अँग्रेजी, संस्कृत, बंगला प्रभृति भाषाओं के विद्वान् हैं एवं भक्ति-कालीन साहित्य के मर्मज्ञ हैं। आपने तुलसी, सूर, कबीर विद्यापति,, चंडीदास, प्रभृति हिन्दी तथा बंगाली भक्त कवियों का गवेषणा-पूर्ण अध्ययन किया है। हिन्दी समालोचकों में आपका स्थान अत्यन्त गौरव का है। आपकी आलोचनाएँ मौलिक, ठोस और व्यक्तित्व की छाप रखने वाली हैं।

आपने सूर-साहित्य, हिन्दी साहित्य की भूमिका, सन्त कबीर, बाण की आत्मकथा—प्रभृति उच्चकोटि के साहित्यिक ग्रथों की रचना की है। आपके खोजपूर्ण लेख 'विशाल भारत' तथा अन्य मासिक पत्रों में प्रकाशित होते रहते हैं। आपकी भाषा शुद्ध हिंदी होती है; जिसमें प्रांजलता,

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

भावप्रवणता, सुबोधता आदि मुख्य गुण हैं। आपने प्रायः संस्कृत के तत्सम किन्तु प्रचलित शब्दों का ही प्रयोग किया है। आपकी भाषा पर रवींद्रनाथ ठाकुर की काव्यमयी शैली का भी प्रभाव यत्र-तत्र परिलक्षित होता है। बंगाल के प्रभाव से आपकी शैली में कोमल कान्त पदावली का भी समावेश हो गया है।

प्रस्तुत लेख आपकी पुस्तक 'हिन्दी साहित्य की भूमिका' से उद्धृत किया गया है।

डाक्टर ग्रियर्सन ने कहा है कि बुद्धदेव के बाद भारत में सबसे बड़े लोकनायक तुलसीदास थे। ये असाधारण प्रतिभा लेकर उत्पन्न हुये थे। जिस युग में इनका जन्म हुआ था, उस युग के समाज के सामने कोई ऊँचा आदर्श नहीं था। समाज के उच्च स्तर के लोग विलासिता के पंक में उसी तरह मग्न थे जिस प्रकार उन्हें कुछ वर्ष पूर्व सूरदास ने देखा था। निचले स्तर के पुरुष और स्त्री दरिद्र, अशिक्षित और रोग ग्रस्त थे। वैरागी हो जाना मामूली बात थी। जिसके घर की संपत्ति नष्ट हो गई, या स्त्री मर गई, संसार में कोई आकर्षण नहीं रहा वह चट संन्यासी हो गया। सारा देश नाना सम्प्रदाय के साधुओं से भर गया था। 'अलख' की आवाज गर्म थी, हालाँकि ये 'अलख के लखने वाले' कुछ भी नहीं लख सकते थे। नीच समझी जाने वाली जातियों में कई पहुँचे हुए महात्मा हो गये थे; उनमें आत्म-विश्वास का संचार हो गया था, जैसा कि साधारणतः हुआ करता है; और शिक्षा और

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

संस्कृति के अभाव में यही आत्म-विश्वास दुर्वह गर्व का रूप धारण कर गया था। आध्यात्मिक साधना से दूर पड़े हुए ये गर्वमूढ़ पंडितों और ब्राह्मणों की बराबरी का दावा कर रहे थे। परंपरा से सुविधा-भोग करने की आदी ऊँची जातियाँ इससे चिढ़ करती थीं। समाज में धन की मर्यादा बढ़ रही थी। दरिद्रता हीनता का लक्षण समझी जाती थी। पण्डितों और ज्ञानियों का समाज के साथ कोई भी सम्पर्क नहीं था। सारा देश विशृङ्खल, परस्पर विच्छिन्न, आदर्श-हीन और विना लक्ष्य का हो रहा था। एक ऐसे आदमी की आवश्यकता थी जो इन परस्पर विच्छिन्न और दूर विभ्रष्ट टुकड़ों में योग-सूत्र स्थापित करे। तुलसीदास का आविर्भाव ऐसे समय में ही हुआ।

भारतवर्ष का लोकनायक वही हो सकता है, जो समन्वय कर सके, क्योंकि भारतीय समाज में नाना भाँति की परस्पर-विरोधिनी संस्कृतियाँ, साधनाएँ, जातियाँ, आचार-निष्ठा और विचार-पद्धतियाँ प्रचलित हैं। बुद्धदेव समन्वयकारी थे, गीता में समन्वय की चेष्टा है, और तुलसीदास भी समन्वयकारी थे। वे स्वयं नाना प्रकार के सामाजिक स्तरों में रह चुके थे। ब्राह्मण-वंश में उनका जन्म था, दरिद्र होने के कारण उन्हें दर-दर भटकना पड़ा था, गृहस्थ-जीवन की सबसे निकृष्ट आसक्ति के वे शिकार हो चुके थे, अशिक्षित और संस्कृति-विहीन जनता में वह रह चुके थे; और काशी के दिग्गज पण्डितों तथा संन्यासियों के संसर्ग में उन्हें खूब छाना पड़ा था। नाना पुराण-निगमागम का अभ्यास उन्होंने किया

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

था, और लोकप्रिय साहित्य और साधना की नाड़ी उन्होंने पहचानी थी। पण्डितों ने सप्रमाण सिद्ध किया है कि उस युग में प्रचलित ऐसी कोई काव्य-पद्धति नहीं थी जिस पर उन्होंने अपनी छाप न लगा दी हो। चंद के छप्पय, कबीर के दोहे, सूरदास के पद, जायसी की दोहा-चौपाइयाँ, रीतिकारों के सवैया-कवित्त, रहीम के बरवै, गाँववालों के सोहर आदि जितनी प्रकार की छन्द-पद्धति उन दिनों लोक में प्रसिद्ध थीं, सबको उन्होंने अपनी असाधारण प्रतिभा के बल पर अपने रँग में रँग दिया।

लोक और शास्त्र के इस व्यापक ज्ञान ने उन्हें अभूतपूर्व सफलता दी। उनका सारा काव्य समन्वय की विराट् चेष्टा है। लोक और शास्त्र का समन्वय, गार्हस्थ और वैराग्य का समन्वय, भक्ति और ज्ञान का समन्वय, भाषा और संस्कृति का समन्वय, निर्गुण और सगुण का समन्वय, कथा और तत्वज्ञान का समन्वय, ब्राह्मण और चाण्डाल का समन्वय पांडित्य और अपांडित्य का समन्वय—'रामचरितमानस' शुरू से आख़ीर तक समन्वय का काव्य है। इस महान् समन्वय के प्रयत्न का आधार उन्होंने रामचरित को चुना। वस्तुतः इससे सुन्दर चुनाव हो नहीं सकता। कुछ पश्चिमी समालोचकों ने कहा है कि कविता अच्छी करना चाहते हो तो विषय अच्छा चुनो। राम-नाम का प्रचार उन दिनों बड़े ज़ोरों पर था। निर्गुण भाव से भजन करनेवाले भक्तों ने इसी नाम को अपनाया था। लोक में इस शब्द की महिमा प्रतिष्ठित हो चुकी थी। तुलसीदास के लिये काम इतना ही बाक़ी था कि लोकगृहीत इस नाम को

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

मर्यादा-पुरुष के चरित्र से संबद्ध कर दिया जाय। कृष्ण-भक्ति खूब प्रचलित थी, पर तुलसीदास मन-ही-मन मधुर भाव की उपासना पर झुँझलाये हुए थे। वे इसके विरुद्ध तो कुछ कह नहीं सकते थे, क्योंकि यह 'हरि-भक्ति-पथ' था और उनके उद्भावित पथ से कम 'श्रुतिसम्मत' न था, पर उन्होंने भक्ति का प्रसंग आते ही दास्यभाव की भक्ति को श्रेष्ठ कह कर अप्रत्यक्ष रूप में मधुर भाव का प्रत्याख्यान कर दिया। निर्गुणियों पर भी वे उसी तरह झुँझलाये हुए थे, पर यह पथ भी 'श्रुतिसम्मत' था, इसीलिये इसके विरुद्ध बोलने में भी उनका मुँह बन्द था, और इसीलिये वे इसे मान कर भी नहीं मानना चाहते थे। प्रसंग आते ही वे राम के सगुण रूप पर ज़ोर देते हैं, कथा में कहीं किसी भक्त से भगवान् की भेंट हो गई तो चट उसने वरदान में माँगा 'हे राम, तुम्हारा यह सगुण रूप ही मेरे मन में बसे, निर्गुण नहीं।' इसी तरह उच्च वर्ण के होने के कारण स्वभावतः ही उस युग के तथाकथित 'वर्णधर्मों' की बढ़-बढ़ कर की हुई बातें उन्हें बुरी लगती थीं, पर कथा प्रसंग में सर्वत्र उनकी महिमा गाई है; हाँ, अवश्य ही इस बात के लिए उनमें भक्ति का होना आवश्यक माना गया है। इस समस्या का उन्होंने यही समन्वय किया है कि अगर छोटी जाति का आदमी भक्त हो, तो वह मुहूर्त भर में ऊँची जाति के भक्तों से ऊपर उठ जाता है, 'भरत-सम भाई' हो जाता है। उनके राम अधम-उधारन हैं, जो हठपूर्वक अधमों का उद्धार करते हैं। यह ध्यान देने की बात है कि तुलसीदास ने रूप की अपेक्षा नाम को श्रेष्ठ बताया है, यहाँ

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

तक कि 'ब्रह्म राम तें नाम बड़ा' है। अर्थात् निर्गुण भाव से भजन किया हो, या सगुण भाव से, नाम की महिमा में कोई सन्देह नहीं। इस सिद्धान्त के द्वारा उन्होंने सहज ही अपने विरुद्ध-वादियों को भी अपनी श्रेणी में ले लिया है।

समन्वय का मतलब है कुछ झुकना, और कुछ दूसरों को झुकने के लिए बाध्य करना। तुलसीदास को ऐसा करना पड़ा है। यह करने के लिये जिस असामान्य दक्षता की ज़रूरत थी वह उनमें थी। फिर भी झुकना झुकना ही है। यही कारण है कि 'रामचरित मानस' के कथा-काव्य की दृष्टि से अनुपमेय होने पर भी उसके प्रवाह में बाधा पड़ी है। अगर वह विशुद्ध कविता की दृष्टि से लिखा जाता, तो कुछ और ही हुआ होता। यहाँ दार्शनिक मत की विवेचना है, तो वहाँ भक्ति-तत्त्व की व्याख्या। फिर भी अपनी असामान्य दक्षता के कारण तुलसीदास ने इस बाधा को यथा-संभव कम किया है। अपने प्रयत्न में वे इतने अधिक सफल हुए हैं कि भावुक समालोचक को उसमें कोई दोष ही नहीं दिखाई देता। कथा का झुकाव इतनी मार्मिकता के साथ पहचाना गया है कि यह बात आदमी प्रायः भूल जाता है कि 'रामचरित मानस' का लक्ष्य केवल कथा ही नहीं और कुछ भी है। शुष्क तत्त्वज्ञान तुलसीदास को कभी प्रिय नहीं हुआ। जब कभी उसकी चर्चा वे करते हैं तो कवि की भाषा में। उपमाओं और रूपकों के प्रयोग से विषय अत्यन्त साफ़ हो जाता है, और जहाँ कविता करने के लिए तुलसी-

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

दास कवि की भाषा का प्रयोग करते हैं, वहाँ वे अद्वितीय नज़र आते हैं।

चरित्र-चित्रण में तुलसीदास अतुलनीय हैं। उनके सभी पात्र हाड़-मांस के बने हमारे ही जैसे जीव हैं। उनमें जो अलौकिकता है वह भी मधुर और समझ में आने लायक है। उनके पात्रों के प्रत्येक आचरण में कोई न कोई विशेष लक्ष्य होता है। मानव-जीवन के किसी न किसी अंग पर उनसे प्रकाश पड़ता है, या किसी न किसी सामाजिक वा वैयक्तिक कुरीति की तीव्र आलोचना व्यक्त होती है, या मानव-मानव में सद्भावना की पुष्टि की ओर इशारा रहता है। लीला के लिए लीला-गान उन्होंने कहीं नहीं किया। वे आदर्शवादी थे, और अपने काव्य से भावी समाज की सृष्टि कर रहे थे। वे उस देश में पैदा हुए थे जहाँ कल्पना की जा सकती है कि राम के जन्म के साठ हज़ार वर्ष पहले रामायण-काव्य लिखा गया (ब्रह्म वैवर्त पुराण में), अर्थात् जहाँ कवि भविष्य का द्रष्टा और स्रष्टा समझा जाता है। तुलसीदास ऐसे ही भविष्य-स्रष्टा थे आज तीन सौ वर्ष बाद इस विषय में कोई संदेह नहीं रह सकता कि उन्होंने भावी समाज की सृष्टि सचमुच की थी। आज का उत्तर भारत तुलसीदास का रचा हुआ है। वही इसके मेरु-दंड हैं।

भाषा की दृष्टि से भी तुलसीदास की तुलना हिन्दी के किसी अन्य कवि से नहीं हो सकती। जैसा कि पहले ही बताया गया है, उनकी भाषा में भी एक समन्वय की चेष्टा है। तुलसीदास की भाषा जितनी ही लौकिक है उतनी ही शास्त्रीय। उसमें संस्कृत का मिश्रण

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

बड़ी चतुरता के साथ किया गया है। जहाँ जैसा विषय होता है भाषा अपने-आप उसके अनुकूल हो जाती है। तुलसीदास के पहले किसी ने इतनी मार्जित भाषा का उपयोग नहीं किया था। काव्योपयोगी भाषा लिखने में तो तुलसीदास कमाल करते हैं। उनकी 'विनय-पत्रिका' में भाषा का जैसा ज़ोरदार प्रवाह है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। जहाँ भाषा साधारण और लौकिक होती है, वहाँ तुलसीदास की उक्तियाँ तीर की तरह सीधे चुभ जाती हैं, और जहाँ शास्त्रीय और गंभीर होती है, वहाँ पाठक का मन चील की तरह मँडरा कर प्रतिपाद्य सिद्धान्त को ग्रहण कर उड़ जाता है।

मानव-प्रकृति का ज्ञान तुलसीदास से अधिक उस युग में किसी को नहीं था। पर यह एक आश्चर्य की बात है कि उन्होंने विश्व-प्रकृति को अपने काव्य में कोई स्थान नहीं दिया। इसमें संदेह नहीं कि जहाँ कहीं उन्होंने थोड़ी-सी चर्चा की है वहीं उसमें कमाल किया है, पर असल में वे इससे उदासीन रहे। जो भावुक सहृदय पद-पद पर फूल-पत्तियों को देख कर मुग्ध हो जाता है, नदी-पहाड़ को देख कर तन-मन बिसार देता है, वह तुलसीदास के काव्य का लक्ष्यभूत श्रोता नहीं है। तुलसीदास प्रकृत्या भावुकता को पसंद नहीं करते थे। एक ही जगह उनकी भावुकता 'पुलक-गात' और 'लोचन सजल' के रूप में प्रकट होती है और वह भगवान् के 'करुणायतन' या 'मोहन मयन' रूप को देख कर। इससे भी अजीब बात यह है कि उनकी उपमाओं, रूपकों और उत्प्रेक्षाओं में कहीं-कहीं काव्य-गत रूढ़ियों का बुरी तरह पालन किया गया

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

है। उनके जैसे प्रतिभाशाली कवि के लिए, जो इच्छा करते ही नई-नई उपमाओं और उत्प्रेक्षाओं का ढेर लगा सकता था, जो इस गुण में अतुलनीय था, यह बात एक अजीब सी लगती है। शायद इस बात का भी समाधान उनकी समन्वयात्मिका प्रतिभा के द्वारा ही किया जा सकता है, जो नवीनता के साथ-साथ प्राचीनता का सामञ्जस्य-विधान करती थी।

तुलसीदास कवि थे, भक्त थे, पंडित-सुधारक थे, लोकनायक थे और भविष्य के स्रष्टा थे। इन रूपों में उनका कोई भी रूप किसी से घटकर नहीं था। यही कारण था कि उन्होंने सब ओर से समता (Balance) की रक्षा करते हुए एक अद्वितीय काव्य की सृष्टि की, जो अब तक उत्तर भारत का मार्ग-दर्शक रहा है, और उस दिन भी रहेगा जिस दिन नवीन भारत का जन्म हो गया होगा।

अभ्यास के लिए

१—तुलसीदास के जन्म के समय में हिन्दू समाज की कैसी अवस्था थी?

२—समन्वय से आप क्या समझते हैं? भारतवर्ष का लोक-नायक वही क्यों हो सकता है जिसमें समन्वय करने की क्षमता हो?

३—तुलसीदास जी ने अपनी प्रतिभा से किस-किस क्षेत्र में कैसा समन्वय उपस्थित किया?

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

४—तुलसी के चरित्र-चित्रण एवं भाषा की मुख्य विशेषताएँ बतलाइए।

५—तुलसीदास हमारे समक्ष किन-किन रूपों में दिखलाई पड़ते हैं?

६—पं० हजारी प्रसाद द्विवेदी की आलोचना एवं भाषा-शैली पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

२०—परिश्रान्त-पथिक

[लेखक—श्री वियोगी हरि]

श्री वियोगी हरि का जन्म सं० १९५३ वि० में छतरपुर रियासत में हुआ था। आपका वास्तविक नाम हरिप्रसाद द्विवेदी है, किन्तु आप अपने उपनाम से ही अधिक प्रसिद्ध हैं। आपके जीवन का अधिकांश भाग लोक-सेवा में ही बीता है। अछूतों के आन्दोलनों में आपने बड़ी दिलचस्पी से भाग लिया है और हरिजन-आश्रम दिल्ली में रह कर इस सम्बन्ध में ठोस कार्य किया है। हिन्दी-प्रचार के लिये भी आपने अधिक परिश्रम किया है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के करांची अधिवेशन में आपको सभापति चुनकर हिन्दी जगत ने आपको सम्मानित किया है।

वियोगी हरि जी बड़े ही सरस, भावुक-भक्त एवं श्रेष्ठ गद्य-गीतकार हैं। ब्रज-भाषा और ब्रज-साहित्य पर आपकी विशेष ममता है। 'भक्तों की भजनावली' 'ब्रज-माधुरीसार' आपके संकलन हैं। 'वीर-सतसई' पर आपको "मंगला प्रसाद पारितोषिक' भी प्राप्त हो चुका है।

हिन्दी गद्य-गीतकारों में हरि जी का स्थान बहुत ऊँचा है। आपके गद्य-गीत भक्ति के उद्‌गार से ओत-प्रोत हैं। आपकी भाषा विषयों के अनुसार परिवर्तित होती है किन्तु आपका व्यक्तित्व सर्वत्र प्रतिबिम्बित

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

होता रहता है। आपकी शैली में जहाँ एक ओर पाण्डित्य-प्रदर्शन, अलंकार-योजना एवं दीर्घ समासों की छटा है वहाँ दूसरी ओर हृदय के भावों को व्यक्त करने के लिए घरेलू भाषा की मिठास भी है। भावावेश की अवस्था में आपकी भाषा सरल एवं-भावपूर्ण होती है; वाक्य ज़रा छोटे और शब्द बोलचाल के होते हैं। आपने भाषा को सरस और चपल बनाने के लिये यत्र-तत्र उर्दू शब्दों और मुहावरों का भी प्रयोग किया है। भावानुभूति में सचाई होने के कारण आपकी शैली में ओज, प्रभाव और बल विद्यमान रहता है। आपके भाव-मय गद्य-गीत व्यंग्य-पूर्ण और अन्योक्ति-मय होते हैं। 'अन्तर्नाद' प्रेम-योग' 'साहित्य विहार' आदि आपके प्रमुख गद्य-काव्य संग्रह है।

प्रस्तुत पाठ आपके गद्य-काव्य का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

"अरे भैया घड़ी भर विश्राम तो करले। इस पेड़ की डाल पर अपनी पोटली टाँग दे, और बैठकर दो घूँट ठंडा पानी पी ले। कहाँ से आ रहा है, भैया ? पसीने से लथपथ हो रहा है। साँस पेट में नहीं समाती। पैर सूज गये हैं। कलेजा भूख के मारे मुँह को आ रहा है। अभी और कहाँ तक जाना है, भाई ?"

"क्या पूछते हो ! कुछ पता नहीं, कहाँ तक जाना है।"

'ऐं ! यह कैसी बात ! कुछ पता नहीं !"

"हाँ ! भाई, कुछ पता नहीं। चलते-चलते, न जाने, कितने

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

दिन हो गये, पर अभी तक मुझे यह मालूम नहीं कि मैं किधर जा रहा हूँ। अनेक नगर, गाँव, खेड़े, नदी, नाले, पहाड़, टीले, जंगल पार करके जब मैं आगे नजर फेंकता हूँ तब अनन्त क्षितिज-रेखा ज्यों की त्यों ही दिखाई देती है! कभी-कभी तो मैं जहाँ से चलता हूँ वहीं फिर घूम-घाम कर आ पहुँचता हूँ। कोई मुझे मेरा पता भी तो ठीक-ठीक नहीं बतलाता। संगी-साथी भी अब तक कोई मन का नहीं मिला। गठरी के बोझ के मारे गर्दन झुक गई है, सिर फटा जाता है। टेकने की लाठी भी गिर-गिर जाती है। बड़ी आफ़त है। क्या करूँ—क्या न करूँ?"

"इस पोटली में क्या-क्या है?"

"सुनकर हँसोगे। सिवा कंकड़-पत्थर के रखा ही क्या है?"

"तो फेंक क्यों नहीं देते?"

"कैसे फेंक दूँ? लालच बुरी बला है। लोग कहते हैं कि एक दिन यह कंकड़-पत्थर हीरे-मोती हो जायेंगे। राम जाने उनकी इस भविष्यवाणी में कहाँ तक तथ्य है?"

"तो क्या तुम इन्हीं हीरे-मोतियों की टोह में बावले बने घूम रहे हो? अजीब आदमी हो! इन कंकड़-पत्थरों को फेंक-फाँक कर उस सच्चे हीरे की खोज क्यों नहीं करते, जिसे पाकर तुम्हारी सारी यात्रा सफल हो जायगी?"

"तेरा हीरा हेराइगा कचरे में"—यह विरागभरी स्वरावली कहीं से प्रताड़ित हो हम लोगों के कानों में गूँजने लगी।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पथिक ने उस गान को सुनकर पूछा—

"क्यों भाई! तुम मुझसे इसी हीरे के खोजने के लिए कहते थे? यह हीरा कहाँ मिलेगा?"

"तुम्हारी इसी फटी-पुरानी गुदड़ी में कहीं छिपा होगा। उसके लिए तुम्हें पूरब-पश्चिम न भटकना पड़ेगा। अहा! उस हीरे की दमक हजारों सूर्य और चन्द्र के प्रकाश से कहीं बढ़कर है। उसका जौहर हर एक नहीं जानता। लाख क्या, करोड़ में कहीं उसका एक जौहरी मिलेगा।"

"इस फटी-पुरानी गुदड़ी में! फिर दिखाई क्यों नहीं देता?"

"धूल-भरा है न?"

"फिर कैसे दिखाई देगा?"

"दृष्टि निर्मल करो। दिव्य दृष्टि से उसका दर्शन होगा। दिव्य दृष्टि का अंजन तुम्हें इस वृक्ष के नीचे ही मिल जायगा। धीरज धरो, पथिक! बहुत भटक चुके, अब चलने-फिरने की जरूरत नहीं। तुम चाहोगे तो वह हीरा इसी क्षण मिल जायगा।"

पथिक की आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी और उसकी सफ़ेद दाढ़ी पर से मोती जैसी बूँद टपक पड़ीं।

अभ्यास के लिये

१—परिश्रांत पथिक का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

२—इस पाठ से आपको क्या शिक्षा प्राप्त होती है?

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

३—परिश्रांत पथिक, कंकड़-पत्थर फटी-पुरानी गुदड़ी और हीरा आदि का आध्यात्मिक तात्पर्य क्या है ?

४—वियोगी हरि का संक्षेप में परिचय दीजिए और उनकी भाषा-शैली पर अपने विचार प्रकट कीजिए ।

---

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

परिशिष्ट

टिप्पणी

१—वन्देमातरम्

प्रस्तुत पाठ में बन्देमातरम् गीत की विशेषता बड़े कौशल के साथ बतलाई गई है। काका कालेलकर जी ने देश-प्रेम के साथ ही साथ भ्रातृप्रेम का संदेशा भी इसमें निहित कर दिया है।

पंचायतन—पांच देवताओं के सम्बन्ध में। माताजी—माता दुर्गा। स्तोत्र—किसी देवता का छन्दोबद्ध स्वरूप-कथन या गुण कीर्तन। स्वदेशी की हलचल--स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग में चलाया गया आन्दोलन; विदेशी वस्तुओं का वहिष्कार। महिषासुर मर्दिनी—एक असुर जो रंभ नामक दैत्य का पुत्र था। इसकी आकृति भैंसे के समान थी। देवी दुर्गा ने इसका बध किया था। कर—टैक्स; महसूल। जाह्नवीयमुना-विगलित करुणा-पुष्प-पीयूष—गंगा और यमुना के संगम से बहा हुआ दया रूपी पवित्र अमृत। वरदहस्त—कृपा का हाथ। सहोदर—सगे भाई।

२—शिक्षा

इस लेख में माननीय संपूर्णानन्दजी ने नागरिकता की दृष्टि से शिक्षा की आवश्यकता एवं उसकी उपयुक्तता पर सुन्दर प्रकाश डाला है।

सम्यक्—पूर्णरीति से भलीभाँति। दायित्व—जिम्मेदारी। स्पर्धा—होड़। बहुज्ञ—अनेक विषय का ज्ञान। आत्मसाक्षात्कार—अपने आपको समझना।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

लाञ्छन—दोष, कलंक । ब्रह्मवेत्ता—ब्रह्मज्ञानी। लोकसंग्रहरत—लोककल्याण में लगे हुए। परार्थ—परोपकार । अन्तर्राष्ट्रीय—(अन्तर्राष्ट्रीय) विभिन्न राष्ट्र सम्बन्धी । नानात्व की—अनेक प्रकार को । पार्थक्य—भिन्न-भिन्न ।

३—परीक्षा

इस लेख में मिश्र जी ने व्यंग्य एवं हास्य द्वारा परीक्षा का सुन्दर चित्र खींचा है ।

खोट—खराबी । आडंबर—दिखावा । भरमाला—गुप्त बात, छिपी हुई ।

४—चारु-चरित्र

पं० बालकृष्ण भट्ट ने इस लेख में चरित्र की महत्ता पर प्रकाश डाला है । उनकी सम्मति में सच्चरित्र होना नितान्त आवश्यक है । सच्चरित्र मनुष्य का सब कहीं सम्मान होता है । वह-निर्धन होने पर भी चरित्रहीन श्रीमान् से कहीं अधिक आदरणीय है ।

नबी—ईश्वर का दूत। अंबिया—नबी का बहुवचन । औलिया—सिद्ध । गुरोर्गुरुः—गुरु का भी गुरु। अभिजात्य—कुलीनता । उत्कोच—घूस । अनुष्ठान—आचरण । सूत्र—मूलमंत्र, माप। अपिच—और अक्षीणोवित्ततः क्षीणः वृत्तस्तु हतोहतः—धनहीन व्यक्ति तो केवल क्षीण ही है परन्तु चरित्रहीन तो मृत है । जीवन्मुक्त—परमज्ञानी । प्रवणचित्त—दत्तचित्त ।

५—क्षमा

इस कहानी द्वारा प्रेमचंद जी ने साम्प्रदायिक भेदभाव एवं धार्मिक कट्टरपन को अवांछित ठहरा कर दया, एवं क्षमा को सर्वोच्च आदर्श सिद्ध किया है ।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कलीसाओं—ईसाइयों का गिर्जाघर। गरनाता—स्पेन का एक शहर, यह शहर स्पेन के मुसलमान शासकों की राजधानी था। अलहमरा—एक शहर का नाम। आबायें—वस्त्र विशेष। अमामें—पगड़ी। अतीतकाल—बीते हुए समय की। आक्षेप—निंदा, ताना। अविचलित—स्थिर। उन्मत्त—पागल। तौहीन—अपमान। अरमान निकाल लो—इच्छा पूरी कर लो। एक कावा-एक चक्कर। जिच-मात देना, हराना। अदम्य-अटल। आभा-चमक। द्वन्द्व—हलचल। अवरुद्ध कंठ से—भरे हुए गले से। रसूलपाक—पवित्र पैगम्बर। आक़बत—अन्त। समाजत—प्रार्थना। दीन—मज़हब। असाध्य—कठिन। रौद्ररूप—विकराल या डरावना स्वरूप।

६—वीरत्व

मिश्रबन्धुओं का यह एक सुन्दर मनोवैज्ञानिक लेख है जिसमें वीरत्व का महत्व, उसका मूल आधार एवं तत्सम्बन्धी वांछनीय गुणादि की विशद चर्चा की गई है।

स्थायीभाव—जो भाव रस का आस्वादन होने तक मन में ठहरे रहते हैं और उसे निमग्न कर डालते हैं—वे स्थायीभाव कहलाते हैं। स्थायीभाव नौ प्रकार के माने गए हैं—रति, हास, क्रोध, उत्साह, भय, जुगुप्सा, विस्मय, शोक और निर्वेद। कुछ आचार्य 'वात्सल्य' को दसवां स्थायीभाव मानते हैं। उदधिउल्लंघन—सीता की खोज में हनूमान जी समुद्र लाँघकर लंका पहुँचे थे। यहाँ पर इसी से अभिप्राय है। द्रोणाचलआनयन—मूर्छित लक्ष्मण के लिये हनूमान जी संजीवनीबूटी का पहाड़ उठा लाए थे।

भवभूति और महावीर-चरित्र—भवभूति संस्कृत-साहित्य के एक महाकवि

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

और उत्कृष्ट नाट्यकार हैं। इनके 'उत्तर रामचरित', 'मालती माधव' और 'महावीर चरित'—नामक तीन नाटक अत्यन्त प्रसिद्ध एवं उच्चकोटि के हैं। इन तीनों नाटकों का हिन्दी में भी अनुवाद हो चुका है।

श्लाघ्य = प्रशंसनीय। वीरभोग्या वसुंधरा = वीर पुरुष ही पृथ्वी का भोग करते हैं।

७—अंगूठी

प्रस्तुत पाठ श्रीमती चन्द्रावती त्रिपाठी का एक अत्यन्त विचारपूर्ण एवं सरस लेख है। इसमें इन्होंने अंगूठी के सार्वजनिक प्रयोग एवं उसके महत्व पर बड़ी कुशलता के साथ प्रकाश डाला है।

कालिदास और शकुन्तला—संस्कृत के महाकवि और नाटककार कालिदास कृत एक सुप्रसिद्ध नाटक 'अभिज्ञान शाकुन्तल' (शकुन्तला) है। इसमें कण्व ऋषि द्वारा पालित विश्वामित्र की पुत्री शकुन्तला एवं महाराज दुष्यंत के गांधर्व-विवाह की कथा है। दुष्यन्त कण्व के आश्रम से लौटने पर शाप के कारण शकुन्तला को भूल जाता है और वह उसे त्याग देता है। बाद में अपनी अँगूठी देखकर उसे फिर सारी घटना याद आ जाती है और वह शकुन्तला को पुनः प्राप्त कर लेता है।

विशाखदत्त और मुद्राराक्षस—संस्कृत नाटककार विशाखदत्त का लिखा हुआ 'मुद्राराक्षस' एक राजनैतिक नाटक है। इसमें राजा नन्द के मंत्री राक्षस एवं चन्द्रगुप्त मौर्य के सहायक चाणक्य की कूटनीति का चित्रण है। चाणक्य राक्षस की नामांकित अंगूठी पाकर एक जाली आदेश पत्र बनाता है और उसी के द्वारा चन्द्रगुप्त को राजा बनाता है और राक्षस को उसका मंत्री बनने

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

को विवश करता है। हिन्दी में इसका अनुवाद भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने किया है।

आदान-प्रदान—अदला-बदली।

बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय—बंगला भाषा के एक सुप्रसिद्ध उपन्यासकार और निबन्ध लेखक।

८—बीज की बात

राय कृष्णदास के 'सुधांशु' से उद्धृत 'बीज की बात' एक आत्मकथा के रूप में गद्य-काव्य है। इसमें बीज के उन प्रयत्नों का चित्रण है जो उसने कृषकों से बदला लेने की भावना से प्रेरित हो किए हैं। लेखक हमें यह शिक्षा देता है कि यदि मनुष्य साहसी, उद्यमी, बुद्धिमान और पराक्रमी है तो वह बड़े से बड़ा काम कर सकता है।

स्वयंरूह—वनस्पति वंश। जकात—राजकर। भूमिपाल—जमीदार। प्रतिहिंसा—बदला। कृतान्त—यम। वड़वा—घोड़ी। तीसरे के पास बन्धक रखकर—तीसरे का कथन मान कर। सोंधी उसांस ली—पृथ्वी से सोंधी गंध उठने लगी। खल्वाट—तृण रहित। कुंतल—बाल। पयोदान—दूध या पानी का दान। प्रतिक्रिया—रोकने का उपाय। कासनी—हल्का बादामी। एकोऽहं बहुस्यामः—एक में बहुत बनजाऊँ। षडेते आदि श्लोक का अनुवाद—जहाँ उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति और पराक्रम ये छः गुण हैं वहाँ देवता भी सहायता करते हैं।

---

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

९—भगवान् श्रीकृष्ण

स्वर्गीय पं० पद्मसिंह शर्मा ने इस लेख में श्रीकृष्ण के पावन चरित्र पर सम्यक् प्रकाश डाला है।

धराधाम—पृथ्वी। प्रभाती—प्रातः काल का गीत। विभूति—महान् पुरुष। घनश्याम—श्रीकृष्ण, काला बादल। यदा यदाहि—गीता में भगवान् का प्रसिद्ध वाक्य—जब जब धर्म की हानि होती है तब तब मैं अवतार लेता हूँ। मर्सिया—शोक गीत। विडंबना—उपहास, प्रतिकूलता। विहाग—एक गान विशेष। कर्मयोगी—लोक-कल्याण के लिए काम करने वाला व्यक्ति। उद्योगपर्व—महाभारत का एक विभाग। दुरभिसन्धि—षड्यन्त्र। प्रत्याख्यान—अपमानजनक उत्तर। लोक-संग्रह का तत्व—वे बात जिन पर संसार का कल्याण आश्रित है। कर्त्तव्य पराङ् मुख—कर्त्तव्य से हट जाने वाला।

१०—आत्मसंस्कार और संगति

शुक्ल जी का यह एक विचारात्मक निबन्ध है। आत्मसंस्कार के लिए युवा पुरुषों को क्या करना चाहिए और किस प्रकार की संगति रखना चाहिए उन बातों का इसमें बड़े विस्तार से वर्णन किया गया है।

आत्मसंस्कार—आत्मसुधार, अपने आपको सुधारना।

वाजिदअली—अवध का अन्तिम नवाब जो अत्यन्त विलासी था।

वेकन—महारानी एलिज़ावेथ का समकालीन एक दार्शनिक राजनीतिज्ञ एवं निबन्धकार।

सात्विकता—भले काम की ओर ले जाने वाली सद्प्रवृत्ति।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

मकदूनिया और डेमेट्रियस—प्राचीन यूनान का एक प्रान्त विशेष, जहाँ सम्राट् सिकन्दर राज्य करता था। इसी को मेसिडेनिया भी कहते हैं। वहीं का एक सुप्रसिद्ध राजा था।

११—सच्ची शान्ति

सच्ची शान्ति सुदर्शन जी की सर्वोत्कृष्ट कहानियां में से एक है, जिसमें लेखक ने यह बतलाने की चेष्टा की है कि मनुष्य को कर्त्तव्य परांगमुख होने से सच्ची शान्ति नहीं मिल सकती। सच्ची शान्ति प्राप्त करने के लिये उसे कर्त्तव्य-परायण होना अत्यन्त आवश्यक है।

सुनी अनसुनी करना—ध्यान न देना, परवाह न करना। अपने रंग में मस्त रहना—मनमौजी होना। विशूचिका—हैज़ा। स्नेह-रज्जु—प्रेम की डोरी। रंग में भंग—आनन्द में बाधा। उत्तरदायित्व—जवाब देही, जिम्मेदारी।

१२—हंस का नीर-क्षीर-विवेक

इस पाठ में आचार्य द्विवेदी जी ने अनेक प्रचलित प्रकारों में से नीर-क्षीर-विवेक सम्बन्धी मिथ्या धारणा पर युक्तियुक्त विचार प्रकट किए हैं। हंस का नीर-क्षीर-विवेक किस दृष्टि से सत्य है—इस की सप्रमाण मीमांसा भी की है।

प्रवाद—मिथ्या धारणा। सायनाचार्य—एक टीकाकार ऋषि। जलरूह—जल में उत्पन्न होने वाले पौधे, कमल आदि। मृणालखंड—कमल का डंडा। बिसतंतु—कमल नाल के तोड़ने से जो सफ़ेद-सफ़ेद सूत

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

सी एक चीज़ निकलती है। प्रवाही—द्रुत प्रवाहित होने वाला। द्विज—ब्राह्मण, पक्षी। शुक्तियाँ—सीपें।

१३—पेनिसिलिन

इस पाठ में श्री भगवती प्रसाद जी ने पेनिसिलिन का आविष्कार और उसकी उपयोगिता आदि का सविस्तार वर्णन किया है।

सर्वोपरि—सबसे श्रेष्ठ। टेस्ट ट्यूब—शीशे की एक पतली नली जिसमें पदार्थ रख कर निरीक्षण किए जाते हैं। मित्रराष्ट्र—रूस, इंगलैंड और अमेरिका चीन आदि। राज-यक्ष्मा—तपेदिक। विक्षत—घायल। घातक—प्राण लेने वाला।

१४—प्रताप-प्रतिज्ञा

इस नाटकीय अवतरण में मिलिन्द जी ने राणा प्रताप की वीरता पर प्रकाश डाला है।

कसक—पीड़ा। बाप्पा रावल—मेवाड़ राज्य का संस्थापक, गुह का वंशज। यह बड़ा प्रतापी राजा था। कुछ लोग इसे ही मेवाड़ राज्य का संस्थापक मानते हैं।

स्वर्ण-उषा—स्वर्ण से रंगवाली। रक्तध्वजा—लाल झंडा। भवानी—तलवार के प्रति सम्बोधन। जनता जनार्दन—जनता रूपी भगवान्। लाल दिन—रक्तमय और वैभवशाली। मार्ग—साधन।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

१५—साहित्य और सामाजिक स्थिति

डा० श्यामसुन्दर दास ने इस पाठ में साहित्य की समाज के लिए उपयोगिता एवं उसकी शक्ति आदि पर सुन्दर प्रकाश डाला है।

प्रतिरूप—नकल। मनोविकार—मानसिक परिवर्तन। स्फूर्ति—फुर्ती, तेजी। शृंखला—पंक्ति, श्रेणी। क्रियमाण—कार्य में लगा हुआ। प्रकाण्ड—बहुत बड़ा। उर्वरा—उपजाऊ। सूत्रपात—आरंभ। निर्मूल—निरर्थक।। परिष्कार—शुद्ध करना।

१६—विश्व-कवि रवीन्द्र

प्रस्तुत निबंध में श्री गुलाबराय जीने विश्व-कवि रवीन्द्र के जीवन चरित्र का उल्लेख किया है। रवीन्द्र बाबू दिवंगत हो चुके हैं पर यह निबंध उनके जीवनकाल में ही लिखा गया था।

प्रवीणता—चतुरता, कुशलता। एकेश्वरवाद—मुसलमानी पैगम्बरवाद, एवं भारतीय अद्वैतवाद से मिलता-जुलता एक मत विशेष, जिसके अनुसार ईश्वर एक है। साम्यवाद—एक वाद विशेष, जिसमें समाज के प्रत्येक व्यक्ति के अधिकारों की समानता का प्रतिपादन किया जाता है। आधुनिक युग में इसके अनुयायी रूसी लोग हैं। नौकरशाही—जहाँ नौकरों की ही देख-रेख पर कार्य चलता हो। विहाग राग—एक राग विशेष; जो रात्रि में गाया जाता है। शान्ति-निकेतन—बोलपुर में स्थित एक स्थान विशेष, जहाँ विश्व, कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने 'विश्व भारती' की स्थापना की है। नोबेल पुरस्कार—इसके संस्थापक अल्फ्रेड बर्नहार्ड नोबेल नामक स्वीडिश सज्जन थे। ये प्रसिद्ध रासायनिक थे। इन्होंने २० लाख पौंड की रकम साहित्य

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

आदि पाँच भिन्न-भिन्न पुरस्कारों की स्थापना के निमित्त अर्पण कर दी थी। प्रति वर्ष ये पुरस्कार संसार के सर्वोत्तम नियत विषयों के लेखकों को प्रदान किए जाते हैं। रुडयर्ड किपलिंग—इंलैंड का एक प्रसिद्ध आधुनिक राष्ट्रीय कवि; नोबुल पुरस्कार विजेता। आध्यात्मिकता—आत्म-ज्ञान प्राप्त करने की ओर मन का झुकाव।

१७—मधूलिका

स्व० जयशंकर प्रसाद कृत यह एक सर्वोत्कृष्ट कहानी है। इस कहानी द्वारा प्रसाद जी ने राष्ट्रींयता की भावना को दृढ़ किया है और 'मधूलिका' के पावन चरित्र में प्रेम एवं राष्ट्रीयता के अन्तर्द्वन्द्व को बड़ी ही कुशलता से चित्रित किया है।

आर्द्रा नक्षत्र—२७ नक्षत्रों में से एक नक्षत्र का नाम। निरभ्र—बादल रहित। अनुरंजित—रंगा हुआ। स्वस्त्ययन—शुभाशीर्वाद। कौशेयवसन—रेशमी वस्त्र। ऊर्जस्वित—तेजोमयी। मधूक—महुआ। नगर तोरण—नगर का बाहरी फाटक। अवगुंठन—पर्दा। सामंजस्य—उपयुक्तता, अनुकूलता। विडम्बना—तिरस्कार, मजाक। रन्ध्रों—छेदों। विपन्न—दुखी। मुकलित—अधखुली। प्रकोष्ट—कक्ष कोठरी। अभियान—यात्रा। अति रंजित हो गया—अत्यन्त प्रकाशित हो गया। उल्काधारी—मशालची। वल्गा—लगाम।

---

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

१८—बदरीनाथ की यात्रा

यह महादेवी वर्मा का एक यात्रा सम्बन्धी लेख है, जिसमें बदरीनाथ-यात्रा के मार्ग में जो प्राकृतिक दृश्य हैं उनका और बदरीनाथ के इर्द-गिर्द बने हुए मन्दिरों का मार्मिक चित्रण है।

दुर्गम—कठिन। संभ्रात—माननीय, प्रतिष्ठित। संकीर्ण—तंग। उत्तुंग—ऊँचे। विषण्ण—उदासीन।

१९—लोकनायक तुलसीदास

प्रस्तुत पाठ पं० हजारी प्रसाद द्विवेदी की पुस्तक 'हिन्दी साहित्य की भूमिका' से उद्धृत किया गया है। इसमें लेखक ने यह सिद्ध किया है कि तुलसीदास जी की सब से बड़ी विशेषता उनकी समन्वयवाद की प्रवृत्ति है और इस दृष्टि से राम-कृष्ण के सदृश वे भी हमारे जनसमाज के एक सुन्दर लोकनायक हैं।

डाक्टर ग्रियर्सन—एक प्रसिद्ध अंग्रेज विद्वान् एवं भाषाविज्ञान-वेत्ता। इन्होंने हिन्दी भाषा और साहित्य सम्बन्धी अनेक अमूल्य लेख लिखे हैं। 'लिंग्यूस्टिक सर्वे आफ इन्डिया' नामक इनका खोजपूर्ण ग्रंथ अत्यन्त प्रसिद्ध एवं उपयोगी है। उच्चस्तर—ऊँची श्रेणी। अलख—जो देखा न जा सके कबीर प्रभृति निर्गुण संतों के ईश्वर का नाम। दुर्वह—जो ढोया न जा सके; अर्थात् जिसको लेकर चलना कठिन हो। विशृंखल—व्यवस्था रहित। विच्छिन्न—तितर बितर। दूर-विभ्रष्ट—दूर जाकर गिरे हुए। दिग्गज पंडितों—बड़े विद्वान् पंडितों। समन्वय—सामंजस्य, उपयुक्त परिमाण में सम्मिश्रण।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

उद्भावित—आविष्कृत। प्रत्याख्यान—प्रतिवाद। वैयक्तिक—एक मनुष्य से सम्बन्ध रखने वाला। मेरुदंड—पीठ की हड्डी; प्रधान केन्द्र।

२०—परिश्रान्त पथिक

प्रस्तुत अवतरण वियोगी हरि का एक सुन्दर गद्य-काव्य है। यह एक सुन्दर आध्यात्मिक अन्योक्ति है, जिसमें लौकिक वस्तुओं के सहारे अध्यात्म पक्ष का निरूपण बड़ी कुशलता से किया गया है। जन्म-जन्मान्तर के चक्कर में पड़ कर मनुष्य की जीवात्मा परिश्रान्त है, फिर भी वह सांसारिक बोझीलो वस्तुओं (कंकड़-पत्थर) के लालच को छोड़ नहीं पाती और अपनी जीर्ण-शीर्ण गुदड़ी (शरीर) में उन्हें संभाल कर बड़ी आशा से रखती है कि इन्हीं वस्तुओं में सार है। मनुष्य यह नहीं समझता कि हीरा (सारवस्तु) को प्राप्त करने के लिए निर्मल दृष्टि की आवश्यकता है। दिव्य दृष्टि से ही ईश्वरीय हीरा पहचाना जाता है।

कचरा—कूड़ा। तथ्य—वास्तविकता। विरागभरी—उदासीनवृत्ति वाली। दिव्य—देवताओं ऐसी, श्रेष्ठ, सात्विक।

मुद्रक—मुंशी रमजानी अली शाह, नेशनल प्रेस, प्रयाग

Shri Harivamsha Prasad Upadhyay Baskota,
श्री हरिवंश प्रसाद उपाध्याय वास्कोटा,
Ishwariniwas. Nepalganj. (Banke),
ईश्वरी निवास, नेपालगंज, (बाँके
P. O. RUPAIDIHA, Dist. Bahraich, (U. P.)

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:
pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

I, गौरी शंकर प्रसाद

II

संस्कृत

I चतुर गर्ग

I पीठ

(१) बद्रीनाथ पन्त

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

"मौलेन वर्द्धते वाहिणास्तोऽन
वाहितो गुणः"

[illegible]

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu